मैथिली

दीनानाथ पाठक 'बन्धु'

श्रीचन्द्रनाथमिश्र अमर

MT
817.230 9
2 P 273 M

भारतीय

क

MT
817.230 92
P273M

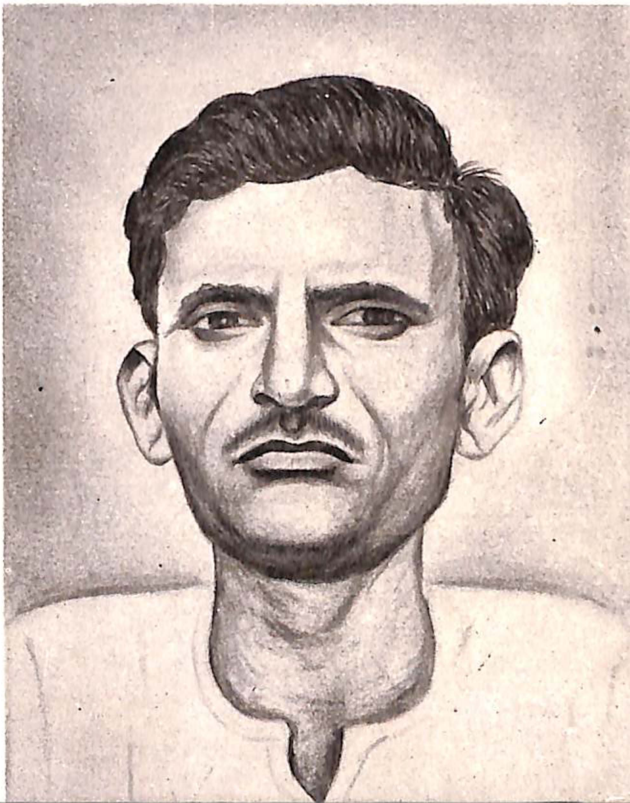

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

दीनानाथ पाठक 'बन्धु'

अस्तरपर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माता रानी मायाक स्वप्नकेर व्याख्या कए रहल छथि। हिनकालोकनिक नीचाँमे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिबद्ध कए रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

दीनानाथ पाठक 'बन्धु'

लेखक
श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

साहित्य अकादेमी

Dinanath Pathak 'Bandhu' : A monograph in Maithili by Srichandranath Mishra 'Amar' on the Maithili author. Sahitya Akademi, New Delhi (1999), Rs. 25.

Library IIAS, Shimla
MT 817.230 92 P 273 M
00117117

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : १९९९

MT
817.230 92
P 273 M

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१

विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१

क्षेत्रीय कार्यालय

१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुम्बई ४०० ०१४

जीवनतारा भवन, चौथा तल, २३ ए/४४ एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता ७०० ०५३

ए डी ए रंगमन्दिर, १०९, जे. सी. मार्ग, बैंगलौर ५६० ००२

३०४-३०५, अन्ना सालई, तेनामपेट, चेन्नई ६०० ०१८

मूल्य : पचीस टाका

117117
9.12.04

ISBN 81-260-0793-1

लेज़र-टाइपसेटिंग : अक्षरश्री, दिल्ली ११० ०३२

मुद्रक : सुपर प्रिंटर्स, दिल्ली ११० ०५१

पुरोवचन

जहिना मनुष्यक मुण्ड, धड़, हाथ-पैर आदि सर्वांग एक दोसर सँ संलग्न रहलेपर ओ आकार 'मनुष्य' संज्ञा धारण करबाक पात्रता प्राप्त करैत अछि; यदि शरीर सँ छिन्न कऽ मूड़ी अथवा हाथ-पैर ककरो देखाओल जाइक तँ ओ देखनिहार-ओकरा मनुक्खक मूड़ी अथवा मनुक्खक हाथ-पैर कहत 'मनुष्य' नहि, तहिना, बंगाल, उड़ीसा, महाराष्ट्र, गुजरात, अवध, मिथिला भारतक अंग कहाओत, भारत नहिं। उत्तर-दक्षिण कश्मीर सँ कन्या कुमारी, पूर्व-पश्चिम पुरना आसाम सँ पंजाब धरिक जे समष्टि रूप से भारत राष्ट्र थिक ।

साहित्य अकादेमी एही समष्टि रूप कँ दृष्टिमे राखि भारतीय-साहित्यक निर्माता क श्रृंखला बनौलक जाहिसँ अकादेमी द्वारा स्वीकृत बाइसो भाषाक शीर्षस्थ साहित्यकार लोकनिक अवदानसँ परस्पर एक दोसर परिचित भऽ सकथि तथा चिन्तनक अन्तर्धाराकँ जानि सकथि।

एही श्रृंखलाक एक कड़ी थिकाह मैथिलीक एक महाकवि दीनानाथ पाठक 'बन्धु' जे अल्पायु होइतो एक एहन स्तम्भ गाड़ि गेलाह जे मैथिली महाकाव्यकँ नवीन दिशाक संकेत-सूचक बनल अछि। अर्ध-विकसित क्षेत्र आ अल्पवित्त परिवार मे जन्म ताहू पर अल्पायु में देहान्त भऽ गेलाक कारणेँ हिनका विषयमे तथ्य संग्रह करबामे आ अप्रकाशित खण्डितो कृति उपलब्ध करबामे अनेक कठिनता भेल जे विनिबन्ध पूर्ण करबामे विलम्बक कारण बनल। एहि कठिनताकँ दूर करबामे 'बन्धु' जीक वास्तविक आत्मीय बन्धु प. श्रीचन्द्रकान्तझा 'नवेन्दु' हमर सहायक भेलाह। हुनक बिनु साहाय्यें ई काज कठिने नहि, असंभव छल। अत: हुनका प्रति केवल शब्द द्वारा आभार व्यक्त कयने ऋणमुक्त नहि भऽ सकैत छी। ई कृति बन्धु 'जीक स्वर्गीय पिता प. रामजी पाठककँ समर्पित अछि। आशा अछि अकादेमीक उद्देश्य पूर्तिमें ईहो ग्रन्थ योगदान कऽ सकत।

अन्तमे अकादेमीक संगहि मैथीली भाषा परामर्श दातृ समितिक सदस्य गण ओ आयुष्मान डॉ. श्रीरामदेव झाक आभारी छियनि जे मैथिली साहित्य मंच पर 'बन्धु' जीक उपस्थापन-यज्ञक पूर्णाहुतिओ देबाक अवसर हमरे प्रदान कयलनि। आशीर्वाद दैलछियनि दौहित्र श्रीशंकर देवकँजे समय-समय पर आबि चड़ियबैत रहलाह तथा दूनू पौत्र श्रीआदित्य ओ श्रीविभूतिकँ जे लिखबाक समय शान्ति बनौने रहलाह।

—श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

जानकी नवमी
संवत्-२०५६ (१९९९)

अनुक्रम

पुरोवचन	५
जीनव वृत्त	९
परिवार	९
शिक्षा	१०
साहित्यिक क्रियाकलाप	१२
कृति विवेचन	१५
नाटक	१५
उपन्यास	२२
महाकाव्य रचना ओ प्रकाशनक पृष्ठभूमि	३१
महाकाव्य	३८
अन्यान्य समीक्षकक अभिमत	७०
उपसंहार	७२

जीवनवृत्त

परिवार

मैथिली साहित्य गगनमे आइसँ ७० सत्तरि वर्ष पूर्व पूर्णप्रकाश मय एक उल्काक उदय भेल छल जे मात्र ३४ (चौंतीस वर्ष) चमकि अनन्त मे विलीन भऽ गेल, परन्तु जतबे अल्पावधि धरि जगमगाइत रहल ततबे अल्प समयमे मैथिली साहित्य जगतकँ ताहि रूपेँ प्रोद्भासित कयलक जे मैथिली साहित्येतिहासक ओ पृष्ठ युग-युग धरि अपन प्रकाश जन-जीवन पर विकीर्ण करैत रहत। ओ उल्का क्यौ आन नहि, ओ छलाह एहि ग्रन्थमें विवेच्य साहित्यकार प. दीनानाथ पाठक 'बन्धु'।

प. दीनानाथ पाठक 'बन्धु'क जन्म ताहि समयक ओ मुंगेर जिला, जाहि जिला कँ राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' सदृश सिंहगर्जना कयनिहार, राष्ट्रभाषा हिन्दीक मुकुटालंकार ओजस्वी महाकविक जन्म-भूमि होयबाक गौरव प्राप्त छैक, जे सम्प्रति मुंगेर सँ विभाजित भऽ बेगू सराय जिलाक नामसँ संबोधित होइत अछि। एहीजिलाक बखरी प्रखण्डक अन्तर्गत 'दुनही' नामक गामकेँ बन्धुजीक जन्म-भूमि होयबाक गौरव प्राप्त भेलैक। हिनक जन्मदिनक प्रसंग अनेक ठाम भ्रामक सूचना प्रकाशित भऽ गेल अछि। चाणक्य महाकाव्य पर अनुसन्धान कयनिहार एक छात्र अविश्वस्त सूत्रें प्राप्त तिथिक उल्लेख कयने छथि। एतेक धरि जे बन्धुजीक अन्तरंग ओ अभिन्न मित्र प. श्री चन्द्रकान्तझा 'नवेन्दु' पर्यन्त भ्रमवश वैशाख कृष्ण षष्ठी, सन् तेरह सय बत्तीस (१३३२)सालक उल्लेख कयने छथि। परन्तु 'चाणक्य' महाकाव्यक प्रकाशनक समयमे हिनक अनुज श्री शिवनाथ पाठक अपना पितासँ पूछि १९६५ ई. मे हमरा जे पत्रमे लिखने छलाह जे पत्र अतिशय विलम्ब सँ अयलाक कारणें पुस्तकमे उल्लिखित नहिं भऽ सकल। ३३-३४ वर्षक बाद अन्वेषण कयलापर 'फाइल' मे ओ पत्र हमरा भेटि गेल। ओहि पत्रमे तिथिए नहि, अपितु दिन ओ समय पर्यन्त अंकित अछि। ई पत्र भेटलापर हम श्रीनवेन्दुजी सँ पत्र द्वारा पुछलियनि, ओ उत्तर मे लिखलनि— "जन्मतिथि जे शिवनाथजी पठौने छथि, हमरो वैह प्रामाणिक बुझना जाइत अछि।" एहि अनुसारेँ बन्धुजीक जन्मतिथि श्रावण शुक्ल, अष्टमी सोम, संवत् १९८५, एगारह बजे दिन । तदनु सार १२. ८. १९२८ ई. होइत अछि।

दीनानाथ पाठक 'बन्धुक पिताक नाम छलनि प. रामजी पाठक तथा मायक नाम

नूनूवती देवी। रामजी पाठक कर्मकाण्ड-निष्णात छलाह, मुख्य वृत्ति पौरोहित्य छलनि। भूसम्पतिक नाम पर चाससँ वास धरि मात्र दू एकड़ छलनि तेँ पौरोहित्येसँ जेना तेना जीविकोपार्जन करैत परिवार क दारिद्र्य मे लसकल गाड़ी कँ घिसियवैत चलैत छलथिन। हिनका तीन गोट बालक भेलथिन सेहो पछतीया। सवसँ जेठ दीनानाथ, दोसर श्रीशिवनाथ, तेसर शशिनाथ। शशिनाथ अल्पायुएमे दिवंगत भऽ गेलथिन । एक तँ बार्द्धक्य मे सन्तान, ताहि पर पुत्र शोक, दरिद्रताक प्रकोप आदि अनेक दु:ख सँ सन्तप्त-रामजी पाठक अपन जेठ बालक दीनानाथक विवाह दसे वर्षक अवस्थामे नरहन निवासी राम खेलावन चौधरीक कन्या कामा देवीक संग एहि आशा विश्वास सँ करा देलथिन जे पुतोहुक पैरक प्रसादेँ हमर दिन घूरत। मिथिलामे एहन विश्वास रखनिहार मनोरथी माता-पिता क अभाव नहि छल। दीनानाथसँ छोट श्रीशिवनाथ पाठक प्रशिक्षित आइ, ए, अभारी नामक गाम मे एक मध्यविद्यालयमे अध्यापक छथिन। विधाता एही दोसर पुत्रक हाथेँ प. रामजी पाठक क और्ध्व देहिक क्रिया भाग्य मे लिखने छलथिन।

दीनानाथ पाठक कँ अपन धर्म पत्नी कामा देवी सँ तीन पुत्र, प्रथम श्रीउपेन्द्र पाठक आइ. एस-सी. उतीर्ण भऽ विद्या मन्दिर कुम्हारसौं नामक गाम मे अवस्थित एक खानगी स्कूल मे अध्यापन करैत छथिन। दोसर पुत्र श्री अनिल पाठक प्रवेशिका परीक्षोत्तीर्ण भऽ गामक अपन घर-गृहस्थीक कार्यभार सम्हारने छथिन।

तेसर पुत्र श्री अरुण पाठक मेकेनिकल इंजीनियरिंग कऽ कतहु सेवारत छथिन।

एहि तीन पुत्रक अतिरिक्त बन्धुजी कँ दू गोट कन्या सेहो भेलथिन श्रीमती मिथिलेश कुमारी जनिक विवाह निकटस्थ गाम गढ़पुरा मे भेल छनि आ दोसर कन्या श्रीमती आशाकुमारी ओही क्षेत्र स्थित प्रसिद्ध गाम मंझौलमे विवाहिता छथिन।

शिक्षा

'दुनही' गाम समस्तीपुर-रोसड़ा-खगड़िया पूर्वोत्तर रेलवेक बखरी-सलौना स्टेशनसँ ५-६ माइल दक्षिण-पश्चिम मे स्थित निटट्ट देहाती क्षेत्र छल। 'छल' भूत कालिक क्रिया पद क प्रयोग एहि कारणेँ कयल गेल अछि जे स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद बहुतो नवीन रेलवे स्टेशनक निर्माण भेल। ताही क्रम मे गढ़पुरा नवीन स्टेशन भेलासँ आब दुनही एहि स्टेशनसँ गोटेक माइल दक्षिण पड़ैत अछि। आवागमनक सुविधा बढला पर क्षेत्रक विकास स्वाभाविक रूपेँ होइते अछि, तेँ आब ई गाम निटट्ट देहात नहि रहि गेल अछि।

एहिक्षेत्रमे आधुनिक शिक्षा क कोनो तेहन सुविधा नहि रहलाक कारणेँ बालक दीनानाथ कँ नित्य पैरेँ चलि गढ़पुरा मध्य विद्यालय आबय पड़नि जहिठाम प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कयलनि। सबसँ पहिल कारण छल से हिन्दू समाजमे ज्येष्ठ पुत्र माता-पिताक श्राद्धाधिकारी होइत छथिन। देव-पितृ कर्मक प्रसंग वचन— **'पितरो वाक्यमिच्छन्ति, भावमिच्छन्ति देवता:'** बहुत प्रसिद्ध अछि। वाक्य शुद्धताक हेतु संस्कृत भाषाक ज्ञान

सर्वथा अपेक्षित होइत छैक। दोसर आंग्ल पद्धतिसँ शिक्षा प्राप्त करब व्यय साध्य छलैक। प. रामजी पाठक क समक्ष साधनक अभाव सेहो एक कारण छलनि। दुनहीसँ किछुए दूर मेहदा नामक गाममे संस्कृत टोल पाठशाला छलैक, ताही ठाम हिनक नामांकन करा देलथिन। ओहिठाम सँ प्रथमा परीक्षा नीक अंक सँ उत्तीर्ण भेलाह।

साधन तँ नहि छलनि, परन्तु हितोपदेश मे पढ़ने रहथि—

''उद्योगिनं पुरुष सिंहमुपैति लक्ष्मीः
दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति''

ई नीतिवाक्य हिनका प्रेरित कयलकनि। सुनल छलनि जे काशी माता अन्नपूर्णाक नगरी थिकनि, हुनक कृपासँ ओहि नगरीमे क्यौ भूखल नहि रहैत अछि। नीक अंक प्राप्त कयने रहथि सेहो उत्साहित कयलकनि, काशी विश्वनाथक स्मरण करैत पिताकँ बोल-भरोस दऽ काशी पहुँचि गेलाह। ओतय गोयनका संस्कृत महाविद्यालय में नामांकन भऽ गेलनि। काशीमे मारवाड़ी समाजमे विशेषत: अनेक एहन उदारचेता लोक छथि जे संस्कृत क प्रति विशेष निष्ठा रखबाक कारणेँ संस्कृत पढ़निहार निर्धन छात्रक हेतु भोजन ओ आवास नि:शुल्क व्यवस्था कऽ दैत छथिन। एक उक्ति छैक 'विश्वास: फलदायक:' हिनका से विश्वास छलनिहेँ, हिनको तकर व्यवस्था नीक जकाँ भऽ गेलनि। ओतहि पूर्णमनोयोग सँ अध्ययन करैत व्याकरणक मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण भेलाह। किन्तु छात्र दीनानाथ वाल्यावस्थे सँ स्वास्थ्यक दृष्टिएँ दुर्वल रहथि, अध्ययनक क्रममे सामर्थ्यसँ अधिक श्रम कयलाक कारणेँ ततेक अस्वस्थ भऽ गेलाहजे एकाकी परदेशमे रहब सम्भंव नहि रहलनि। हारि-थाकि कऽगाम चल अयलाह।

गाम आबि स्वास्थ्य लाभ कयलाक उपरान्तो अनेक पारिवारिक ओझराहटि तथा बिघ्न-बाधाक कारणेँ पुन: काशी जाय अध्ययनक्रमकँ आगाँ बढ़यवाक स्थिति नहि भऽ सकलनि, परन्तु अग्रिम शिक्षा प्राप्त करबाक उत्कट अभिलाषा हृदय कैं उद्वेलित करैत रहैत छलनि। ज्ञात भेलनि जे बखरी स्थित गौरीशंकर संस्कृत विद्यालयक अध्यापक पूर्ण सुयोग्य विद्वान छथि। अत: बखरी आबि हुनकासँ भेट कयलथिन। वस्तुत: ओहि विद्यालयक अध्यापक प. भुवनेश्वर झा जेहने गम्भीर विद्वान तेहने नैष्ठिक तथा सहृदय व्यक्ति छलाह । ततबे नहि ओ परम पारखी लोक सेहो रहथि। यद्यपि दीनानाथ पाठककेँ ने कोंनो तेहन साहित्यिक परिवेश छलनि ने वंशानुगत साहित्यिक संस्कार, तथापि भारतीय एक विश्वास जे '**पूर्व जन्मार्जिता विद्या पूर्व जन्मार्जितं यश:**' रहलैक अछि से हिनका पूर्व जन्मार्जित संस्कारवश बाल्य कालेसँ साहित्यक प्रति स्वाभाविक रुचिक संग सर्जनात्मक प्रतिभा सेहो प्रकृति-प्रदत्ते छलनि। वार्तालापक क्रममे छात्र दीनानाथक स्फुटवाणी ओ वाक् चातुरीसँ पारखी प. भुवनेश्वरझा बहुत प्रभावित भेलथिन तथा हिनकामे अन्तर्निहित ओहि प्रतिभा कैं पूर्ण रूपेँ विकसित करबाक उद्देश्यसँ साहित्य पढ़बाक परामर्श देलथिन। उत्तम बीज कैं यदि उपयुक्त भूमि ओ अनुकूल जल-वायु भेटि जाइत छैक, तखन ओकरा अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित ओ फल समन्वित होइत विलम्ब नहि लगैत छैक, हिनक प्रतिभाक बीज तँ एतय

अयबासँ पहिनहि अंकुरित भऽ गेल छलनि जकर उल्लेख आगाँ कयल जायत। ई ओही विद्यालय सँ क्रमश: साहित्यक शास्त्री तथा १९५० ई. मे साहित्याचार्य परीक्षोत्तीर्ण भेलाह। कालान्तरमे हिन्दी विद्यापीठ देवघर सँ साहित्य रत्न तथा १९५९ ई. मे बिहार विश्व विद्यालयसँ हिन्दी बी. ए. क परीक्षामे उत्तीर्णता से हो प्राप्त कयलनि।

जखन अध्यापक स्वयं साहित्यिक रुचि सम्पन्न होथि तखन सर्जनात्मक प्रतिभा सम्पन्न अपन विद्यार्थिकेँ रचना करबाक दिस प्रेरित तथा प्रोत्साहित करब स्वाभाविके बूझल जयबाक चाही। एकर प्रत्यक्ष प्रतिफल एतहि देखल जा सकैत अछि जे प. भुवनेश्वरझा स्वयं व्युत्पन्न लोक रहथि, समय-समय पर विलक्षण पद सभक रचना सेहो कऽ लैत छलाह, परन्तु से सब अतीतक गर्भमे विलीन भऽ गेलनि, परन्तु अपन एहन प्रतिभासम्पन्न छात्रकेँ समुचित प्रोत्साहन देबाक प्रसादेँ साहित्य क इतिहास पृष्ठ पर आदरसँ हुनको नामक उल्लेख कयल गेलनि अछि। अस्तु।

साहित्यिक क्रिया-कलाप

अपन एहन सहृदय गुरुक निश्छल स्नेह तथा सदाशयता पाबि हुनके परामर्श ओ प्रेरणा सँ बखरीसँ '**बाल किरण**' नामक एक हस्त-लिखित मासिक पत्रिका बाहर करय लगलाह। बखरी प्रवास कालमे हिनका सबसँ निकट ओ अन्तरंग मित्र भेटलथिन प. श्रीचन्द्रकान्तझा 'नवेन्दु'। 'नवेन्दु' जीमे सेहो नैसर्गिक साहित्यिक प्रतिभा छनि। उक्त हस्तलिखित पत्रिकाक सम्पादक दीनानाथ पाठक कँ बनाओल गेलनि तथा हिनक सहाय-ताक हेतु श्रीचन्द्रकान्तझा सहायक सम्पादक मनोनीत कयाल गेलाह। जखन विधिवत् उभय मित्र साहित्यकार ओ पत्रकारक रूपमे समाजक सम्मुख उपस्थित भेलाह, तखन ताहि समय कवि साहित्यकार लोकनि जेना अपन-अपन किछु उपनाम रखैत छलाह यथा रामधारीसिंह 'दिनकर' लक्ष्मी नारायण 'सुधांशु' बुद्धिनाथझा 'कैरव' इत्यादि तहिना एक उपनाम रखबाक सेहन्ता हिनको लोकनिकेँ भेलनि, बहुत ऊहापोहक बाद दीनानाथ पाठक अपन उपनाम 'दीन' रखलनि तथा श्रीचन्द्रकान्तझा अपन उपनाम 'नवेन्दु'।

ध्यातव्य जे बखरी बाजार एक छोटसन उपनगर थिक जकरा दोसर शब्दमे 'कसबा' कहल जाइत छैक। छोट सन रहितो ई उपनगर ओहि क्षेत्र क एक केन्द्र मानल जाइत अछि जतय राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक हलचल सदा बनल रहैत अछि। आब प्रखण्ड बनि गेलाक बाद तँ ओ चहल-पहल आरो बढ़ि गेल अछि। ई उपनगर व्यापारक सेहो मुख्य केन्द्र रहल अछि। प्रसंगत: हम ईहो कहि दी जे एही विनिबन्धक प्रसंग किछु तथ्य संकलित करवाक हेतु दीपावलीक दोसर दिन बखरी पहुँचल रही तँ देखल जे एहि छोट सन स्थान मे दीपावलीक अवसर पर ततेक पैघमेला लगैल-अछि जे दूर दूर सँ मीना बाजार, सर्कस कम्पनी, थियेटर कम्पनी, मौत का कुआँ आदि प्रदर्शनीक संग विभिन्न वस्तुक पैघ पैघ सजल-सजाओल दोकान आ ताहि मे लोकक मिस पड़ैत, पचासो ध्वनि

विस्तारक यन्त्रक भोंपा आसमर्द करैत, ई सब देखि हम चकित रहि गेलहुं, ई मेला १५ दिन धरि चलैत अछि। एहि ठाम एक पैघ सन पुस्तकालय अछि जे पूर्ण विकसित, सुसज्जित तथा सुव्यवस्थित ढंगसँ चलि रहल अछि, जाहिठाम संध्याकाल नगरक बुद्धिजीवी वर्गक बेस जुटान होइत अछि। पुस्तकालय देखि हमरो सेहन्ता भेल।

उपरि चर्चित हस्तलिखित **'बाल किरण'** मासिक पत्रिका एहि पुस्तकालयक माध्यमसँ खूव पढ़ल गेल, बहुत चर्चित भेल। यद्यपि एहिमे प्रौढ़ो व्यक्तिक हेतु रचना संकलित कयल जाइत छल, तथापि नवीन अंकुरित प्रतिभाकेँ प्रोत्साहित कऽ ओकरा विकासक पथ पर अग्रसर करब एकर मुख्य उद्देश्य छलै, 'जे एकर नाम करणेसँ स्पष्ट होइछ एकर मुख्य स्वर राष्ट्रवादी छलैक आ पाठक प्रौढ़ लोक सब छलथिन। हुनका लोकनिकेँ **'बाल किरण'** नाम छुछुन्न बुझना गेलनि तँ परस्पर विचार विमर्शक वाद एकर नाम **'ज्वाला'** राखल गेल। बखरी गेलापर किछु अंक देखबा क सुयोग अवश्य भेल, परन्तु अंक सब ततेक जीर्ण ओ जर्जर छल जकर पृष्ठो उनटौला पर हाथसँ तूवि जाइत छल तथापि टो टाकऽजे पढ़ल जा सकल ताहिसँ बन्धु जीक अन्तस्तलमे राष्ट्रोत्थानक हेतु केहन छटपटाहटि छलनि लकर आभास उक्त पत्रक सम्पाद- कीय आ संकलित रचना पढ़ला सँ स्पष्ट झलकि रहल छल। एहि पत्रिकाक माध्यमसँ उभय मित्र 'दीन' जी 'नवेन्दु' जी पूर्ण परिचित तथा लोकप्रिय भऽगेलाह। बन्धुजी तँ नहि रहलाह परन्तु हिनक कनिष्ठ मित्र एखनहुँ एक पत्रकारक रूपमे सुप्रतिष्ठित ओ समादृत छथि।

बन्धुजीमे संगठन करबाक प्रवृत्ति तँ छलनिहेँ, क्षमता से हो छलनि। अपन लोकप्रियता सँ लाभ उठबैत ई **'बन्धु परिषद्'** नामसँ एक सांस्कृतिक-सामाजिक संस्थाक स्थापना कयलनि। अपन विनम्रतापूर्ण व्यवहारक कारणेँ समाजसँ पूर्ण सहयोग प्राप्त करैत रहलाह। सर्वथा स्वाभाविके छल जे उक्त संस्थाक सहयोगी लोकनि संस्थाक अध्यक्ष पद पर हिनके अभिषिक्त कयलथिन। एहिसंस्था द्वारा नियमित रूपेँ वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित होइत छल, संगहि समय-समय पर सांस्कृतिक आयोजन सेहो कयल जाइत छल जाहि क्रममे नाटकक मंचन सेहो होइत छल, जाहि सँ स्वयं नाटक लिखबाक प्रेरणा भेलनि। एहि क्रिया कलापसँ तरुण वर्गमे साहित्यक प्रति रुचि उत्पन्न भेलनि संगहि रुचिक परिष्कार सेहो होइत गेलैक।

एतय एक विषय स्पष्ट कऽ देब समीचीन प्रतीत होइत अछि जे मिथिलाक साहित्यकार आधुनिक युगमे प्रवेश करितहि यदि एक दिस अपन मातृभाषा मधुमयी मैथिलीक अभ्युत्थान हेतु सन्नद्ध भेलाह तँ दोसर दिस राष्ट्रभाषा हिन्दीओक संवर्द्धन मे अपन अनुपम योगदान करैत रहलाह। एहि उक्तिक समर्थनमे पहिल प्रमाण थिकाह आधुनिक युगक प्रवर्त्तक कवीश्वर चन्दाझा जे महाकवि विद्यापति रचित पुरुष परीक्षा'क मैथिलीमे अनुवाद कऽ कतोक दिनसँ अवरुद्ध मैथिली-गद्य लेखन कँ गति प्रदान कयलनि परन्तु ओकर भूमिका हिन्दीमे लिखलनि संगहि राज पण्डित बलदेव मिश्र द्वारा सम्पादित तथा राजप्रेस, दरभंगासँ मुद्रित कवीश्वर चन्दाझा रचित गीत सभक संकलन 'चन्द्र

पद्यावली' कैं देखल जा सकैत अछि जाहि मे संस्कृत मैथिलीक संगहि हिन्दीक रचना सेहो संकलित अछि।

दोसर प्रमाण मैथिलीक आरंभ कालिक पत्र-पत्रिका यथा— प्रथम मैथिली मासिक 'मैथिल हित साधन' (१९०५ जयपुर) दोसर मैथिली मासिक 'मिथिलामोद' (१९०५ काशी) तेसर 'मिथिलामिहिर' (१९०९ दरंभगा) कैं देखल जा सकैत अछि । मिथिला मोद मे तं पण्डित लोकनिकैं हिन्दी सिखबाक अनुरोध कयले जाइत छलनि ताहि संग 'देवाक्षर', जकरा सम्प्रति 'देवनागरी' कहल जाइत अछि, लिपि सेहो सिखबाक आग्रह (एहि तर्कक संग जे एहिमे 'काँटा' बनि गेलाक कारणेँ छपाइक सुविधा भऽ गेलैक अछि) कयल जाइत छलनि। ध्यातव्य जे तावत धरि मिथिलामे मिथिलाक्षरेक प्रयोग होइत छल। ई भिन्न बात जे एहि लोभमे पड़ि हम सब मिथिलाक्षर बिसरि अपना पैर पर अपने कुड़हरि मारि लेलहुँ । सब पत्र-पत्रिकामे मैथिली ओ हिन्दी मे प्रसिद्ध बाबा नागार्जुन होथु अथवा आचार्य श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन' महाकवि आरसी प्रसाद सिंह होथु, वा बावू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' सुधांशु शेखर चौधरी होथु वा रामकृष्णझा 'किसुन' सब क्यो हिन्दी ओ मैथिली दूनू भाषाकैं दूनू हाथ, दूनू पैर, दूनू आँखि दूनू कान जकाँ समान महत्त्व दैत दूनू भाषामे रचना करैत रहलाह। तैं दीनानाथ पाठक यदि दूनू भाषाक प्रति समान आदर रखैत दूनू भाषाक सेवामे लागल रहलाह तँ से कोनो छगुनताक विषय नहि मानल जायत। जेना वैद्यनाथमिश्र हिन्दी मे नागार्जुन नामेँ आ मैथिलीमे यात्री उपनामसँ लिखैत रहथि तहिना ईहो हिन्दी में '**दीन**' उपनाम रखलनि तथा मैथिली में '**बन्धु**' । परन्तु दूनू भाषा क रचना मे राष्ट्रवादी स्वर मुख्य रूपैँ मुखर भेल अछि।

कृति विवेचन

नाटक

पूर्वमे कहल गेल अछि जे बन्धुजी अपन छात्रावस्थेसँ समाज-संगठन ओ साहित्य सर्जन दिस अग्रसर भऽ गेल छलाह। बखरीमे पढ़ैत **बन्धुपरिषद** नामक सांस्कृतिक-सामाजिक संस्था स्थापित कयने रहथि जाहिमे समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रमक प्रकरणमे नाटकोक मंचन होइत छलैक। ध्यातव्य जे मैथिलीक आधुनिक कालमे यदि कोनो विधामे सबसँ कम रचना भेल अछि तँ से थिक नाटक। बन्धु परिषद द्वारा आयोजित नाटक मंचन हेतु मैथिलीमे एकर अल्पता देखि बन्धुजी स्वयं 'ग्रामदेवता' नामक एक नाटक लिखलनि, ओहि नाटकक अनुशीलन सँ प्रतीत होइत अछि जे महात्मा गान्धी कैँ ग्राम स्वराज्यक जेहन परिकल्पना छलनि तकरे दृष्टिपथमे राखि एहि '**ग्राम देवता**' क रचना भेल अछि। एकर आरंभे निम्नांकित गीत सँ होइत अछि—

करू सब गामक जयजयकार
बसल प्रकृति केर रम्य कोर मे,
रहथि लोक सब लीन मोद मे,
मुक्त वायु-मण्डल प्रसन्न मन
करय जकर श्रृंगार ।
करू सब गामक जयजयकार ।
छल-प्रपंच नहि जनिका मनमे,
नहि व्यर्थक आडम्बर तनमे,
श्रमे बनल अछि जनिकर जगमे
मात्र जीवनाधार ।
करू सब गामक जयजयकार ।

ग्राम प्रधान देश होयबाक कारणेँ एकर जीवनाधार कृषि थिकैक। देशक हेतु अपन आधार कैँ सुदृढ़ करब सर्वप्रथम आवश्यकता छलैक। महात्मा गान्धी एहितथ्य कैँ नीक जकाँ जनैत ओ मानैत रहथि । मनुष्यक प्रथम आवश्यकता होइत छैक अन्न तथा वस्त्र। एहि दूनूक उत्पादन श्रम-शक्ति द्वारा होइत छैक, तँ श्रमशक्ति कैँ प्रतिष्ठा देब पहिल आवश्यक

काज मानल जयवाक चाही । एही विचार-बिन्दुकेँ प्रसृत करबाक उद्देश्यसँ महात्मा गान्धी स्वतन्त्रता-संग्राम मे चर्खा केँ अपन हथियार रूपमे प्रयोग करय लगलाह। हुनक धारणा छलनिजे एहि माध्यमसँ देशक जनता वस्त्रक प्रसंग किछु दिनमे स्वावलम्बी भऽ जायत। अपढ़ समाज सेहो स्वावलम्बिताक महत्त्व केँ बूझऽ लागत आ अन्नक समस्याक समाधानक हेतु अग्रसर होयत। सब जनैत छीजे ओहिसमयमे घर-घर चर्खाक जोर-शोरसँ ततेक प्रचार बढ़ल जे गृहकार्यसँ बाँचल समयक उपयोग करैत गामगाम मे कत्तिन लोकनि एकरा अपन आजीविकाक माध्यम बना लेने छलीह। ई एक रचनात्मक क्रान्ति छल। कांग्रेस कार्यकर्त्ता लोकनिक हेतु खाधी वस्त्र पहिरब तँ अनिवार्य छले, संगहि प्रतिदिन अपनहु थोड़ेक सूत काटब अनिवार्य बना देल गेल छल। कहल जाइतअछि जे देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जखन राष्ट्रपति रहथि तखनहु राष्ट्रपति भवन मे रहैत पूर्व निर्धारित समय पर नित्य चर्खा चलयबाक नियमक अनुपालन करैत रहलाह। मोरारजी भाई देसाइ प्रधानमन्त्री सन उत्तरदायित्व पूर्ण कार्यभार सम्हारैत एहि नियमक अनुपालनमे कहियो त्रुटि नहि होअऽ देलनि।

स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद देशक प्राथमिक आवश्यकता छल जे गामक सुधि लेल जाइत। कृषि आधारित जाहिदेशक जन-जीवन हो, ताहि देशक कृषिव्यवस्था केँ सुदृढ़ ओ सुचारु रूप देबाक हेतु सिंचाइ व्यवस्था पर विशेष रूपेँ ध्यान देल जाइत, बाढ़िसँ प्रति वर्ष होइत अपार क्षति केँ रोकबाक उपाय कयल जाइत, भूमिक उर्बरा शक्ति वढ़यबामे जकर महत्त्वपूर्ण योगदान छलैक तथा परम्परा सँ जे कृषिकर्ममे प्रमुख सहायक छल, ताहि पशुधनक रक्षा ओ अभिवृद्धिक प्रसंग विशेष चिन्तन कयल जाइत। बालिग मताधिकार जाहि लोकतन्त्रक आधार राखल गेल ताहि लोक केँ साक्षर बनयबाक हेतु तहियेसँ साक्षरता अभियान चलयबाक हेतु, स्वतन्त्रता प्राप्तिक दिन जे पाँच वर्षक छल तकरा मताधिकार प्राप्त करबासँ पहिने साक्षर बना लेवाक हेतु ग्राम पंचायत क गठन, ओकरा माध्यमसँ गाम-गाम मे प्राथमिक पाठशाला स्थापित कयल जाइत। यातायात सुविधा हेतु गाम-गाम मे सड़क क जाल ओछाय परस्पर सबकेँ जोड़ि देल जाइत। ई सब काज आरम्भ भेलासँ जन-सामान्यकेँ स्वतन्त्रता-प्राप्तिक प्रत्यक्ष प्रतिफलक आभास होइतैक, सहभागिताक अनुभव होइतैक, सामाजिक समरसताक निर्माण होइतैक तथा उत्साह मे बृद्धि होइतैक।

परन्तु से सब किछु नहि भेल। जनिका हाथमे शासनक बागडोर अयलनि हुनका इंगलैण्ड, अमेरिका, मास्को देखल छलनि, भारतवर्षक गामक दर्शन कहियो कयनहि ने छलाह। कमसँ कम प्रथम दसो वर्ष धरि महात्मा गान्धीक चिन्तनक अनुसार ग्राम स्वराज्यक डगर पर राष्ट्र केँ अग्रसर राखि, स्वावलम्बनक पाठ पढ़ौलाक बाद औद्योगिक विकास दिस डेग उठाओल जाइत तँ आइ देशक नक्शे दोसर रहैत। सूत्रधार लोकनि महात्मा गान्धीक विचार केँ पौतीमे बन्द कऽ रखबे कयलथिन, हुनको घोर उपेक्षा करैत गेलथिन। फलत: गाम उपेक्षित होइत गेल, नगरक विकासदिस ध्यान केन्द्रित करैत गेलाह। एतय प्रचलित आदर्श वाक्य छल :—

'उत्तम खेती, मध्यम बान (बाणिज्य), अधम चाकरी, भीख निदान' परन्तु नगरक विकाससँ धारणा बदलैत गेल। जाहि चाकरी कैँ अधम मानल जाइत छल, आइ तकरे उत्तम तथा खेती कैँ अधम मानल जाय लागल अछि।

एहने मानसिकता विकसित होइत गेल, नगरक दिस आकर्षण बढ़ैत गेलैक जाहि कारणेँ खेती-बाड़ी मे काज कयनिहार जन-बनिहार शहर दिस पड़ायल जा रहल अछि। गाम शून्य भेल जाइत अछि तथा नगर जनसंख्याक भार तर पिचा रहल अछि। एहने स्थितिक चित्रण अपन '**गाम देवता**' नाटक क एक दृश्य मे बन्धुजी निम्नांकित रूपेँ कयने छथि।

स्थान-महगूक दलान

(महगू एक मुट्टा भिजाओलसाबे आगाँमे रखने जौड़ बँटैत, एक दिस सँ हाथमे झोरा लटकौने दुःखन आ काँखतर मोटरी कैँ दबने हीराका प्रवेश तथा दोसर दिससँ एक टा सूटकेश लेने शेखर प्रवेश करैत छथि)

शेखर : गोड़ लगै छी काका! *(कहैत पैर छूबऽ लै झुकैत छथि)*

महगू : *(हुलसिकऽ ठाढ़ होइत शेखरक माथ ठोकैत)* निकैँ रहऽ बौआ शेखर! आबह, बैसह, कहऽ कुशल समाचार।

शेखर : अहाँ लोकनिक आशीर्वाद सँ आ भगवानक दया सँ सब नीके अछि।

महगू : पेटी तेटी संगहि देखैँ छिअऽ ? एखन अबिते छह की ?

शेखर : हुँ, काका, एखने तिनबजिया ट्रेनसँ उतरल हुँ अछि। मनमे भेल जे बाटेमे पड़ैत छथि तँ महगू काकाक आशीर्वाद लितहि आङन जाइ। अहाँ सब निकैँ छी ने ?

महगू : गाममे की निकैँ रहब ? तखन बड़बेस, सैह बूझह। नीक कयलह, अबिते भेट देलह। एहिठाँ तँ हरसट्टे कोनो ने कोनो बात लऽ कऽ तोहर चर्चा सब करिते छलह। एहि बेर बहुत दिन पर अयलह अछि। ई कहऽ जे गाममे कहिया धरि रहबह ?

शेखर : काका, परीक्षा छल ने, तँ अयबामे समय लागि गेल, मुदा आब तँ पढ़ाइ खतम भऽ गेल, तँ आब गामेमे रहबाक विचार कयने छी ।

महगू : *(विस्मित होइत)* गामेंमे रहबह ? बताह नहितन ! हौ गाममे रहि कऽ की करबह ? लिखलह पढ़लह तँ कोनो नोकरी-चाकरीक जोगाड़ ने धरयबह। गाममे रहि कऽतँ झामे गुड़ैत रहबह।

शेखर : काका, सत्त पूछी तँ एखन लिखि पढ़िकऽ गामेमे रहनाइ जरूरी छै'। अपन देश तँ गामे पर ने निर्भर अछि ?

महगू : तौँ तँ उनटे गायत्री पढ़ैत छह। एहि ठामक लोक गाममे बेकार भेल

ढहनाइत रहैत अछि। ने कोनो काज ने धन्धा अढ़ाय रोटी बन्धा। देखहक यैह हीरा आ दु:खन कैं। रीन लऽ कऽ दिल्ली-पंजाब दिस जा रहल अछि।

शेखर: *(हीरा दिस ताकि)* हीरा भैया, दिल्ली-पंजाब अथवा घर छोड़ि कतहु बिदा होयबासँ पहिने किछु सोचबो कयलहक जे ओतऽ जाकऽ कोन काज भेटत ?

हीरा : कतहु मेहनति मजदूरी करब आर की ?

दु:खन : आर हम सब छी हे कोन जोगरक ?

शेखर : हीरा भैया, शहरोमे की मजदूरी राखल रहैत छैं ? हजारक हजार लोक भेड़िया धसान जकाँ रोजी-रोटीक खोजमे शहर सबमे भटकि रहल अछि, मुदा ई विचार करह जे सात लाख गामक लोक आङुर पर गनल शहरमे जा कऽ काज ताकऽ लागय तँ पैरो धरबाक जगह भेटतैक ?

दु:खन : से तऽ सत्ते।

शेखर : अन्नसँ लऽ कऽ तींमन तरकारी, दूध-दही आदि खाद्य वस्तु जँ गामक लोक उपजा कऽ शहर पठौनाइ बन्द कऽदैक तखन शहरक लोक जिबियो सकैत अछि ?

महगू : से तँ ठीके कहै छऽ शेखर बौआ, तैयो हमरा सब सन गरीब खेतिहर किसान सँ देशक नेता सबकैं कोन सरोकार छै ? हमरा सब कैं के पूछऽ। अब इए ?'

एहि प्रकारक निराशाक स्वर प्रारम्भेसँ ग्राम्य क्षेत्रमे मुखरित होअऽ लागल छल। आइ पचास वर्ष बितलाक बादो ग्रामीण क्षेत्र क उपेक्षामे बृद्धिए भेल अछि। सामान्य लोकक दृष्टिक अपेक्षा साहित्यकारक दृष्टिमे यैह अन्तर होइत छैक। साहित्यकार दूरदर्शी होइत छथि तँ बन्धुजी भविष्यक अनुमान करबामे समर्थ छलाह।

पहिने कहल गेल अछि जे स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद महात्मा गान्धीक विचार कैं पौतीमें बन्द कऽ राखि देल गेलनि। एहिठाम गान्धी जीक जे शिक्षा-नीति छलनि ताहि प्रसंग किछु चर्चा करब एहि कारणेँ असमीचीन नहि होयत जे बन्धुजी कैं ताहि पर विशेष आस्था छलनि तँ ओ गान्धीवादी विचारधारा सँ बहुत प्रभावित शेखर नामक एक शिक्षित युवक कैं एक पात्र बनाय एहि नाटकमें अवतरित कयने छथि।

१९१७ इ. मे जखन महात्मा गान्धी चम्पारण अयलाह तथा ओहिठामक किसानक दुर्दशा देखलथिन तखने हुनका हृदयमे एहन भावना भेलनि जे अशिक्षा एहि सभक मूल कारक तत्त्व थिक। अत: शिक्षाक प्रसार होयब परम आवश्यक अछि। शिक्षों एहन नहिजे मेकाले द्वारा प्रवर्तित अछि, प्रत्युत एहन शिक्षाक व्यवस्था होयबाक चाही जाहिसँ देशक भावी पीढ़ी स्वावलम्बिताक महत्त्व बुझनिहार हो, केवल नोकरी करब शिक्षाक उद्देश्य नहि मानय।

एहि भावना कें साकार करबाक हेतु ओहि क्षेत्रमे ओही वर्ष यद्यपि दू गोट पाटशाला स्थापित कयल गेल, परन्तु ई अपन विस्तृत आकार तखन जा कऽ ग्रहण कऽ सकल जखन भारतकें औपनिवेशिक स्वराज्य भेटलैक आ देशक आठ गोट राज्यमे कांग्रेसक मन्त्रिमण्डल गठित भेल, जाहिमे बिहार सेहो एक राज्य छल।

यद्यपि ओहि मन्त्रिमण्डलक समक्ष समस्ये-समस्या रहैक तथापि गान्धीजीक चिन्तन छलनि जे सर्वोच्च प्राथमिकता राष्ट्रिय शिक्षानीतिकें देल जयबाक चाही। तें **'नयीतालीम'** अथवा **'बुनियादी शिक्षा'** क नामसँ ओ एक शिक्षा-नीति लागू करवाक प्रस्ताव सरकारक समक्ष उपस्थित कयलनि, जाहि शिक्षाक मुख्य उद्देश्य छलैक व्यक्तिक चारित्रिक निर्माण करब, ओकरामे देशप्रेमक उदात्त भावना विकसित करब, अपन उत्तरदायित्वक चेतना जगायब आ एहि तरहें स्वस्थ ओ स्वाबलम्बी नागरिककें उत्पन्न करब।

ओही वर्ष वर्धामे शिक्षा विशेषज्ञ लोकनिक एक सम्मेलन आहूत कयल गेल जाहिमे विस्तारसँ एहि पर विचार मन्थनक पश्चात् एक प्रस्ताव पारित कऽ डॉ. जाकिर हुसेनक अध्यक्षतामे राष्ट्रीय बुनियादी शिक्षा समितिक गठन कयल गेल आ तकर संयोजक ई. डब्लू-आर्यनायकम् बनाओल गेलाह संगहि ख़्वाजा गुलाम सैयद, आचार्य संत विनोवा भावे, काका कालेलकर, सी-कुमारप्पा प्रो. के. टी. शाह आदि विशिष्ट शिक्षाविद लोकनि सदस्य मनोनीत भेलाह।

आरम्भिक कालमे देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसादक प्रेरणा ओ प्रोत्साहन पाबि बिहारमे एहि शिक्षा-नीतिक कार्यान्वयन व्यापक रूपसँ भेल छल। जेँ हेतु स्वावलम्बिते एहि शिक्षाक मुख्य उद्देश्य मानल गेल रहय, तें एहिमे कताइ, बुनाइ, काष्ठकर्म, चर्म उद्योग, बागवानी, करघा, एतेक धरि जे सांस्कृतिक कार्यक्रम पर्यन्तकें एकर पाठ्यक्रममे सन्निविष्ट कयल गेल छल।

ध्यातव्य जे पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद १९५० इ. मे बिहारमे एहि प्रकारक विद्यालयक संख्या ५२० धरि पहुँचि गेल छल। खेदक बात जे एक दिस सरकार द्वारा एकर उपेक्षा, दोसर उपभोक्तावादी भौतिक सुखप्राप्तिक आकांक्षा तथा पाश्चात्य संस्कृतिक धुँआधार प्रचार-प्रसार सँ एहि दिस जन-सामान्यक आकर्षणमे वृद्धि तथा उपर्युक्त शिक्षाक प्रति वितृष्णाक कारणें समाज एहि दिस ने उन्मुख भेल ने एहिसँ कोनो लाभ उठा सकल। बेसिक स्कूलक नाम पर एखनहु बहुतोक जीविका चलि रहल छनि आ एमहर सुदूर देहात धरि अंग्रेजी माध्यमक पब्लिक स्कूलक अमार लागल जा रहल अछि, ओमहर शिक्षित बेरोजगारक अक्षैहिणी तैयार भेल जाइत अछि। परन्तु बन्धुजीकें बेसिक शिक्षा राष्ट्रोत्थान मे सहायक होयत तकर बहुत आशा छलनि से एहि नाटकसँ आभास भेटैत अछि।

जीवनकें गाड़ी कहल जाइत छैक जाहि गाड़ीक स्त्री पुरुष दूनू पहिया मानल गेल अछि। एकोटा पहिया भडठल रहलापर गाड़ीकें गतिशील नहि राखल जा सकैत अछि। जहियासँ देश पराधीनताक पाशमे जकड़ल रहल, अपना समाजमे अशिक्षाक अन्धकार

गहनसँ गहनतर होइत गेल, ताहूमे नारी शिक्षा तँ गहनतम अन्धकारमे विलुप्त भऽ गेल। जाहिठाम शंकराचार्य तथा मण्डन मिश्र सन दुर्धर्ष दार्शनिक विद्वानक शास्त्रार्थमे भारती सन विदुषी मध्यस्थता करैत छलीह ताहिठामक नारी वर्गक हेतु करिया अक्षर महिंस बराबरि भऽ गेल। बन्धुजी एह स्थितिमे परिवर्तनक आकांक्षी छलाह। एहि नाटकक एक दृश्यमे अशिक्षित नारी वर्गक मानसिकताक चित्रण निम्नांकित रूपेँ कयने छथि—

(स्थान-लालकाकीक आङन, लाल काकी टकुरी कटबाक हेतु पीर बना रहल छथि। कातमे जाँत देखि पड़ैत अछि।)

(नबटोल वालीक संग सगुनियाँ किछु पिसबा लै एकटा मौनी लेने प्रवेश करैत अछि।)

नवटोल वाली : *(प्रवेश करिते)* काकी, आइ काल्हि जेहन अजगुत सब देखि रहल छिएे से ई सब सुननहु छलथिन ?

सगुनियाँ : हँऽ अय काकी, सुनलिऐ गऽ जे एक गो मेम साहेब एलै'गऽ।

नवटोल वाली: *(बीचेमे बात कटैत)* कहै' छियनि काकी, ओ जे ढीठ जकाँ पुरुख पातसँ बतिआइ छै' से देखि सब दाँते आङुर काटऽ लगँ छै।

सगुनियाँ : निधोखे सभक अङनामे धड़धड़ायल ढुकि जाइ छै।

नवटोल वाली: जेना अपने बापक घर-आङन होइ। लाज धाख तँ साफे घोरिकऽ पी गेल छै'।

सगुनियाँ : भैया हमरा दूरा पर बजै छलखिन जे बलू ऊ मेम साहेब गामक जनी-जातिके मीटिन करतै' तइमे सबके बुझा सुझाके तखनी सबके लिखेतै-पढ़ेतै, सिबिया-फडिया, लिखिया-पढ़िया सिखेतै।

नवटोल : जेना हमरा लोकनि बेलूरी रही ! ओकरे लूरि सीखिकऽ घर-परिवार डेबने रही। पुरुख-पातसब मीटिंग कऽ कऽथकलाह, आब हम सब मीटिंग करब, लिखि-पढ़ि कऽ हाकिम बनब। लालकाकी'ई की बनतीह— कलस्टर की मजिस्टर ? सगुनियाँ कँ तँ हम सब दरोगा बनयबनि जे गामक झोटहा पंच कँ सैंतिकऽ रखतीह।

लालकाकी : कलियुग थिकै अय कनियाँ, ई जे ने देखाबय, जे ने कराबय। एहि कलियुगक पापेँ देवता-पितर सब निखत्तर गेलाह। कतऽ गेला ओझा, कतऽ गेला गुनी ? झाड़-फूक, जादू-टोना, जन्तर-मन्तर सब फूसि भऽ गेल। आब ककरो किछु भेलै कि ला सुइया, भोंकि दे। जड़ी आनिकऽ बान्हि दैक, बच्चाक जनम भऽ जाइ। आब बजा डाकदरनी कँ कुमहड़ जकाँ पेट फाड़ि दे। देखि देखि लगैए दाँती, कुकुर बन्हैए गाँती।''

एहन छलैक एहि ठामक नारीवर्गक मानसिकता। जाहि जादू-टोना यन्त्र-मन्त्रक नाम पर ठकाइत छल, ताहि जादू-टोनाक ह्रास होइत देखि लाल काकीकेँ घोर चिन्ता छनि। एही क्रममे बन्धुजी एहि संवाद कँ आगाँ

बढ़बैत लिखने छथि—

(सुशीलाक संग समाज शिक्षा निर्देशिकाक प्रवेश)

सुशीला : गोड़ लगै छी लाल काकी, भने अहाँ लोकनि एके ठाम भेटि गेलहुँ। हमरासंग ई समाज शिक्षा निर्देशिका थिकीह। अहीं लोकनि सँ भेट कऽ किछु कहऽ अइलीह अछि।

लाल काकी : अइलीह अछि तँ आबथु, बैसथु, मुदा जे किछु कहबाक होइनि से पुरुख-पातकेँ कहथुन, हम सब तँ हिनकर काहे कूहे बाजब बुझवो ने करबनि, दोसर बात जे हमरा सबकेँ कहलासँ की हेतनि ? हम सब हिनका जकाँ छुट्टा खजाना छीहो नहि।

स. शि. नि. : काकी, हम काहे कूहे किए बाजब ? हमहू अहीं सभक बीचक छी। देखू, परिवार तँ स्त्रीगण आ पुरुष दूनू के सहयोगेसँ चलै' छै' जेना कोनो गाड़ीके दू गो पहिया। पुरुष बाहर सऽ अरजि कऽ अनै छथि तऽ घरेमे धरै' छथि। स्त्रीगणे ने खगताक अनुसारे ओकरा खर्च करै छी ?

लाल काकी : हँऽ से तँ ठीके।

स. शि. नि. : जाहि घरमे मालकिन जेहन गिरथाइन रहै छथिन ताहि घरक पुरुषकँ ततेक उसास होइ छनि। शक्तिक बिना शिव सेहो शव भऽ जाइ छथि।

नवटोल. : शव माने की ?

सुशीला : शव माने मुर्दा, देखै नहि छियनि काली माऽ कँ, महादेवक छातीपर पैर रखने आ महादेव बाबा मुर्दाजकाँ पड़ल।

लाल काकी : सुनैछी अहाँ आब हमरा सबकेँ खड़ी धरायब, से बूढ़ सूगा आब पोस मानत आ चित्रकूट के घाट पर पढ़ि सकत ?

नवटोल. : जे कहियो ने केलहुँ से आब पार लागत ? पुरुखपात हमरा लोकनिकेँ पर्दासँ बाहर जाय देताह ?

स. शि. नि. : सुनै जाउ, सीतातँ एही मिथिलाक बेटी छलीह। ओ कोना रामक संग रने वने घुरैत रहलीह ? दशरथक तेसर रानी कैकेयी तँ लड़ाइक मैदान धरि स्वामीक संग पुरने छलीह। ई पर्दा प्रथा पहिने नहि ने रहैक। जखन विधर्मीसब देशपर अधिकार कऽ लेलकै' तकर बाद अपन इज्जति बचाबऽ लेल स्त्रीगणकेँ पर्दामे राखल जाय लागल।

नवटोल. : आब की हैतै' ?

स. शि. नि. : आब देश स्वतन्त्र अछि। आब अपना देशक स्त्री लोकनि पुरुषक पैरमे पैर कन्धामे कन्धा मिला कऽ समाजमे पसरल अज्ञान, अन्धविश्वासकेँ दूर करब, पहिने जहिना अपन देश संसारक गुरु छल तहिना फेरसँ एकरा ओहि आसान पर बैसायब। अच्छा, आई आब आज्ञा दिखऽ, फेर दोसर दिन आयब। *(प्रस्थान)*

117117
9.12.04

सगुनियाँ : देखियौ, अइ मौगीक बतकहाँमे लागि गेलिऐ, जाँत घूवाक सोहे बिसरि गेलिऐ। मगर फेन ई मौगी अउतइतऽ हम एकरासऽ पढ़वै।

नवटोल. : हँऽ आ घरवलाक कान्हसँ कान्ह मिलविहैं जे ले-उच तँ ने होइ छौ।

(सब हँसैत अछि। परदा खसैत अछि।)

बन्धुजीकेँ देशक पुनरुत्थानक हेतु केहन आदर्शक कल्पना छलनि से एहि दृश्यक संवादसँ प्रकट होइत अछि। खेद जे सम्पूर्ण नाटक उपलब्ध नहि अछि। ओना तँ सम्पूर्ण मिथिलांचले रौदीक संग दाही आ ताहि संग अगिलग्गीक शिकार होइत रहल अछि ताहूमे बन्धुजीक जन्म भूमि जाहि क्षेत्रमे पड़ैत छनि तकरा वाढ़िक नैहर कहल जाइत छैक। वाढ़ि हटलाक वाद समसल घर-द्वारमे दिबाड़ क प्रकोप अवश्यम्भावी रहैत छैक। जाहि घरक लोक सचेष्ट नहि रहल ताहि घरक वस्तुजात पर्यन्त दिवाड़क भक्ष्य बनि जाइत अछि, तखन कागत पत्रक प्रसंग की कहल जाय।

सुनल अछि आ बन्धुजीक मित्र अनुमोदितो कयने छथि जे ई एक गुरुकुल नामक हिन्दी नाटक सेहो लिखने छलाह जाहिमे भारतीय शिक्षा-पद्धतिक विशेषता तथा पाश्चात्य-शिक्षा-पद्धतिक त्रुटि दिस समाजक ध्यान आकृष्ट कयल गेल छल। संयोगवश ग्राम-देवताक पाण्डुलिपिक किछु अंश बँचलो रहल, गुरुकुल नाटक नहि बाँचि सकल।

उपन्यास

दीनानाथ पाठक 'बन्धु' क अनन्य तथा अन्तरंग सहयोगी मित्र प. श्रीचन्द्रकान्तझा 'नवेन्दु' एक संस्मरणमे लिखने छथि जे बन्धुजी जखन काशी मे रहि मध्यमा मे पढ़ैत छलाह तखने मैथिलीमे एकटा उपन्यास लिखलनि '**बड़साइत**'।

ध्यातव्य जे काशी मैथिली जागरणक एक प्रमुख केन्द्र रहल अछि। काशी मे मिथिलाक अनेक वैयाकरण, नैयायिक, ज्योतिषी लोकनिक पर्याप्त प्रतिपत्ति छलनि। म.म. जयदेवमिश्र, म.म. बालकृष्णमिश्र, म.म. मुरलीधरझा, महाकवि सीतारामझा, आनन्दझा न्यायाचार्य, बलदेव मिश्र ज्योतिषाचार्य प्रभृति विद्वान लोकनिक कर्मभूमि काशिए छलनि। बीसम शताब्दीक प्रथमे दशकमे ई लोकनि 'विद्वज्जनसमिति' नामसँ मैथिली भाषी लोकनिक एक संस्था स्थापित कयने छलाह। एहि विद्वज्जनसमिति द्वारा काशीसँ मिथिलामोद' नामक एक मासिक पत्रिका श्रावण पूर्णिमा सन् १३१३ साल तदनुसार शाके १८२९ तथा इशवीय सन् १९०५ सँ आरम्भ भेल छल। मैथिली भाषा साहित्यक विकासमे एहि पत्रिकाक अनुपम योगदान आँकल जाइत अछि। ई उद्धृत करबाक उद्देश्य ई जे बन्धुजीक जन्म मिथिलाक जाहि क्षेत्रमे भेल छलनि से क्षेत्र मैथिली साहित्य हेतु तेहन उर्वर नहि छल, एकर प्रसंगत: आगाँ चर्चा होयत। तथापि बन्धुजी मैथिली लिखबाक दिस प्रवृत्त भेलाह से काशी प्रवासक प्रभाव परिलक्षित होइत अछि। अस्त।

उक्त उपन्यासक प्रसंग विचार करबासँ पहिने एक विषय पर दृष्टिपात करब अनुपयुक्त नहि होयत जे आरम्भिक कालक उपन्यास सबमे अधिकतर उपन्यास मिथिलाक, विशेषत: मैथिल ब्राह्मणक मध्य पसरल, वैवाहिक समस्या सभक चारूकात चक्कर कटैत रहल अछि। ई नग्न सत्य थिक जे उपन्यासक पाठक उत्पन्न कयनिहार सर्वप्रथम सबसँ समर्थ उपन्यासकार भेलाह व्यंग्य सम्राट प्रो. हरिमोहनझा, जनिक प्रथम उपन्यास '**कन्यादान**' मैथिलीभाषीकेँ के कहय, अन्यान्यो भाषाभाषी कैँ पढ़बाक हेतु बाध्य वा आकृष्ट कयलक। मैथिल ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थक विवाहमे आनुषंगिक अनेक पाबनि ओ उत्सव वर्ष दिन धरि चलैत रहैत अछि। ताहिमे एक पवित्र तथा भावनात्मक आस्थासँ जुड़ल पावनि थिक '**बड़साइत**'। ई शब्द बट-सावित्री शब्दक अपभ्रंस थिक। सती सावित्री द्वारा अपन पातिव्रत्यक प्रभावेँ यमराजसँ अपन पति सत्यवानक प्राण आपस लेबाक पौराणिक उपाख्यान सँ ई पर्व सम्बद्ध अछि। मिथिलामे सामान्यत: सधवा स्त्री लोकनि प्रतिवर्ष वहुत निष्ठासँ ई पावनि मनवैत छथि, परन्तु नव विवाहिताक हेतु विवाहक प्रथमवर्षमे ई पावनि किछु विशेष धूम धामसँ मनाओल जाइत अछि। नवविवाहिताक सासुरसँ विशेष रूपेँ भार साँठल जाइत छैक जाहिमे पूजा पाठक सामग्रीक संग नव वस्त्राभूषण, बीयनि, बड़क गाछतर वितरण हेतु फुलाओल बदाम आदि रहैत छैक। ललना लोकनिक कण्ठसँ गुंजित गीत सँ वड़क गाछ तरक उत्सव-स्थल गनगनाइत रहैत अछि, रंग-विरंगक नवीन वस्त्राभरणसँ आच्छादित वृद्धासँ बालिका धरि झुण्डक झुण्ड चारूकातसँ अबैत तँ किछु पूजा कऽ जाइत रहैत अछि। एहन सुखद ओ शुभ अवसर पर यदि कोनो नवविवाहिताक सासुरसँ भार अयबाक स्थान पर वैधव्यक वज्रपातसन समाचार अबैक तँ केहन कारुणिक स्थिति उत्पन्न भऽ जयतैक तकर कल्पना मात्रसँ ककर देह नहि सिहरि उठतैक ? कोन सहृदयक हृदय विदीर्ण नहि होयतैक ? एहने एक कारुणिक घटनाकेँ आधार बनाय बन्धुजी एहि उपन्यासक ताना-बाना ठाढ़ कयने छथि।

पूर्वमे कहल गेल अछि जे मैथिलीक आरम्भिक अधिकतर उपन्यास वैवाहिक समस्या पर आधारित अछि। ई एक तथ्य थिक जे एहि प्रकारक उपन्यासक घटनाचक्र जाति विशेषसँ सम्बन्ध रखैत अछि। ओ जाति विशेष थिक मैथिल ब्राह्मणक। तकर मूल कारण महाराज हरिसिंह देवक समय सँ चल अबैत पंजी व्यवस्थामे काल क्रमे उत्पन्न विकृति थिक जाहि विकृतिक कारणेँ ई जाति सोति, योग, पंजिबद्ध, जयबार आदि अनेक कियारीमे बँटैत गेल। क्रमश: पाँजि एक सम्पत्ति बनिगेल जकर क्रय-विक्रय होअऽ लागल। रक्त शुद्धिकेँ अक्षुण्ण रखबाक हेतु पंजी व्यवस्था उपादेय जो लाभकारक छल, अनेक कुरीति उत्पन्न भऽ गेलाक कारणेँ तेहने हानिकारक बनि गेल। एहि कारणेँ बाल-विवाह बृद्ध-विवाह बहु-विवाह ओ अनमेल-विवाह समाजमे बहुत दिन धरि प्रश्रय पबैत रहल।

यद्यपि वर्त्तमान समयमे परिस्थिति टामहि उनटिगेल अछि। पाँजिक पोथीमे अंकित जातिक मूल्य अँकनिहार समाजमे आङुर पर गनबाक योग्य रहि गेलाह अछि, परन्तु एक अवधि एहनो छल जहिया सम्प्रति जेना बालकक मोल-जोल कयल जाइत अछि तहिना

पाँजिक आधार पर कन्याक मूल्य निर्धारण होइत छल। एखन जहिना वर-विक्रय जोर पकड़ने अछि तहिना एक समय कन्या-विक्रयक स्थिति छल। होइत छल एना जे पंजीक पोथीमे अंकित न्यून वंशक लक्ष्मीवान व्यक्ति ओहि पोथीमे अपन नाम उच्चवंशक पाँतीमे अंकित करयबाक लेल भलमानुसक अल्पवयस्को कन्यासँ टाका गनिकऽ विवाह कऽ लैत छलाह, तहिना अपन कन्याक विवाह जाति बढ़यबाक लोभमे बूढ़सँ बूढ़ भलमानुसक संग टाका गनिकऽ करादैत छलाह। टाकाक लोभमे पड़ि भलमानुस लोकनि अनेक विवाह कऽलैत छलाह। एहि तरहैं बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह ओ वहुविवाहक कारणेँ अनेक अनाचार बढ़ैत जाइत छल। विद्या ओ विभवसँ विपन्न रहितो वहुतो तथाकथित भलमानुस एहि सासुरसँ ओहि सासुर घुमैत, नीक-निकुत खाइत, उनटे सार ससुर पर रोव झाड़ैत जीवन बिता लैत छलाह। हुनका लोकनिकैँ दाम्पत्य जीवनक कोनो उत्तरदायित्वक बोध नहि रहैत छलनि। एहि जातिमे स्त्री वर्गकैँ पुनर्विवाहक अधिकार धर्मशास्त्र नहि देने छनि। आन वर्णमे ई स्थिति नहि छैक। तैँ लेखक लोकनिक ध्यान एहन ज्वलन्त समस्या दिस आकृष्ट भेलनि तथा जाति विशेषक जीवनसँ सम्बद्ध घटनाचक्र उपन्यासक विषय वस्तु बनल तकरा अस्वाभाविक नहि मानल जयबाक चाही।

वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे यद्यपि ई उपन्यास अप्रासंगिक भऽ गेल अछि। प्राय: ई स्थिति सब सामाजिक उपन्यासक होयब स्वाभाविके थिक। कारण सबकाल मे सामाजिक स्थिति परिवर्तित होइत रहैत अछि ।'कन्यादान'क नायिका बुच्ची दाइ आइ नहि भेटतीह। एक'कैस विवाह कयनिहार भलमानुसो नहि भेटताह।

श्री 'नवेन्दु' जीक कथनानुसार बन्धुजी जखन मध्यमामे पढ़ैत छलाह तहिए ई उपन्यास लिखलनि। बखरीक गौरीशंकर विद्यालयसँ १९५० इ. मे आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण भेलाह, एतावता एकर रचना काल १९४६ ई. मानल जायत। प्रायश: प्रसिद्ध उपन्यासकार योगानन्दझा तथा श्रीउपेन्द्रनाथझा 'व्यास'क उपन्यास क्रमश: '**भलमानुस**' तथा '**कुमार**'क रचना काल सेहो एकरे आसपास पड़ैत अछि। अत: युगक अनुसार एह् उपन्यासक विषय वस्तु अप्रासंगिक नहि छल। परन्तु बन्धुजी अवस्थाक दृष्टिएँ ताहि समय एकदम अपरिपक्व छलाह, तथापि उपन्यास लिखबाक साहस कऽ बैसलाह। ई साहस हिनक अप्रतिम प्रतिभा कैँ प्रमाणित करैत अछि। हँऽ ई कहल जा सकैछ जे जेहन प्रवाह छलैक ताही प्रवाहमे ईहो बहैत रहलाह, किन्तु एक तरुणक एहनो साहस श्लाघ्ये मानल जायत। एहि उपन्यासक कथावस्तु बाल-विवाह तथा एहि कुरीतिक कारणेँ केहन-केहन दुर्घटना समाजमे घटैत अछि, वैमनस्यक आगि कोना पजरैत अछि तथा ओहि आगिमे समाज कोना झौंसल-झरकाओल आ उलाओल पकाओल जाइत अछि तकर चित्रण कयल गेल अछि।

लोभसँ ग्रस्त भऽ अपन कयल निष्करुण दुष्कर्मकैँ भाग्यक नाम पर थोपि, अपना कैँ निरपराध सिद्ध करबाक दुश्चेष्टा कोना भाग्यवादी एहि समाजक लोक करैत छल तकर चित्रण खोंइचा छोड़ा कऽ बन्धुजी एहि उपन्यासमे कयलनि अछि।

पहिने ग्राम्य जीवनक किछु चित्रण जे एहि उपन्यासमे कयल गेल अछि तकर बानगी प्रस्तुत अछि—

"जेठ मास, रोहिनियाँ आमक गोपी खसऽ लागल छैक। ककरो ककरो भिनसरबा रातिमे बम्बह आमक गोट पगरा पाकल आम हाथ लागऽ लगलैक अछि। पहिने तँ दिन भरि अँचार-आमिल आदि बनयबालै धीया-पूजा टिकुला बीछऽमे व्यस्त रहैत छल, मुदा आब रातिओकऽ ओगरवाहि करबा लै गाछी-कलम सब ठाम मचान-खोपड़ी तैयार भऽगेल अछि। आब की नेना की चेतन की बूढ़-बुढ़ानुस सभक बैसाड़ गाछी-कलम सैह बनि गेल अछि। चारू भाग-सतत चहल-पहल रहैत अछि। भिनसरुका उखड़ाहामे नेना-भुटका' झिज्झिर कोना झिज्झिर कोना कोन कोना जाउ, सब जन पहिने आँखि मूनू तखन हेरऽ आउ' पढ़ि-पढ़ि चोरानुक्की आ किशोर सब 'चेत् कबड्डी कवडी कबडी' पढ़ैत कबडी खेलाइत वातावरण कैं गुंजित कयने रहैत अछि। दुपहरियामे तरुण ओ युवक वगरू ताशक चौखड़ी जमल रहैत अछि तँ बेर ढरलापर बूढ़ पुरनियाँ सभक विसात पसरि जाइत अछि, वाजी पर बाजी शतरंज चलऽ लगैत अछि। खेड़ा लोकनि आँखि गड़ौने दार्शनिक मुद्रामे मौन धारण कयने चालि पर चालि दैत रहैत छथि। बीचमे टिप्पा लोकनि टीप दैत छथिन-अरे किस्ती की चलैं छी, एहि घर सँ घोड़ाक दोसाहा लगैत छनि, ई शऽह, फर्जी पार। विपक्षी विरोध करैछ-से नहि हैत, किश्ती छूने छलहुँ तँ किश्ती चलऽ पड़त।

— हम घोड़े चलब।

— हम फर्जी एहि घरमे नहि राखब।

— ई बैमानी भेल।

— तों बैमान, तोहर बाप बैमान— चलह सङिता बैमानक संग के खेलाय ?

किछु काल गरजा-गरजी, किछु काल थुक्कम फज्झैती, विसात उनटिगेल गोटी सब छिड़िया गेल, खेल उसरिगेल, सब सब दिस ससरि गेल। दिन एहि तरहेँ बितैत अछि, मुदा राति कऽ कलम-कलम, गाछी-गाछी लालटेन सँ चकमक भऽ जाइत अछि, किछु दिन पहिने जे भुताहि बूझल जाइत छल ताहि गाछी सबमे जेना साक्षात् लक्ष्मी एखन पिकनिक मनयबा लै पहुँचल होथि, बस्ती परक समृद्धि जेना एतहि चल आयल हो तेहने प्रतीत होइत अछि।" एहि वर्णन सँ उपन्यासकारक शब्द सामर्थ्य तथा सामाजिक जीवनक सूक्ष्मतासँ निरीक्षण करबाक दृष्टिक परिचय प्राप्त होइत अछि।

उपन्यासक घटनाक्रम एहिरूपेँ चलैत अछि-शम्भु नामक एक व्यक्ति जे एक हजार टाका गनाय अपन सात वर्षक कन्याक विवाह सोनाही गामक एक वृद्धक संग करौने छलाह। बटसावित्रीक पर्व उपस्थित छलैक। गामक किछु सधवा लोकनि पूजाक सामग्री लऽ बड़क गाछ दिस गीत गबैत जा रहलि छलीह, किछु गोटे पूजा कऽ गीत गबिते घूरलि छलीह, ताहि बीच नेना-भुटकाक चैं-भौं सँ वातावरण अनुगुंजित छल।

नव विवाहिताक हेतु किछु विशेष ओरिआओन-पात करऽ पड़ैत छैक। किछु काल सासुर सँ भार अयबाक आशा-बाट ताकि कमलेश्वरीओकैं सिंगार-पटार कऽ तैयार कयल

गलैक। कलसीमेजल भरि कमलेश्वरीक माथ पर देल गेलैक। ओ अबोध बालिका पर्वक महत्त्व की बुझितैक, परन्तु नव कपड़ा, गहनागुरिया आदि पहिरि एहि आनन्दमे मगन छलि। विधिकरी छलथिन सरस्वती, ओ पूजाक सजाओल डाली अपना हाथमे लेलथिन, फुलाओल बदामक चंगेरा खबासनीक माथपर देल गेलैक, दाइ-माइ लोकनि गीत गबैत आङनसँ बाहरो नहि भऽ सकलीह तावत शम्भू मिसर हवोढकार कनैत, हफसैत दलान पर सँ आङन दौड़ल अयलाह ई कहैत जे अन्हेर भऽ गेल.....।

पत्नी पतिक ई दशा देखि आतंकित भेल पुछलथिन-की भेलै ? शम्भू— डाका पड़िगेल, सोनाहीवला ओझा न... हि...र...ह...ला...ह।

पत्नी चीत्कार कऽ उठलथिन, आङनमे हाहाकार मचिगेल, शम्भूक अस्सी वर्षीया माय हाक पाड़ि कानऽ लगलथिन— दैवा रे दैवा ! मुँद्देया सभक छाती जुड़यलै रे दैवा ! कमलेसरीक आब कोन उपाय हेतँ रौंबाप !!

एहि घटना पर उपन्यासकार अपन प्रतिक्रिया व्यक्त करैत लिखैत छथि—

"विधिक विधानकेँ के जानि सकैत अछि। क्षणहिमे जीवन भरिकनैत व्यक्ति भाग्योदय भेलापर खिलाखिला-खिलाखिला हँसय लगैत अछि तथा ठहाका मारि हँसनिहार व्यक्ति दुर्भाग्यक चपेटमे पड़ि जीवन भरि जार वेजार कनैत रहबाक हेतु बाध्य भऽ जाइत अछि। एखनहि अचल सौभाग्य पयबाक कामनासँ बटवृक्षक पूजाक हेतु उठल डेग-जकर छलैक से कमलेश्वरी आजन्म वैधव्यक ज्वालामे तिलतिल जरैत रहबाक हेतु विवश अछि। परन्तु,एहि विनाशकेँ हकारि कऽ अनबाक दोषी के ? सात वर्षीया अबोध बालिका अथवा पचपन-साठि वर्षीय ओ कामपिपासु अविवेकी वृद्ध पुरुष किंवा एहन पैशाचिक प्रवृत्ति रखनिहार लोभेँ आन्हर पिता वा जानि वूझि एहि प्रकारक सत्यानाशी दुर्व्यवस्था कँ प्रश्रय देनिहार पतित समाज ? के ? के? के?

जाहि समाजमे वाबा कहयबाक वयसक गलित नख-दन्त बृद्ध लोक 'इमांकन्यां सालंकारां प्रजापति दैवतां पत्नीत्वेनाहं वृणे' कहैत लाजेँ मरि नहि जाइत हो, जाहि समाज मे अपना-अंश सँ उत्पन्न कन्याकेँ वलि पड़निहार छागर जकाँ महिषामे मूड़ी पकड़ि लगौनिहार पिता नृशंसताक संरक्षक वनल रहैत हो ताहि समाजक दृष्टिमे वैधव्यकेँ कष्टकारक कोना कहल वा बूझल जा सकैत आछि।

'मिथिलायां प्रदीप्तायां न मे दहति किंचन' सदृश उद्घोष कयनिहार राजा जनक सन विदेह जाहि भूमिक कहियो शासक रहल होथि, अपन बाड़ीक साग खाय कष्टमय जीवन बितवितहु दानकेँ अस्वीकार कऽदेनिहार अयाचीमिश्र सदृश सन्तोषी ब्रह्मण-जाहि भूमिक गौरव-पुरुष रहल होथि, उदयन, मण्डन, वाचस्पति, विद्यापति, गोविन्ददास प्रभृति मनीषीगण जाहि भूमिक कीर्तिपताका दिग्दिगन्त धरि फहरौने होथि, सर्वोपरि स्वयं जगदम्बा जानकीक रूपमे जाहि भूमिसँ उत्पन्न भेल होथि, ताहि भूमि पर बसनिहार समाज आइ आँखि अछैत आन्हर, कान अछैत बहीर, हाथ अछैत लुल्ह पैर अछैत पंगु बनय चाहैत हो, अध: पतनक गर्त्तमे स्वयं समाजयबालै उताहुल हो तँ एहि सँ बढ़ि दुर्भाग्य एहि भूमिक

आर की भऽ सकैत छैक ? एहन समाज पृथ्वीक भार थिक, मनुष्य जातिक कलंक थिक।''

सम्पूर्ण अंश पढ़ैत पढ़ैत प्रतीत होइछ जे उपन्यासकार एहि गर्हित कर्मक विरुद्ध अपन हृदय क समस्त आक्रोश कँ उगिलि देने छथि। समाजक अध: पतनक चरम स्थिति छल बाल-विवाह कही अथवा वृद्ध-विवाह, कारण ई दूनू अन्योन्याश्रित छल। 'छल' एहि भूत कालिक क्रियापदक प्रयोग जानि बूझि कऽ कयल गेल अछि तकर कारण जे आब युग बदलि जयबाक आ नवीन चेतना जाग्रत भऽ गेलाक कारणेँ एहि घृणित रोगसँ समाज कँ मुक्ति भेटि गेल छैक। जाहि कारणेँ वैवाहिक समस्या पर एखनहु उपन्यासक हेतु पर्याप्त सामग्री उपन्यासकारक हेतु उपलब्ध छनि। परन्तु एतय से विवेच्य नहि अछि।

कथावस्तु कँ उपन्यासकार कोन रूपेँ मोड़ दैत छथि तकर दिग्दर्शन करायव आवश्यक प्रतीत होइछ जाहि सँ उपन्यासकारक मन्तव्य स्पष्ट भऽ सकय। ओ आगाँ लिखैत छथि—

''कमलेश्वरीक मायक चीत्कार सुनि बड़साइत पूजि घूरलि महिला लोकनि धड़फड़ायल आङन पहुँचय लगलीह, आङन स्त्रीगणसँ गदमद भऽ गेल। सबकेँ एतबे जिज्ञासा छलैक-की भेलैक ? की भेलैक ? शम्भूकेँ ठकमूड़ी लागल, ओ हाथ मे चिट्ठी लेने ठाढ़, दूनू आँखिसँ बसोधारा नोर बहल जाइत, बकार जेना क्यौ मुँह सँ छीनि लेने होइनि, कण्ठ जेना क्यौ मोकि देने होइनि। चारू कात सँ दलान पर पुरुष लोकनिक धरोहि लागि गेल। कमलाकान्त चौधरी, भृखन मड़र, कैलू कामति, हरखित, देवो काका सब वर्गक, सब तूरक लोक दलान पर थहाथही करैत, सभक मुँह सब तकैत, विस्मय विमुग्ध भेल ठाढ़। हरखित कँ हरलनि ने फुरलनि दौड़िकऽ आङन गेलाह आ शम्भूकेँ घिचने तिरने दलान पर अनलनि। शम्भूकेँ बुकौर लागल देखि शम्भूक हाथसँ चिट्ठी झपटि कऽ पढ़लनि— सोनाही वाला ओझा नहि रहलाह। तखनतँ हरखितोक धैर्य टूटि गेलनि, ओ की सान्त्वना देथिन। मन पड़लनि तँ मृत्युक तिथि पढ़लनि, दौड़ले आङन गेलाह, कहलथिन-जे वज्र खसबाक छल से तँ खसि पड़ल, आब आगाँक सुधि लेबऽ पड़त। आइए नऽह-केश थिकनि। ई कहि फेर दलान दिस दौड़लाह।

अबोध कमलेश्वरी माथपर कलसी रखने चकुआइत सभक दिस तकैत ठाढ़ि छलि। ओहि निरीह बालिका कँ की पता जे ई वज्राघात ओकरे सिउँथिक सिन्दूर पर भेलैक अछि। ओ तँ कनियाँ-पुतरामे वर-कनियाँक खेल खेलाइलि छलि। विवाहक कामनामय महत्त्व अथवा दाम्पत्य जीवनक सुखमय सुअवसर ककरा कहैत छैक ताहिसँ सर्वथा अपरिचित छलि। टुनियाँक माय, जे बड़क गाछ तर बाँटल जयबाक हेतु फुलाओल बदामक चेङरा माथ पर रखने रहय तकरा नीचाँ मे राखि, कमलेश्वरीक माथ पर सँ कलसीकेँ उतारि देलकै आ हाथक ओही दिन पहिरल लहठी कँ फोड़ऽलगलैक तँ कमलेश्वरी बड़ी जोर सँ चिचिया उठलि— देखही गय माय, ई छुच्छी टुनियाँ माय हमरा हाथक लहठी फोड़ै 'ए। तावत क्यौ एक लोटा पानि देलकै तँ टुनियाँक माय सिउँथिक सिन्दूर धोअऽ लगलैक तँ कमलेश्वरी

टुनियां मायक झाँटखीचैत बाजलि-गय राँड़ी, आब हम बड़ साइत पूजऽ कोना-जायब गय बेटखौंकी, कमलेश्वरीक माय पछाड़ खा आङनमे खसि पड़लीह। ई दृश्य देखि कऽ आङनमे जतेक लोक छल, की स्त्रीगण की पुरुष, सभक आँखिसँ अविरल अश्रुधार प्रवाहित होअऽ लगलैक। बुझयलैक जे आङनक एक कोनमे चौरापरक तुलसीक गाछ सेहो मौलाय गेल हो। की एहि सामूहिक नोरक बाढ़िओमे एहि समाजक ई कलंकक दाग मेटाय सकत ? धोआय सकत ? नहि, किन्नहु नहि, कथमपि नहि।''

एहि वर्णनमे उपन्यासकारक हृदयमे पुंजीभूत समस्त करुणा धैर्यक बान्ह कैं छिन्न-भिन्न करैत बाहर उछिलल सन प्रतीत होइछ। समाजक जड़ता निराशा कैं घनीभूत कऽ दैत अछि। एक दिस अबोध बालिकाक वैधव्यजन्य अन्धकारमय सम्पूर्ण भविष्य आ दोसरं दिस भाग्यवादी आन्हर समाजक कुतर्क कोना घावपर नोन छिटबाक काज करैत अछि, तकर चित्रण कोन रूपैं भेल अछि से निम्नांकित रूप मे द्रष्टव्य—

''तीन दिन शोकक वातावरणमे सघनता रहल। रहि रहिकऽ शम्भू मिसरक पत्नीक टाहि वातावरण मे एक हिलकोर उत्पन्न करैत रहल। चारिमदिन दिनान्त मे नवयुवक सब मिलि सोनाही वाला ओझाकैं श्रद्धांजलि देबाकलाथैं एक शोक-सभाक आयोजन कयलक। आमक समय रहलाक कारणैं गामक अधिकतर लोक गाछिए-कलम दिस रहैत अछि तैं सभास्थल अन्हरकी गाछीक लग पुवारिकातक परतीपर राखल गेल। दू टा युवक मालक बथान खड़रऽ वाला खड़रासँ साँसे परतीकैं खड़रिकऽ साफ कयलक। गाछीक एक खोपड़ीमे राखल एक चौकी आनि, ताहि पर एक सतरंजी ओछाय, अध्यक्षक हेतु मंच बनाओल गेल। हकारि कऽ गामक लेक कैं एकत्र कयल गेल। गमैंया वातावरण मे एहि प्रकारक शोकसभाक आयोजन सर्वथा नवीन बात छल तैं अधिकांश लोक उत्सुकतावश ओहि सभामे उपस्थित भेल। शम्भू मिसर कैं सेहो घीचीतीरिकऽ छौंड़ा सब अनलक। कमलाकान्त चौधरि अध्यक्ष बनाओल गेलाह। शम्भू मिसर कैं सेहो अध्यक्षक एक कातमे बैसाओल गेलनि।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयक समाजशास्त्र प्रतिष्ठाक हरिहर नामक एक छात्र गर्मी छुट्टीमे ओही गामक अपन कोनो सम्बन्धीक ओतऽ पहुनाइ करऽ आयल रहथि। ओहो घुमैत-फिरैत ओहि सभामे पहुँचि गेलाह। समाजशास्त्रक छात्र रहलाक कारणैं समाज सुधारक काजमे स्वाभाविक रुचि छलनिहैं। सुदूर देहातमे एहि प्रकारक आयोजन कनेक विशेष रूपैं आकृष्ट कयने छलनि तैं मनोयोग पूर्वक सभाक कार्यवाही देखऽ लगलाह। सबसँ पहिने मनोहर ठाकुर भाषण करबालै ठाढ़ भेलाह। अध्यक्ष, शम्भू मिसर आ उपस्थित जन समुदायकैं सम्बोधित करैत बाजऽलगलाह— एहि संसारक नामे मृत्यु भुवन थिकै, क्यौ सब दिन एतऽ रहबा लै नहि आयल अछि। भागवत मे व्यासजी कहने छथि— 'मृत्युः जन्मवतां वीर देहेन सहजायते'— आइ मरी की काल्हि, मृत्युसँ क्यौ बाँचि नहि सकैत अछि। जखने जन्म होइत अछि, विधाता सभक ललाट पर मृत्युओक दिन, समय, स्थान सब किछु टीपि देने रहैत छथिन। भोग जकरा जे लिखल रहैत छै' से भोगहि पडैत छै',

कहलो गेल छै—

'राइ बढ़य ने तिल घटय जे विधि लिखल लिलार'

से पूरि गेलनि तँ चलि देलनि। जँ कनने— खिजने, छाती पिटने जीवि जइतथि तखन सभामे उपस्थित सब गोटे एक स्वर मे कनितहुँ, छाती पिटितहुँ। रहल एहि अभगली छौंड़ीक बात से ईहो पूर्वजन्ममे कोनो गायक घरमे आगे लगौने छल होयत तकर डण्ड एकरो भोगऽ पड़िरहल छैक, जे बाँकी छै' सेहो भोगहि पड़तैक। भगवान ओझा जीकेँ शान्ति देथुन। हमरा लेकनिकेँ आब 'विपदि धैर्यम्' एतबे उपाय। एतबा बाजि मनोहर ठाकुर श्रोता सभक मुख-मण्डलपर अपन पाण्डित्य पूर्ण भाषणक केहन प्रभाव पड़लैक चारू दिस ताकि तकर आकलन करऽ लगलाह।

मनोहर ठाकुर चुप ठाढ़े छलाह तावतेमे बंठूझा ठाढ़भऽ बाजब शुरू कयलनि— से सत्ते, भाग सबसँ प्रवल तँने नीति शास्त्रमे लिखल गेलै— 'लिखित ललाटेमपि क: प्रोझितुं समर्थम्। बंठूझा द्वारा उद्धरणक उच्चारण पर हरिहरक ठोरपर मुस्की आबि गेलनि। बंठूझा आगाँ बजलाह जे अवस्थो तँ कोनो ततेक बेसी नहि छलनि..... बीचेमे गणेश नामक एक युवक टोकि देलकनि— बेसीकोना ने छलनि ? केश पाकिगेल छलनि, आधासँ बेसी दाँतो टूटि गेल छलनि, साठिक धक तऽजरूर छल हेतनि। बंठूझा गणेश कँ डाँटि कऽ बैसि जाय कहि बजलाह-मान लियऽ साठिए। एतऽ तँ कहल गेल छै 'साठा तँ पाठा'। अपना समाजमे बिकौआ लोकनि बीस-बीस विआह करैत छलाह। पाँच-सात विआह हेवनिधरि केनिहार कँ हम देखने छियनि। दूर जयबाक काज नहि, हमर अपने पितामह पाँच विआह कयने रहथि। ओ पितामही हमर एखन जिविते छथि। रामजीक दयासँ हुनकर श्राद्धक अधिकारी हमही छियनि। विधना ककरा कपारमे की लिखने छथिन से के जनैत अछि। शम्भू मिसर रामजीक दयासँ अपना जनैत सुखितगरे घर-वर ताकि कऽ देलथिन। ओझा जीक दरबज्जा पर रामजीक दयासँ तीन टा बखारी, खुट्टापर दूजोड़ा बड़द, तीनटा महीस, रामजीक दयासँ सरैसाक बन्हौटा घोड़ा, की ने छनि ? तीन गोट दरिया-दाख कमासुत बेटा, मुदा एहि अभगलीक कर्म जरल छैक से तँ नहि बुझलथिन। माय-बाप जन्म दैत छै' कपार तँ अपने रहैत छै।''

बंठूझाक भाषण सुनि विनोद चौधरिकेँ नहि रहल गेलनि। ओहो उठि कऽ अपन उद्‌गार व्यक्त करैत बजलाह-बंठू काका ठीके कहलनिहेँ जे माय-बाप जन्म दैत छै 'मुदा भोगऽतँ पड़ै छै' लोक कँ अपने कयल कर्म। सनातन सँ ई आबि रहल छैक, तँ हमरा सभक धर्म कँ सनातन धर्म कहल गेल छैक। ई सब जनैत छीजे' विवाहो जन्म मरणं च यदा यत्र भविष्यति। राजा शर्यातिक बेटीक विआह तँ च्यवन मुनि सन परम बृद्धक संग भेल रहनि तेँ एहिमे अनकर ककरो दोष नहि, अपन कपारक दोष। आब धैर्य धारण करब सैह एकर निदान।

हरिहरकेँ एहि भाग्यवादी लोकनिक भाषण असह्य बुझयलनि तँ अध्यक्षसँ किछु बजबाक अनुमति मडलथिन। अध्यक्षक अनुमति पाबि उठिकऽ ठाढ़ भेलाह। एक

अनचिन्हार कँ ठाढ़ भेल देखि सभक ध्यान हरिहर दिस केन्द्रित भऽगेलैक। हरिहर भाषण आरम्भ कयलनि-आदरणीय सभापति महोदय, उपस्थित एहिगामक निवासी सकल समाज! सब सँ पहिने हम दिवंगत आत्माक प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करैत ईश्वर सँ प्रार्थना करैत छियनि जे मृतात्माकँ सद्गति देथुन तथा हमर एहि मूढ़ समाज कँ सन्मति देथुन जे समाज एखनहु जाति-पाँतिक नाम पर अबोध बालिकाक गठबन्धन साठिवर्षक बूढ़क संग करैत अछि, जे समाज बेटा-बेटी पर टाका गनाय देश कँ कलंकित करैत अछि, जो समाज भाग्य-कर्म आदिक नाम पर अपन कयल अपकर्मकँ, जघन्य पापकँ झाँपबाक चेष्टा करैत अछि, जे समाज शास्त्र आ परम्पराक नाम पर एक अबोध कन्या कँ जीवन भरि वैधव्यक ज्वालामे जरैत रहबाक हेतु बाध्य करैत अछि। सज्जन वृन्द ! अपने लोकनिसँ हमर करबद्ध विनम्र प्रार्थना जे पूर्वक उदाहरणकँ, पौराणिक उपाख्यानकँ आदर्श मानि भविष्यमे एहि प्रकारक बाल हत्या करबासँ समाजकँ बचविऐक। सुकन्याक विवाह वृद्ध च्यवन मुनि सँ जाहि समयमे भेल छलनि ताहि समयमे अश्विनी कुमार सन वैद्य सेहो छलाह जे अपन दिव्य औषधिसँ च्यवनमुनिक कायाकल्प कऽ युवक बना देने छलथिन। हुनके नाम पर बल-वीर्यवर्द्धक औषधि 'च्यवनप्राश' नामसँ बाजारमे बिका रहल अछि। की आबहु ओहिमे कायाकल्प करबाक सामर्थ्य रहि गेलैक अछि ? अत: हमर निवेदन जे जाहि सिउँथिक सिन्दूर आइ पोछि देल गेलैक अछि ताहि सिउँथि कँ पुन: सिन्दूर तिलकित कोना कयल जाय ताहि पर विचार करैत जाइ। हरिहरक मुँहसँ एतबा बहराइत देरी बंठूझा तड़ङि उठलाह— कतऽसँ ई अनगौआँ अलगटेंट हमरा गामक सभामे सन्हियायल अछि ? कान पकड़ि कऽ एकरा गामक सिमानसँ बाहर कऽ दे। बंठूझाक बात सुनि हरिहर जनिकर पाहुन छलथिन से गरजि उठलाह— ककरा बापक तागति थिकै जे हमरा पाहुन दिस हाथ बढ़ाओत, ओकर हाथ छप्प दऽ काटि लेबैक। परिस्थिति एहन उत्पन्न भऽ गेल जे आब मारि बजरि जायत।

शोक सभाकँ रोष सभामे परिणत होइत देखि सभापति कमलाकान्त चौधरि कल जोड़ि सबकँ कहऽ लगलथिन-हम कल जोड़ै छी, पैर पकड़ै' छी अहाँ सब शान्त होउ कनेक हमरो प्रार्थना सुनैत जाउ। कनेक सभामे शान्ति भेल तँ बाजब आरम्भ कयलनि— सज्जनबृन्द ! ई आनगौआँ कुटुम्बजे किछु बाजि गेलाह अछि ताहिमे हिनक दोष नहि छनि, ई युग बाजि रहल अछि। एखन बसाते उनटा बहि रहल अछि। आजुक नवयुवक लोकनि नव-नव शास्त्र पढ़ल छथि, अपन पुरखा क अदगोइ-बदगोइ करबामे अपन उत्कीर्णा बुझैत छथि, अपनासँ श्रेष्ठक धाख राखबकँ अपन हीनता मानैत छथि, दोसराकँ पीड़ा देब अपन पुरुषार्थमे गनैत छथि, फूसि बाजबकँ अनुचित नहि मानैत छथि, छल-छद्मसँ, ठकि-फुसिया कऽ प्रवंचना कऽ धन उपार्जन करबकँ अपन चतुरता बुझैत छथि। पानि लऽकऽ लग्धी नहि करैत छथि, टोकलापर कहताह— हम की आगि मुतैत छीजे पानिलऽकऽ तकरा मिझाउ। शास्त्र-पुराण कँ गपोड़ मानैत छथि। परन्तु शास्त्र स्पष्ट शब्दमे कहैत अछि—

'अष्टवर्षा भवेद् गौरी, नववर्षाच रोहिणी।
दश बर्षा भवेत् कन्या अत ऊर्ध्वं रजस्वला।।'

तँ पूर्वज लोकनिक चेष्टा रहैत छलानि जे कन्या दश वर्षक जहाँ भेलि कि ओकर विवाह करा दिऐक। कालक्रमेँ दशसँ बारह आ बारह सँ चौदह वर्ष धरि कहुना ग्राह्य भेल। मुदा शास्त्र-पुराण गेल तेलहंडामे, सनातनसँ चल अबैत आचार-विचार, विधि-व्यवहार गेल चूल्हिमे। बाप-पितामह भेला बलेल, बेटा-पौत्र बुधियार। ककराके रोकय, ककरा के टोकय। तँ ने सत्य नारायण कथामे देवर्षि नारद भगवान विष्णुकेँ कहैत छथिन—

'कलौ सर्वे भविष्यन्ति पापकर्म परायणा:

वेद-विहीनाश्च.....'

हे समाज, आब जाति-धर्म, इज्जति-प्रतिष्ठा बाँचब असम्भव अछि। घोर कलियुग आबिगेल। जँ भला चाही तँ मुँह सीवि लिअऽ आँखि मुनि लिअऽ, कानमे तूर ठूसि लिअऽ। मुदा हे एतबा ध्यान राखू, शास्त्रक ई हो वचन छैक-कलौकर्त्तैव लिप्यते' कलियुगमे कर्त्ता मात्र पापक भागी होइत अछि, तँ अपनाकेँ बँचा कऽ राखू तखने एहि भ्रष्ट युगक घोर पाप-पंक सँ उबरि सकब। एतबा बाजि सभापति कमलाकान्त चौधरि हरे कृष्ण, हरे राम, शिव-शिव कहैत दूनू हाथ जोड़ि, दूनू आँखि मूनि भगवानक स्मरण करऽ लगलाह।''

अपन छात्रावस्थेमे, जे अपरिपक्वे अवस्था मानल जायत, बन्धुजीक चिन्तनमे कतेक परिपक्वता आबि गेल छलनि, भाषा पर केहन पकड़ भऽ गेल छलनि सैह दर्शयबाक हेतु ई उद्धरण देब आवश्यक प्रतीत भेल।

पूर्वहि कहल जा चुकल अछि जे नाटके जकाँ एहि उपन्यासोक हमरा खण्डिते अंश उपलब्ध भऽ सकल तँ कथानकक चरम परिणति की होइत अछि से अन्धकारेमे रहि जाइत अछि। तथापि आद्यन्त खण्डित उपन्यासक मध्यभागो सँ लेखकक सामाजिक अवगुणक अवबोध, ताहिमे कल्पना शक्ति ओ अभिव्यक्ति सामर्थ्यक संगहि सुधारवादी दृष्किोणक झलक स्पष्ट रूपेँ परिलक्षित भऽ उठैत अछि।

चाणक्य महाकाव्यक रचना ओ प्रकाशनक पृष्ठभूमि

एहि साहित्यकार केँ हम प्रकाशमय उल्का कहलियनि अछि तकर निहितार्थ ई अछि जे विद्यार्थिए जीवनमे बड़साइत नामक उपन्यास लिखि गेलाह, जीवनक अल्प अबधिमे **'मैथिली'** नामक खण्ड काव्य लिखलनि तकर बाद **'ग्राम देवता'** तथा **'गुरुकुल'** नामक नाटक लिखलनि तदुत्तर **'चाणक्य'** नामक सफल महाकाव्यक रचना कऽ गेलाह। विद्यार्थिए जीवनमे हस्तलिखित पत्रिका सम्पादन, **'बन्धुपरिषद'** नामक संस्थाक संगठन आ ताहि माध्यम सँ बहुत थोड़ समयमे अपना क्षेत्रमे पर्याप्त लोकप्रियता प्राप्त कऽ अल्पे वयसमे जीवन लीला समेटि एक मात्र प्रकाशित महाकाव्यक प्रसादेँ मैथिली साहित्यक इतिहासक पृष्ठ पर चमकैत तारा जकाँ अपन नाम अंकित करा गेलाह। यदि एहि प्रतिभासम्पन्न व्यक्तिकेँ दीर्घ जीवन भेटितनितँ साहित्य-भण्डार कतेक श्री-सम्पन्न होइत से अनुमानगम्य विषय थिक।

साधारणत: आजुक युगक लेखककेँ रचना यदि प्रकाशित होइत रहैत छनि तँ रचना करबाक उत्साह बनल रहैत छनि, अन्यथा उत्साह क्षीण पड़िजाइत छनि, किन्तु बन्धुजी हिन्दीमे 'दीन' उपनाम रखने रहथि से नामेटा नहि व्यावहारिको रूपमे 'दीन' छलाह। अल्पवित्तक परिवार, पिताबृद्ध, अल्पवयसमे विवाह क कारणेँ लेधगेध धीया-पूता, सभक भरण-पोषणक भार तँ अपने पुस्तक प्रकाशित करबाक आर्थिक सामर्थ्य नहि, पत्र-पत्रिका सबसँ कोनो सम्पर्क नहि। तथापि लिखबाक क्रममे कहियो शिथिलता नहि अयलनि, प्रत्युत महाकाव्य लिखबाक हेतु कलम उठा लेलनि आ उठाइए नहि लेलनि, अपितु सफलता पूर्वक तकरा पूर्ण कइए कऽ दम धयलनि ई हिनक अनुपम ऊर्जस्विताक परिचायक थिक।

प. श्रीचन्द्रकान्तझा 'नवेन्दु' अपन संस्मरणमे लिखने छथि— "'दीन' जी जखन मध्यमे मे पढ़ैत छलाह तखने मैथिलीमे 'बड़साइत' नामक एकटा सामाजिक उपन्यास लिखलनि, ओ हुनक प्रथम कृति छलनि जे अधावधि अप्रकाशिते अछि। यैह उपन्यास लऽकऽ दीनजी, बालमुकुन्द ठाकुर आ हम श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' जीक ओहि ठाम दरभंगा गेल छल हुँ। कथा प्रसंगमे चाणक्यक गप्पचलल। 'दीन' जी बजलाह-हमर इच्छा अछि जे मैथिलीमे चाणक्य पर एकटा प्रबन्धकाव्य लिखी। 'सुमन' जी बहुतप्रसन्न भेलथिन आ अनेकश: उत्साह प्रद वाक्य सँ हुनका प्रोत्साहन देलथिन। एहि तरहेँ चाणक्यक मानसी जन्म सुमनजीक ओहि ठाम भेल।

रस्तामे हम कहलियनि— औ दीनजी, अहाँ मैथिलीमे चाणक्य पर महाकाव्य लिखू आ हम चाणक्य पर हिन्दीमे एक टा नाटक लिखब। कालक गतिकेँ के जानय। ओ गाम अबिते चाणक्यक निर्माणमे लागि गेलाह आ दू वर्षक अन्दर घरक नाना जंजालमे रहैत, स्कूलमे अध्यापन करैत, एकनिष्ठ साधनाक बलेँ 'चाणक्य' महाकाव्यक रचना कऽ लेलनि आ हमर एखनो धरि मोनेमे अछि। एहन कर्मनिष्ठ छलाह।

चाणक्यक रचना कयलाक बाद 'दीन' जीक विचार भेलनि जे एक-दू अनुभवी मैथिली साहित्यकारकेँ ई काव्य देखाओल जाय। एहि प्रसंग ओ एक पत्र कविचूड़ामणि 'श्रीमधुप'जी केँ १९६० इ. क सितंबर मासमे लिखलथिन जे हम दछिनाहा भऽ कऽ मैथिलीमे एकटा चाणक्य नामक महाकाव्य लिखबाक धृष्टता कयने छी। अत: अपने सँ निवेदन जे एक बेर एकर पाण्डुलिपि देखबाक कष्ट कयल जाओ।

सहृदय 'मधुप' जी केँ ई दछिनाहा उतरवरिया जनित छोट-पैघक भेद-भाव असह्य बूझि पड़लनि। ओ तुरन्त हीनताक भाव केँ नष्ट करैत दीनजी केँ कोर्थु (अपन गाम) सँ २१ अक्टूबर १९६० इ. केँ पद्यमे उत्तर देलथिन जकर किछु अंश निम्नांकित अछि :—

उत्तर हिमगिरि दक्षिण गंगा
पश्चिम गंडक धार
पूव महानन्दा धरि मिथिला—
ओ मैथिल विस्तार
एकर मध्यमे जे बसैत अछि

सभक मैथिली भाषा केहनो हो सब उपादेय, नहि
ऐ मे छै' उपभाषा
लिखने छी चाणक्य विषय छै'
काव्य एगारह सर्ग
जानि भेलहुँ पुलकितचित
बुझि कै जगता विद्वद्वर्ग
किन्तु एखन अस्वस्थ रही हम
तथा आँखिमे पीड़ा
पढ़ब निषेध वैद्य कयने छथि
लिखितहु होइछ ब्रीड़ा।
तें श्रीयुक्त 'सुमन' जी अथवा
अमर जीक ओहिठाम
अपन काव्य लै जाइ अहाँ
से हमर विचार ललाम।
करइत रहू मातृभाषा—
सेवा अपने सदिकाल
एकरे माध्यमसँ मिथिला केर
बनि सकैत छै भाल।
स्नेहाधीन — 'श्रीमधुप'

प्राय: मैथिली-साहित्य-संसारमे ई तथ्य सर्व विदित अछि जे 'कविचूड़ामणि मधुप ककरो चिट्ठीओ लिखैत छलथिन तँ से पद्यमे। परन्तु बन्धुजीकेँ मधुपजीक संग ई पहिले पहिल पत्राचारक अवसर भेटल छलनि तेँ पद्यमे अपन पत्रक उत्तर पाबि आश्चर्य चकित भऽ उठलाह। एहन व्यक्तिसँ यथाशीघ्र साक्षात्कार करबाक अभिलाषा हिनका उत्कण्ठित कऽ देलकनि। हाथमे पत्र लेनहि हहायल-फुहायल अपन अभिन्न मित्र श्री 'नवेन्दु' जीक ओहिठाम गेलाह आ हुनका अपना संग मधुपजीसँ भेट करबाक हेतु कोर्थु चलबाक आग्रह करऽ लगलथिन। समय बनाय दूनू मित्र मधुपजीक दर्शनार्थ चलि पड़लाह। ओहियात्रा क विवरण दैत श्री 'नवेन्दु' जी अपन संस्मरणमे आगाँ लिखने छथि—

''यथासमय हम दूनू गोटे बखरीसँ विदा भेलहुँ। (ध्यातव्य जे ई यात्रा पदयात्रा छल) रातिमे अपन गाम 'बेक' मे रहलहुँ आ दोसर दिन खा-पी कऽ दूनू गोटे साँझ पड़ैत कोर्थु पहुँचल हुँ। ओहि दिन मधुपजीकेँ रेडियो स्टेशन, पटनामे प्रोग्राम छलनि तेँ दोसर दिन भेट भेल। साँझमे 'चौकड़ी' जमल। मधुपजी अपन कैकटा सरस एवं श्लेषयुक्त रचना सुनौलनि। राधा (**विरह**) काव्यक सेहो किछु अंश सभ सुनलहुँ। अनन्तर दीनजी ओजस्वी स्वरमे '**चाणक्य**'क कैकटा सर्ग सुना गेलाह। श्रोतासभ मन्त्रमुग्ध छलाह। करीब एक-दू

बजे रातिधरि चाणक्य पर विचार-विमर्श चलैत रहल। मधुपजी बड़प्रसन्न भेलाह। हमरा सभक प्रसन्नताक तँ कोनो आरे-पार नहि छल।

आब चाणक्यक प्रकाशनक हेतु प्रयास आरम्भभेल। एहि प्रसंगमे कतेको प्रकाशक सभसँ सम्पर्क स्थापित कयलगेल, किन्तु सफलता नहि भेटलनि। किछु दिनक बाद दीनजी दरभंगा गेलाह। शीत लहरीक भीषण प्रकोप छल, किन्तु अमरजीसँ भेट करबालै कटिबद्ध दीनजी मिश्रटोला पहुंचि हुनकासँ भेट कयलनि। एहि भेट प्रसंगक बड़ मार्मिक एवं सजीव वर्णन चाणक्यक भूमिकामे अमरजी कयने छथि।''

जे क्यौ **चाणक्य** महाकाव्य नहि पढ़ने छथि ताहि महानुभाव कैं उपरि चर्चित भूमिकाक अंश देखबाक उत्सुकता होइनि से सम्भव। यद्यपि ओहि अंश मे किछु एहनो प्रसंग अछि, जकर उल्लेखसँ कदाचित हमर वैयक्तिक आढ्यताक भान ने होइनि से विचारि हम बहुत तारतम्यमे पड़ले रहल हुँ। अन्तत: निष्कर्ष पर अयलहुँ जे एहि अध्यायक शीर्षक कैं सार्थक बनयबाक हेतु ओहू अंश कैं उद्धृत करब अप्रासंगिक नहि बूझल जायत। ओ एहिरूपेँ अछि—

''१९६१ क दिसम्बर मास। आठ बजैत राति, शीत लहरीक भयंकर प्रकोप। घरक भूरभार, खिड़की-फड़की मुनने, केबाड़ बन्द कयने बैसल छलहुँ भीतरमे (संयोगवश) दू. चारि साहित्यिक बन्धु बैसल, बीच मे 'स्टोव' जरैत तपबा क हेतु। चाह बनिचुकल छल, तावत बाहर सँ ध्वनि आयल— अमरजी क' डरा ऐह छऽनि ? यद्यपि शोर कयनिहार चारि-पाँच हाक मारने छलाह किन्तु गप्पक रस आ 'स्टोव'क सनसनाहटिमे हुनक हाक पहुँचि नहि पबैत छलनि।

बैसल लोकमे कनेक भूकम्प भेल, ओहि डोलम डोलमे जनिका सबसँ लग पड़लनि से केबाड़ीक बिलैया फोलि देलथिन। एक व्यक्ति प्रवेश कयलनि। पाँचफीट किछु इंच नाम, गोर-नार देह, बेस ठाढ़ नाक, घनगर भहुँ, छगरा आँखि, खुटिआयल दाढ़ी, अस्वस्थताक धूमिल रेखा एकदम (मुखमण्डलपर) स्पष्ट।

— हम मुंगेर जिला रहैत छी, 'दुनही' एकटा वस्ती छैक, ओही ठाम हमर जन्म भेल अछि। मिडिल स्कूलमे शिक्षक छी। हम अपन उपनाम 'बन्धु' रखने छी आ पिता हमर नाम दीनानाथ पाठक रखने छथि। वस्तुत: एहि दृष्टिएँ हम दीन अनाथ छी। हम अपनेक एक गोट हिन्दी कविता आर्यावर्त्तमे पढ़ने छलहुँ— ''भले न कोई रहे हमारा, मैं तो अपना हो जाता हूँ'' एही भावनाक अनुसार हमहू सभक बन्धु बनल छी। सुनलहुँ जे अपने मातृभाषाक एकान्त सेवी छी, तेँ हम चल अयलहुँ अपनेक दर्शनार्थ। हमहू टूटल-फूटळ शब्दमे एक ऐतिहासिक पुरुष पर एकटा काव्य लिखलहुँ अछि। अपने जखन समय दी, किछु अंश अपने कैं सुनाबी। जँ काजक होइक तँ एकरा प्रकाशमे अयबाक युक्ति धरा देल जाय, नहि जँ प्रकाशित करबाक योग्य नहि होइक तँ निरर्थक राखि कोन फल ?

हम हुनक सब कथन मन्त्रमुग्ध भेल सुनैत रहलहुँ। ओ अपन असमर्थता, एहि महाकाव्यक प्रकाशनार्थ कयल उद्योग एवं कठिनता सभक वर्णन क्रममे कतेक संस्कृतक

श्लोक, हिन्दी-मैथिली कविता सभक पंक्ति 'कोट' करैत चल गेलाह तकर संख्या नहि आँकल जा सकैछ। हम क़हलियनि— मैथिलीमे पाठकक बड़ अभाव अछि। साहित्यकार पाठक सेहो आङुरेपर गनल छथि। हमरा अहाँसन पाठकसँ परिचय प्राप्त कऽबड़ प्रसन्नता अछि।..... अच्छा ई कहूजे ई खण्ड काव्य यिक की प्रबन्ध काव्य ?

— हम एगारह सर्गमे लिखने छी, अनेक छन्दक प्रयोग भेलैक अछि। नायक थिकाह चाणक्य। तखन एकरा जे कहल जाइक।

पहिने हम घवड़यलहुँ जे एगारह सर्गक महाकाव्य सुनबाक समय बाहर करब कतेक कठिन होयत। ताहूमे एकदम अपरिचित, एकदम नवीन लेखक बूझि पड़ैत छथि, अकर-दकर दड़रने होयताह। अस्तु, एखन स्थालीपुलाक न्यायेन सुनिलैत छियनि सन्तोषार्थ। तखन बादमे देखल जयलैक। एत्तबा मनहिमन सोचि, कहलियनि-अच्छा, समय बादमे बाहर करब, एखन दू-चारि पद सुनाउ।

वन्धुजी उत्सुक (उत्साहित) होइत कहलनि-पहिने आरम्भे सूनि लेल जाय—

रवि सम दीप्त, अनल सम दाहक, पविसम कठिन कठोर,
कोनो गूढ़तम भावमग्न चिन्तासँ आत्मविभोर,
अंग अंग सँ चूबय टप-टप सुदृढ़ आत्म-विश्वास,
पाटलिपुत्रक जनपथ पर के घूमि रहल गत-त्रास ?
चन्दन-चर्चित भाल, कृष्णतन नेत्रक रक्तिम कान्ति,
उतरि रहल की मनुज-सिंहमे क्रान्ति अधिष्ठित क्रान्ति ?
कटितट शुभ्रवसनसँ बान्हल छोट अडौछा एक,
आयल की संयमक छाँहमे त्यागक संग विवेक ?

ओज गुण सम्पन्न पदक प्रवाह सुनि चकित रहि गेलहुँ। मनक भ्रान्ति मेटा गेल जे कोनो अखरकट्टूक पालाँ पड़िगेल छी।''

एहन एहन प्रतिभावान कतोक व्यक्तित्व अतीतक गर्तमे पड़ल रहि गेलह। समाजक उदासीनता, परिस्थितिक विवशता, पत्र-पत्रिकाक अल्पता, प्रकाशक क अभाव, प्रकाशनक असुविधा तथा स्वयं आर्थिक असमर्थता आदि अनेक कारणें बन्धु 'जी कैं अपन छपल रचना देखबाक सुयोग नहि लगलनि।

ओहि प्रथम दर्शनक समयमे ओहि व्यक्तिक मलिन आकृति आ ताहि भीतर नुकायल एहन उदीप्त प्रतिभा देखि विस्मित रहि गेल छलहुँ। मनमे भेल जे एहन एहन प्रतिभाशाली प्रच्छन्न साधक जखन मैथिलीक सेवामे संलग्न छथि तँ निश्चित रूपेँ एकर प्रगति कैं रोकि रखबाक सामर्थ्य आब ककरोमे नहि छैक। एहन समुज्ज्वल प्रतिभा सम्पन्न महाकविसँ परिचय प्राप्त कऽ वस्तुत: हृदयमे प्रसन्नता उमड़ि आयल छल। चाणक्यक किछु पद सुनयबाक हेतु कहने छलियनि, परन्तु एकर पद-योजना, भाव-सौन्दर्य आ हुनक उपस्थापनक कलासँ अभिभूत रहलाक कारणँ किछु सर्ग सुनि गेलहुँ तैयो अतृप्ति वनले रहल। तावत केन्द्रीय समाचारक समय दिस एक मित्र ध्यान आकृष्ट कयलनि तँ अन्तमे

हुनका पाण्डुलिपि एतहि छोड़ि देबाक आग्रह करैत कहलियनि जे एकरा सम्पूर्ण कैं हम पढ़िलेब तखन जेना जे भऽ सकत से हम अवश्य करब। ओहि रात्रि विश्राम कऽ पाण्डुलिपि छोड़ि चल गेलाह।

दोसर भेट बन्धुजीसँ चारिमास पर अर्थात् मार्च १९६२ इ. मे भेल। एहिबेर शरीरसँ आरो खिन्न, श्रान्त तथा उदास देखबामे अयलाह। हमरा तावत धरि सम्पूर्ण पाण्डुलिपि पढ़बाक अवकाश नहि भेटि सकल छल, तैं हम कनेक सकुचयलहुँ, कनेक लजयलहुँ। कुशल-समाचार पुछलियनि आ चाहक आग्रह कयलियनि। ताहिपर कहलनि-नहि, हमरा डाक्टर सब चाह मना कयने छथि। पेटक गड़बड़ीक कारणैं शारीरिक दुर्बलता दिनानु दिन बढ़ले गेल अछि। गाम घरक डाक्टर वैद्य लोकनिसँ बरोबरि दवाइ कराइए रहल छलहुँ, ओ सब कोनो पैघ डाक्टरसँ देखयबाक परामर्श देलनि। पैघ डाक्टरक अर्थ 'बड़की गायक बड़का पन्हान' से सामर्थ्य नहि अछि, तैं अस्पतालमे देखयबाक उद्देश्य सँ अयलहुँ अछि।

आर्थिक अभावक कारणैं अस्पतालमे भर्ती भेलाह। जुलाइ धरि पड़ल रहलाह। यद्यपि डाक्टर लोकनि अपना भरि पूर्ण तत्परतासँ चिकित्सा करैत छलथिन, परन्तु सुधारक कोनो विशेष लक्षण नहि परिलक्षित होइत छलनि।

एक दिन विद्यालयमे वर्ग मे पढ़ा रहल छलहुँ। एक अतिवृद्ध व्यक्ति हमर पुछारि करैत आर्तभेल विद्यालय पहुँचलाह। घंटी समाप्ति पर छलैक। घंटी बजला पर स्टाफ रूम अयलहुँ, चपरासी हमर परिचय देलकनि, ओ हमरा देखिते दहो बहो नोरसँ जनहाइत कहलनि हम दीनानाथ पाठकक पिता छियनि, डाक्टर कहलनि अछि जे हिनका केन्सर भऽगेल छनि, एकर दबाइ एहि ठाम सम्भव नहि छैक। हम सन्न रहि गेलहु। यद्यपि एखनो एकर चिकित्सा सुलभ नहि भेलैक अछि, १९६२ मे तँ एतबो विकास नहि भेल छलैक। दरभंगा अस्पताल सँ निराश भऽगाम चलगेलाह। ओहि समयमे रोसड़ामे एक प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र चलैत छलैक। किछु लोक ओहि केन्द्रमे जयबाक परामर्श देलकनि। अक्टूबर १९६२ इ. मे हमरा बन्धुजीक हाथक लिखल एक पोस्टकार्ड भेटल।

— सम्प्रति प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र रोसड़ामे इलाज करा रहल छी, किछु सुधार बुझना जाइत अछि। मुदा आब हम अपना जीवनसँ निराश भऽ चुकल छी। चाणक्यक पाण्डुलिपि अपने लग अछि। हमरा परिवारमे क्यो सचढ़ लोक नहि अछि। पिता अतिबृद्ध, अनुज नाबालिग धीया-पूता लेध-गेध, पत्नी अशिक्षिता। दच्छिनमे रहलाक कारणैं हमरा क्षेत्र मे मैथिली भाषा-साहित्यक प्रति कोनो विशेष चेतना जाग्रत नहि भेल छैका हमर एक मात्र अन्तरंग मित्र श्रीचन्द्रकान्तझा 'नवेन्दु' छथि। हमरा अटूट विश्वास अछि जे हमर पाण्डुलिपि उचित ठाम पर सुरक्षित अछि। हम रही वा नहि रही, ओ कृति अवश्य रहत। यदि ई ग्रह काटि गेलहुँ तँ पुनः दर्शनार्थ पहुँचब। एखन एतबे।

अपनेक एक अभागल 'बन्धु'

दीन+अनाथ ।

उक्त पत्रक उत्तरमे बोल-भरोस, सान्त्वनाक किछु शब्द लिखि पठौलियनि। तकर

बाद बहुतो दिन धरि कोनो सूचना नहि भेटल। २२ जनवरी १९६४ इ. कँ एकटा पोस्ट कार्ड भेटल। उपरमे लिखल छल दुनही, बहुत उत्सुकतासँ पढ़ि गेलहुँ। लिखने रहयि बन्धुजीक अनुज श्रीशिवनाथ पाठक। पत्रमेछल— भाइ दू वर्ष पहिने चलि वैसलाह परिवार अनाथ भऽगेल। पत्र पढ़ि बन्धुजील लिखल ओ पाँती सब— ''हमरा अटूट विश्वास अछि जे हमर पाण्डु लिपि उचित ठाम पर सुरक्षित अछि। हम रही वा नहि रही, ओ कृति अवश्य रहत'' हमरा माथपर सतत चोट मारैत रहल। जेना तेना चाणक्य महाकाव्य प्रकाशित भऽ सकल। यदि '**वैदेही**' मासिक पत्रिकाक संस्थापक प्रो. श्री कृष्णकान्त मिश्र तथा मिथिला प्रकाशनक कर्त्ताधर्त्ता स्व. सूर्यनारायणझाक सहयोगक उल्लेख नहि कयल जाय तँ से कृतघ्रता होयत। प्रो. श्रीकृष्णकान्तमिश्र वैदेहीक महाकाव्य विशेषांकक रूपमे तथा सूर्यनारायणझा पुस्तकक आकारमे एकरा प्रकाशित करबामे सहयोग देलनि। अन्तत: अप्रैल १९६५ मे ई सुधीपाठकक समक्ष उपस्थित भऽ सकल।

प्रकाशित भेलाक बाद ई महाकाव्य ततेक चर्चित भेल जे १९६७ इ. क साहित्य अकादेमी क पुरस्कार हेतु प्रतियोगितामे एकर नाम गेल छलैक, परन्तु पत्रिकामे प्रकाशित भेल रहलाक कारणेँ तकनीकी आपत्ति लगा एकरा पुरस्कारसँ वंचित राखल गेल। ओहि वर्ष मैथिलीक कोनो पुस्तक साहित्य अकादेमी पुरस्कार नहि पाबि सकल।

ओही वर्ष दरभंगा गोशाला सोसाइटीक प्रबन्धक बाबू धर्मलाल सिंहक इच्छा तथा प. वैजूमिश्रक प्रेरणासँ '**मिथिला सांस्कृतिक प्रतिष्ठान**' नामक एक संस्था स्थापित भेल छल जे मैथिलीक कोनो उत्कृष्ट ग्रन्थपर प्रति वर्ष पाँच सय टाकाक पुरस्कार घोषित कयने छल। निर्णायक मण्डल प्रथम पुरस्कार हेतु एही पुस्तकक चयन कयलक। बन्धुजीक पिता आबि ओ पुरस्कार ग्रहण कयने छलथिन।

खण्ड काव्य

प्रसंगत: बन्धुजी द्वारा '**मैथिली**' नामक एक खण्ड काव्यक रचना भेल छल, जकर चर्चामात्र अछि, ओकर किछुओ अंश कतहु उपलब्ध नहि भेल, किन्तु हिनकासँ पहिल भेटक अवसर पर जहिया १९६१ इ. क दिसम्बर क शीत-लहरीक भीषण प्रकोप रहितो हमरा आवास पर आयल रहथि, तहिया ओहन विकट समयमे ओतेक रातिकऽ कोनो अतिथिकेँ जाय देब उचित नहि मानि बहुत दुराग्रह कयला पर रहब स्वीकार कयलनि। जे रुख-सुख बनल छल से भोजन करौलियनि। भोजन करैत काल उक्त खण्डकाव्यक विषय-वस्तुक प्रसंग जे किछु चर्चा कयने छलाह, जहाँधरि धूमिल होइत स्मृति पर बल देला पर मन पड़ैत अछि से निम्नांकित रूपेँ छल।

आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' रचित '**अर्चना**' नामक कविता संग्रहमे '**मैथिली वन्दना**' शीर्षक कवितामे एक छन्द छनि—

पतिक बात नहि राखि पिताघर सती जरलि छथि,
उतरि शिवक शिरसँ गंगा समुचिते गललि छथि,
माधव संग न जाय राधिका विरह-बरलि छथि,
काली हर-उर चरण राखि जी दाबि दगलि छथि,
किए बनलि वन वासिनी पति-पद-रेणु सुता हमर ?
ज्वालामुखी न थीक ई, ज्वलित प्रश्न धरणी उरक।

धरणी उरक यैह ज्वलित प्रश्न बन्धुजी कँ उक्त खण्डकाव्य रचनाक प्रेरणा केन्द्र छलनि। लंका विजयक बाद सीताक अग्नि परीक्षा लऽराम अयोध्या आबि सिंहासनारूढ़ भेलाह। तत्पश्चात् लोकापवादक भयसँ तथा अपन प्रजानुरंजक व्यक्तित्व कँ निखारबाक हेतु राम निरपराध सीता कँ वनवास दऽ देलथिन। सीताक नैहर मिथिलाक लोक कँ एहि हेतु रामक प्रति आक्रोश भेलैक। 'सीताक जन्म वियोगँ गेल, दुख छाड़ि सुख कहियो ने भेल' उक्त खण्ड काव्यक कथावस्तु छल।

महाकाव्य

अन्यान्य सब दृष्टिएँ दीनानाथ पाठक 'बन्धु' कँ अभागले मानल जयतनि, कारण जे प्रकृति द्वारा हिनका जन्मजात अनुपम प्रतिभा-सम्पन्न बनाओल गेलनि, किन्तु जन्म देलकनि एक विपन्न परिवारमे जतय ओहि प्रतिभाकँ पूर्णरूपेँ विकसित होयबाक साधन अनुपलब्ध छलैक। जन्म लेलनि माता-पिताक ज्येष्ठ सन्तानक रूपमे, परन्तु ज्येष्ठ सन्तान क जे कर्त्तव्य थिकैक माता-पिताक बार्द्धक्यमे सेवा शुश्रूषा करब, देहान्त भेलापर हुनका लेकनिक श्राद्धादि कर्म कऽ मातृ-पितृ-ऋणसँ मुक्ति प्राप्त करब, से सुअवसर दुर्भाग्य हिनका नहि प्राप्त करय देलकनि। तीन पुत्र ओ दू पुत्रीक जनक बनलाह, परन्तु सब सन्तति कँ समुचित शिक्षा-दीक्षा-सम्पन्न बनाय कर्मक्षेत्रमे प्रवेश करयबासँ वंचिते रहि जाय पड़लनि। सर्वथा विपरीत परिस्थिति सँ संघर्ष करैत विद्या अर्जन कयलनि, परन्तु ओकर पूर्ण रूपसँ उपयोग करबाक समय नहि भेटि सकलनि। कुल मिलाय अति सीमित चौंतीस-पैंतीस वर्ष मात्र विधाता आयु देलथिन, आधा होश सम्हारिते बितलनि, अन्तिम दू-तीन वर्ष रोगसँ लड़िते रहलाह। बाइसम वर्षक अवस्थामे कृतविद्य भऽ कर्मक्षेत्रमे प्रवेश कयलनि तँ पारिवारिक चिन्ता, दरिद्रतासँ संघर्षमे लागल रहितो एक उपन्यास, दू गोट नाटक, एकटा खण्ड काव्य आ सर्वोपरि चाणक्य सन सफल महाकाव्यक प्रणयन कऽ गेलाह ई सब हुनक अप्रतिम प्रतिभा, दृढ़ इच्छा-शक्ति अथक परिश्रम तथा आन्तरिक ऊर्जस्विताक प्रक्रिये मानल जायत, परन्तु प्रकाशन क मनोरथ लेनहि अकाल काल कवलित भऽ जायब दुर्भाग्य छोड़ि आन की कहल जा सकैछ ?

परन्तु ई सब होइतो एक दृष्टिएँ परम सौभाग्यशाली रहथि। ओना तँ जेना पिताकँ अपन सबसन्तान प्रिय रहिते छैक तहिना कोनो रचनाकार कँ अपन सब रचना प्रिय रहैत

छैक, तथापि कोनो विशेष संस्कार युक्त पुत्र पर बेसी भरोस रहैत छैक तहिना बन्धु जीकेँ एहि महाकाव्य पर बेसी भरोस छलनि तेँ पत्रमे लिखने रहथि— हम रही वा नहि रही, ई कृति हमर अवश्य रहत। हुनक ई आत्मविश्वास फलीभूत भेलनि। उक्ति छैक 'एकश्चन्द्रः तमोहन्ति न च तारा सहस्रशः' से थिकनि वीर रसात्मक हिनक महाकाव्य '**चाणक्य**'। यद्यपि एकर प्रकाशन हिनक देहान्तक २ वर्ष ५ मासक बाद भऽ सकलनि, परन्तु पुस्तकाकार भऽ विद्वद् वर्गक मध्य एक चर्चा क विषय बनि गेलनि। एकर उत्कृष्टताकेँ देखैत विश्वविद्यालयक पाठ्य ग्रन्थमे स्थान सेहो एकरा भेटि गेलैक। एहिपर शोध प्रबन्ध सेहो उपस्थित भऽ गेल, किछु विद्वान साहित्य अकादेमोक पुरस्कार प्राप्त करबाक योग्य मानि एकर नाम अनुशंसितो कयलथिन। एतेक होइतो प्रकाशक वर्गक चक्र-चालिसँ हिनका धीया-पूताकेँ एहिसँ समुचित अर्थ लाभ नहि भऽसकलनि, अथवा साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत नहि भऽ सकलनि तकरा अप्रत्यक्ष रूपेँ भाग्यक विडम्बने कहल जा सकैछ। अस्तु।

आधुनिक युगमे लिखल जाइत महाकाव्यकेँ महाकाव्यक प्राचीन लक्षण-ग्रन्थक कसौटी पर कसब उचित नहि प्रतीत होइछ। कारण कालक्रमे परिवर्तित होइत युगक अनुरूप संशोधन-सम्मार्जन, परिवर्तन-परिवर्द्धन सब वस्तुमे सदासँ होइत रहलैक अछि आ होइत रहतैक। अन्यान्य विषय केँ छोड़ि महाकाव्यहिक प्रसंग देखल जाय तँ सब सँ पहिने **अग्निपुराण**मे महाकाव्यक लक्षण निरूपित कयल गेल। परन्तु परवर्त्ती आचार्य दण्डी अपन **काव्यादर्श** नामक ग्रन्थमे **अग्निपुराण**मे निरूपित लक्षणमे अनेक संशोधन कयलनि। पूर्व निरूपित लक्षणक संग किछु समानता रखैत किछु ताहिसँ भिन्न नवीनताक समावेश सेहो कयने छथि। आचार्य दण्डीक मतेँ **अग्निपुराण**मे उल्लिखित शक्वरी, अतिशक्वरी, जगती, अतिजगती आदि छन्दक रहब अनिवार्य नहि मानल गेल। तहिना आरब्धं संस्कृतेन यत् अर्थात् संस्कृते भाषामे आरम्भ हो, तकरो दण्डी नहि मानलनि। आचार्य विश्वनाथ दण्डीओ सँ अधिक विकसित लक्षण-निरूपण कयलनि। कहबाक तात्पर्य ई जे युग जहिना-जहिना बदलैत जाइत छैक लक्षणमे तहिना संशोधनो आवश्यके भेल जाइत छैक।

यद्यपि भौतिक साधन जहिना बढ़ल गेल अछि, भौतिकता मानव-जीवनकेँ तहिना-तहिना अधिकसँ अधिक व्यस्त बनौने जा रहल अछि। तेँ बहुतोक मत छनि जे एहन व्यस्त जीवनमे लोककेँ आब साक्षण कहाँ छैक जे महाकाव्य पढ़ि सकत, रचना करबाक तँ चर्चे व्यर्थ, परन्तु एहि आशंकाक पृष्ठ भूमिमे महाकाव्यक रचना बन्द भऽ जायत तेहन कल्पना नहि करबाक चाही, जकर उदाहरण यैह महाकाव्य थिक।

ओना कविता तँ आब छन्दकेँ के कहय सब बन्धनसँ मुक्त भऽगेल अछि, एतेक धरिजे कवितामे किछु अर्थो रहब आवश्यक नहि रहि गेल अछि। तथापि हमर व्यक्तिगत मान्यता अछि जे वनस्पति केहनो विशुद्ध रहौ, घृतक समता कथमपि नहि कऽसंकैत अछि। वर्तमान समयमे जतवा संशोधन वा संक्षिप्तीकरण लक्षणमे भेल अछि तकरा दृष्टिमे रखैत एहि महाकाव्य पर विचार कयला उत्तर एकर महाकाव्यत्व सर्वथा सिद्ध बुझबाक चाही।

महाकाव्य क आरम्भ मंगला चरणसँ होयवाक चाही। किछु प्राध्यापक समीक्षकक मत छनि जे बन्धुजी प्रगतिशीलताक परम समर्थक छलाह, तेँ अपन महाकाव्यमे ओ मंगलाचरण नहि कयने छथि। परन्तु ई मान्यता सर्वथा भ्रमात्मक अछि। कारण, एहि महाकाव्यक नायक एक ब्राह्मण थिकाह। ब्राह्मणक प्रथम उपास्य देवता सूर्य थिकथिन। सूर्यकेँ एहि जगतक अत्मा कहल गेलनि अछि। **सूर्योपनिषद**मे स्पष्ट रूपेँ वर्णित अछि :—

> **"त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि, त्वमेव प्रत्यक्षं विष्णुरसि, त्वमेव प्रत्यक्षं रुद्रोऽसि, त्वमेव प्रत्यक्षमृगसि, त्वमेव प्रत्यक्षं यजुरसि, त्वमेव प्रत्यक्षं सामासि, त्वमेव प्रत्यक्षमथर्वासि, त्वमेव सर्वं छन्दोऽसि।"**

अर्थात् अही प्रत्यक्ष ब्रह्मा-विष्णु-रुद्र थिकहुँ, अही प्रत्यक्ष ऋक्, यजु साम ओ अथर्व वेद थिकहुँ, अही सम्पूर्ण वेद स्वरूप थिकहुँ। एतबे नहि, सम्पूर्ण सृष्टिक कारण ओ उद्गम स्थल सूर्ये केँ कहल गेलनि अछि—

> **"आदित्याद् वायुर्जायते, आदित्याद् भूमिर्जायते, आदित्यादापो जायन्ते, आदित्याज्ज्योति र्जायते, आदित्याद् व्योमदिशो जायन्ते"।**

अर्थात् आदित्ये अर्थात् सूर्येसँ वायु, भूमि, जल, ज्योति, आकाश, दिशा आदि सभक उत्पत्ति होइत अछि। ब्राह्मण एही सूर्यक शक्ति गायत्रीमन्त्रक जप ओ उपासना द्वारा अपन शक्ति ओ तेजक विस्तार करैत अयलाह अछि। अत: बन्धुजी 'रवि' शब्दक प्रथम प्रयोग करैत 'रविसम दीप्त' कहि एहि महाकाव्यक आरम्भ कयने छथि।

सूर्य आकाश स्थित ज्योतिपुंज थिकाह, एहि पृथ्वी पर हिनक प्रतिनिधित्व अग्नि करैत छथिन। यज्ञमे आहुति द्वारा हवनीय द्रव्य जाहि कोनो देवताक हेतु समर्पित कयल जाइत छनि से अग्निए द्वारा ताहि ताहि देवता केँ प्राप्त कराओल जाइत छनि। यज्ञक आवश्यकता एहि हेतु निरूपित कयल गेल जे **'यज्ञाद् भवतिपर्यन्य: पर्यन्यादन्न सम्भव:'** अन्नविना पृथ्वी पर जीवन धारण कयने रहब असम्भव अछि। अत: ब्राह्मण यज्ञ कर्म मे अग्रणी रहलाह अछि। जेँ हेतु धरती पर प्रत्यक्ष देवता अग्नि थिकाह तेँ बन्धुजी मंगलाचरणक रूपमे दोसर अग्निक नाम लेलनि अछि''अनल सम दाहक' एताबता **'रवि समदीप्त अनल सम दाहक'** ई पदक अंश एहि महाकाव्यक मंगलाचरण थिक। किछु गोटेकेँ ई भ्रम छनिजे अपन परम्परासँ चल अबैत आचरणक प्रतिकूल आचरण करब प्रगतिशीलता थिक। परन्तु प्रगतिशीलता वस्तुत: विचारमे होइत छैक आचरणमे नहि। परम्परासँ चल अबैत मार्गकेँ अपन गहन-मनन-चिन्तनसँ आरो प्रशस्त करब प्रगतिशीलता थिकैक। एहि महाकाव्यक नायक एहने प्रगतिशीलताक चिन्तक छलाह। तेँ एहन प्रगतिशील व्यक्तित्वक अधिस्वामीकेँ अपन महाकाव्यक नायक बनौलनि, ताहि दृष्टिएँ बन्धुजी प्रगतिशील मानल ओ बूझल जयताह।

इतिहास प्रसिद्ध पुरुष चाणक्य एकर नायक थिकाह जे अनेक गुण विभूषित छथि। ई नीति शास्त्र वेत्ते नहि, नीतिशस्त्रक प्रणेता सेहो छथि तहिना कूटनीति विशेषज्ञ छथि,

कुशल अर्थशास्त्री संगहि अर्थशास्त्रक एक प्रसिद्ध रचयिता सेहो छथि। त्यागी तेहने छथि जे अपन पाण्डित्य ओ कूटनीतिक प्रतिभाक सम्पूर्ण उपयोग कऽ छिन्न-भिन्न भेल, मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्न रखनि हार सब राजा लोकनि कैं एक झण्डातर आनि, एक महान ओ सुदृढ़ संगठन ठाढ़ कऽ ताहि बलैं अत्याचारी नन्द वंशकैं समूल नाश कऽ चन्द्रगुप्त सदृश मेधावी निष्ठावान युवककैं संस्कार सम्पन्न बनाय ओकरा मगध साम्राज्यक सिंहासन पर आरूढ़ कऽ अपन प्रतिज्ञा पूर्णकयलनि, समस्त आर्यावर्त्तकैं संगठित कऽ एक सुदृढ़ साम्राज्यक न्यों कैं सुस्थिर बनाय, अपने अपन शेष जीवन अपन मातृभूमि मिथिलामे बितयबाक हेतु बिदा भऽ गेलाह। कवि चाणक्यक मुहें कहबैत छथि—

'भेल प्रतिज्ञा पूर्ण हमर ओ
फूजल शिख़ा बन्है छी,
ई कहि बान्हि शिखा निज
कहलनि-सत्ये आब चलै'छी।

एतेक विशाल साम्राज्य प्रतिष्ठापित कयलनि, परन्तु तज्जनित ऐश्वर्य-सुख-प्राप्तिक लेशमात्र लोभ मनमे नहि रखलनि। ई छलनि हुनकर त्याग, आ एहन त्यागी पुरुष कैं, एहन विशिष्ट व्यक्तित्व कैं अपन महाकाव्यक नायक बनाय कवि अपना देशक तथा इतिहासक प्रति अपन उदात्त भावनाक परिचय देने छथि।

एक खास विशेषता एहि महाकाव्यक ई अछि जे कवि चाणक्यक मातृभूमि मिथिलाकैं कहलनि अछि, परन्तु ताहि हेतु कोनो ऐतिहासिक साक्ष्य नहि दऽ मिथिलामे चल अबैत चाणक्यक प्रसंग किंवदन्तीए कैं आधार मानने छथि। अन्यान्यो विद्वान चाणक्य कैं मैथिल कहैत अयलाह अछि। हमरा तर्कमे एक दू विषय अबैत अछि। प्रसंगतः तकरा अभिव्यक्त कऽदेब असमीचीन नहि प्रतीत होइछ।

वीसम ख्रीष्ट शताब्दीक प्रथम दशक धरि मैथिल ब्राह्मणक शिक्षित परिवार मे जन्म लेनिहार नेनाकैं चाणक्य नीति दर्पणक कतोक श्लोक कण्ठस्थ करयबाक परिपाटी प्रचलित छलैक। एखनहु साधारणो साक्षर बृद्ध लोकनिक कण्ठमे कहबी वा लोकोक्ति जकाँ अवसर-प्रसरपर उक्त पुस्तकक श्लोकक एक-आध अंशक प्रयोग होइत देखल-सुनल जा सकैछ। यथा—

असन्तुष्टा द्विजा नष्टाः।
लालयेत् पंच वर्षाणि दश वर्षाणि ताड़येत्।
विश्वासो नैव कर्त्तव्यः।
एकश्चन्द्रः तमो हन्ति।
विषकुम्भं पयो मुखम्।
स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि। इत्यादि

एहिसँ एहन प्रतीत होइत अछि जे एहि ठामक जन जीवनमे चाणक्य नीति दर्पणक किछु विशेष प्रवेश रहलैक अछि, से अकारण तँ नहि भऽ सकैत छैक। तँ ई अनुमान

लगयबामे विशेष सहायक बुझना जाइत अछि जे चाणक्य मिथिलेमे जन्म लेने होथि। नीतिग्रन्थ तँ अनेक छैक, अन्यान्यक एतेक प्रचार किएक ने भेलैक ?

दोसर 'शिखा नहि बान्हब' यैह प्रतिज्ञा किएक कयलनि। साधारणत: मान्यता तँ यैह अछि जे नन्दक राज दरबारसँ जेँ शिखा पकड़ि हिनका बाहर कऽ देने छलनि तेँ जाहि शिखाकेँ एहि अनाचारी नृशंस शासकक एक क्षुद्र सेवक छूलक अछि ताहि राजवंशक समूलोच्छेद जाधरि नहि कऽ लेब ताधरि एहिमे बन्धन नहि देब ई प्रतिज्ञा कयलनि। कवि सेहो एहने वर्णन कयने छथि— दरबारमे अपन एक सेवक केँ कहैत छैक—

> **''बाहर कर दुष्टक शिखा खीचि**
> **गौरव पापीकेर दिअऽ पीचि**
> **झड़िजाय नीचकेर बढ़लशान**
> **किछु राजशक्ति केर होइक ज्ञान।''** (तृतीय सर्ग)

आ एही कारणेँ प्रतिज्ञा करैत छथि—

> **''बनिजैत शिखा ज्वलनक ज्वाला,**
> **ई शत सहस्रश: फणिमाला,**
> **जावत नहि नन्दक करत नाश**
> **सम्पूर्ण वंश परिकर समास**
> **तावत बन्धनमे नहि आओत**
> **विश्राम शान्ति कौखन पाओत।''** (तृ-सर्ग)

परन्तु ईहोतँ तर्क कयल जा सकैछ जे चाणक्य जेँ मैथिल छलाह तेँ एहि ठामक आचारक अनुसार पंच देवोपासक कर्मकाण्डी छल होयताह। कर्मकाण्डक कृत्यमे शिखाक बन्धनक की महत्त्व छैक से प्राय: धीरेन्द्र उपाध्यायक प्रसंग अधिक लोक केँ ज्ञाते अछि जे अपन खुनाओल पोखरिक चातुश्चरण यज्ञक प्रथम चरणमे शिखामे बन्धन नहि रहलाक कारणेँ हुनका सूर्यक स्तम्भन करय पड़ल छलनि। एतावता ई अनुमान कयल जा सकैछ जे शिखामे बन्धन नहि देबाक तात्पर्य ई रहल होइनि जे जावत नंद वंशक नाश नहि कऽ लेब ताबत धरि अन्यान्यक कोन कथा देव-पितृ कर्म पर्यन्त नहि करब। एहूसँ हिनक मैथिल होयबाक आभास होइत अछि। अस्तु।

एहि महाकाव्यक दोसर विशेषता एकर वीर रसात्मकता थिकैक। एहि ग्रन्थकेँ लोकप्रियता प्राप्त करबामे ईहो एक प्रमुख तत्त्व रहलैक। प्रत्यक्ष रूपमे एहिठाम अप्रासंगिक रहितो अप्रत्यक्ष रूपमे प्रासंगिक छैक तेँ एहि विषयक चर्चा करब उपयुक्त प्रतीत भेल।

आचार्य रमानाथझा कतहु एक ठाम कहने छथिन जे मैथिली ततेक मधुर भाषा अछि जे एहिमे वीर रसक अभिव्यक्ति कठिन छैक। ओ तँ मैथिलीक मधुरिमाक दृष्टिएँ प्रशंसात्मके बात कहलथिन। परन्तु एक दृष्टिएँ भाषाक असामर्थ्य सेहो एहिसँ व्यंजित होइत अछि। तँ एकरे प्रतिक्रियामे कवि चूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' 'ताण्डव' नामसँ शिवा बावनी जकाँ बावन पदक एक पुस्तक क रचना कयलनि। एतबा सत्य जे ओहिमे

कृत्रिमताक आभास अवश्य पाठक कैं होइत छनि।

दोसर प्रयास अखिल भारतीय लेखक सम्मेलनक अधिवेशनक अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन, जे चीनी आक्रमण क समय १९६२ ई. मे भेल छलैक, ताहिमे कविलोकनि कैं विशेष रूपैं वीर रसात्मके कविता लऽ कऽ अयबाक आग्रह कयल गेल छलनि। ओहिमे पठित कविता सभक '**विजयशंख**' नामसँ संकलन सेहो प्रकाशित भेल अछि। परन्तु एहि महाकाव्यमे सहज भावैं ओज गुण तथा वीर रसक जे स्थायिभाव उत्साह थिकैक से गुम्फित भेल अछि ताहिसँ स्पष्ट रूपैं प्रतिभासित होइत अछि जे मैथिलीओ भाषामे वीर रसक परिपाक सहज रूपैं होयबामे कोनो बाधा नहि छैक।

डॉ. श्री शिवशंकरझा 'कान्त' अपन '**मैथिली महाकाव्यक उद्भव ओ विकास**' नामक शोध प्रबन्धमे चाणक्य महाकाव्यक अंगी रस शान्त कैं माननलि अछि[1]। परन्तु शान्त रसक स्थायिभाव थिक निर्वेद जे पुरुषार्थ चतुष्टयमे परिगणित परम पुरुषार्थ मोक्षमे उपयोगी होइत अछि। मोक्षक तात्पर्य होइत अछि सांसारिक इन्द्रियजन्य समस्त सुखोपभोगक आकाक्षासँ मनक निवृत्ति, ताहि अवस्थाकैं निर्वेद कहल जाइत अछि, यथा—

न यत्र दुःखं, न सुखं, न चिन्ता,
न राग द्वेषौ न च काचिदिच्छा।
रसः स शान्तः कथितः मुनीन्द्रैः
सर्वेषु भावेषु शमः प्रधानः॥

अर्थात् जतय ने दुख ने सुख ने चिन्ता, ने ककरो प्रति राग ने ककरो प्रति द्वेष ने कोनो वस्तुक इच्छा शेष होइक, सब स्थितिमे शम भाव प्रधान होइक ताहि स्थितिकैं निर्वेद बुझ बाक चाही से शान्त रस थिक अर्थात् विशुद्ध वैराग्य, परन्तु इष्टक वियोगजन्य, अनिष्टक प्राप्तिजन्य श्मशानक अनुभवजन्य वैराग्य क्षणिक होइत अछि, ओहन निर्वेद व्यभिचारी भाव थिक, ओ स्थायिभाव नहि भऽ सकैत अछि। अतः गोविन्द ठाकुर काव्य प्रदीप मे कहैत छथि—

'शमो निरीहावस्थायामानन्दः स्वात्म विश्रामात्'

अर्थात् तृष्णासँ रहित अवस्थामे आत्मविश्राम जन्य आनन्दे निर्वेद थिक जे शान्त रसक स्थायिभाव होइत अछि[2]।

बुझना जाइत अछि डॉ. कान्तजी किछु निम्नांकित उद्धरणकैं आधार मानि प्रायः एहि महाकाव्यक अंगी रस 'शान्तरस' कैं कहि देलनि अछि। यथा चाणक्यक ई उक्ति—

''भेल प्रतिज्ञापूर्ण हमर ओ फूजल शिखा बन्है' छी

---

१. मैथिली महाकाव्यक उद्भवओ विकास पृ. १२४
२. 'रस परिचय'— डॉ. श्री किशोरनाथ झा, पृ. १०४

ई कहि, बान्हि शिखा निज सत्ये, कहलनि— आब चलै छी।''

तदुत्तर—

''छथि आगाँ गुरुदेव शान्त मन, पाछाँ नगर निवासी,
बढ़ल जा रहल जन समाज अछि गुरु कें करय प्रवासी
बूझि पड़ैछ शान्तरस संगहि बहल करुण रसधार
किंवा श्वेत सरोरुह चौदिस बरिसल शुभ्र तुषार''

परन्तु गंभीरतासँ विचार कयला उत्तर शुद्ध वैराग्यक स्थिति नहि बनैत अछि। अभिधामे 'बूझि पड़ैछ शान्त रस' कहलासँ सिद्ध नहि होइछ। एतय विचारणीय विषय अछि जे जखन चाणक्य कहैत छथिन—

''बेस आब हम चली, हर्ष सँ शासन-सूत्र सम्हारू
निष्कण्टक बनि, शत्रुपक्षसँ जनहित काज विचारू''

गुरु क एहन कहला पर—

''हाथ जोड़ि, अतिशय विनीत बनि बजला मगध नियन्ता
बनल सुखी छी हम सब, मनमे रहल न आब सिहन्ता''

एतबे नहि, अपितु

''यद्यपि भेल असम्भव सम्भव, नाश भेल अन्यायी,
स्थापित भेल मगधमे शासन प्रजा वर्ग सुखदायी,
विस्तृत हैत एतहिसँ जगमे नूतन ज्योति-वितान
किन्तु विश्व चाहय अपनेसँ किछु उपकार महान।''

एखन धरि जे किछु भेल अछि से एहि देशक हेतु, विश्वक हेतु अभंगुर चिरस्थायी वस्तुक अपेक्षा अपनेसँ छैक। अत: —

''एहन वस्तु भेटय अपनेसँ हो जन-जन-कल्याण''

मगधराज चन्द्रगुप्तक एहि निवेदन पर गुरुवर चाणक्यक उत्तर सँ ई सिद्ध होइत अछि जे सम्प्रति हुनका वैराग्य नहि भेलनि अछि। कहैत छथिन— **'सुनु मगधेश! एखन छी किछु हम क्लान्त-भ्रान्त तन-मन सँ'**

अत: — **''किछु दिन करब शान्त मिथिलामे शान्तिपूर्ण विश्राम''**

तकरबाद हुनकामनमे विश्वक विषम अर्थ— व्यवस्थाकेँ सुव्यवस्थित करबाक चिन्ताछनि। कारण जन-कल्याण-राज्यक स्थापना तखने सम्भव होयत जखन न्याय, सम्मान, सुरक्षा ओ निर्भयता समान रूपें सबकेँ प्राप्त होइक। एहि सभक घनिष्ठ सम्बन्ध अर्थ व्यवस्थाक संग छैक। अत: आगाँ कहैत छथिन—

''राजनीतिओ अर्थ शास्त्रमे अछि सम्बन्ध परस्पर,
अर्थ-व्यवस्था-अंकुश-वश नृप होइछ नित्य जन-हितकर,
घूमि रहल ई वस्तु चित्तमे कय किछु अनुसन्धान
सोचि रहल छी, करब लोक हित अर्थ शास्त्र निर्माण''

एहन मन: स्थिति कैं पूर्ण निर्वेद कोना कहल जायत। एतावता सिद्ध होइत अछि जे 'शान्त' एकर अंगीरस नहि थिक। हमरा जनैत एकर अंगीरस 'वीर' थिक। वीर शब्दक व्युत्पत्ति थिक विरुद्धान् राति हन्ति इति वीर:। अर्थात् विरोधीक विनाश करबाक भाव थिक वीर तथा एकर स्थायिभाव 'उत्साह' कैं मानल गेल अछि। उत्साह भावक उत्कर्ष विधायक ओज होइत अछि। आदिसँ अन्त धरि कवि तकर निर्वाह सहज भावेँ करबामे पूर्णतया सफल देखना जाइत छथि। एहि संग प्रसाद गुण समन्वित रहलाक कारणेँ सामान्यो पाठकक मन एहिमे रमि जाइत छनि। एकर लोक प्रियताक एक कारण ईहो थिक।

अलंकार योजना : अलम् अव्यय पर्याप्त अर्थक घोतक थिक, एहि अलम् पूर्वक कृ धातुसँ घञ् प्रत्यय कयलापर अलंकार शब्द निष्पन्न होइत अछि अलं क्रियते अनेन एहू व्युत्पत्ति सँ अलंकार शब्दक तात्पर्य थिक काव्य कैं सुशोभित करब। आलंकारिक आचार्य भामह तँ एतेक धरि कहि गेलाह जे '**नकान्तमपि निर्भूषं विभाति वनिताननम्**'। अत: कवि लोकनि काव्य रचना क्रममे अलंकार कैं आवश्यक अंग नहिओ बुझैत एकर उपेक्षा नहि कयलनि अछि। तँ बन्धुजी एकर उपेक्षा किएक करितथि ? परन्तु हिनका काव्यमे सायास अलंकार प्रयोग करबाक प्रवृत्ति देखबा मे नहि अबैत अछि, प्रत्युत स्वाभाविक रूपेँ, सहज भावेँ, प्रवाह क्रममे अलंकार अवैत गेल अछि। यथा आरम्भेक पद देखल जाय— उपमालंकार जतय छिड़िआयल भेटैछ—

'रवि समदीप्त, अनल समदाहक, पविसम कठिन कठोर'

उपमेय लुप्तोपमाक पथार लागल अछि। उपमान क्रमश: रवि, अनल ओ पविसम समान धर्म वाचक शब्द तथा दीप्त, दाहक ओ कठोर समान धर्म वाचक शब्द उक्त अछि केवल उपमेय जे एहि काव्यक नायक थिकाह से अनुल्लिखित अछि।

एहिना उत्प्रेक्षाक पतियानी लगा देल गेल अछि—

'चन्दन चर्चित भाल, कृष्णतन, नेत्रक रक्तिम कान्ति,
उतरि रहल की मनुज-सिंहमे क्रान्ति अधिष्ठित शान्ति ?''

पुन: —

कटितट शुभ्रवसनसँ बान्हल छोट अडैछा एक,
आयल की संयम क छाँहमे त्यागक संग विवेक ?

विरोधाभासक एक विलक्षण उदाहरण यथा—

''जन कोलाहल पूर्ण नगरमे रहितहु अतिशय शान्त
अन्तरतम अछि मथित विलोड़ित सदिखन, किन्तु अशान्त।''

एकावली अलंकारक एक उदाहरण यथा—

''सरमे कमल, कमलपर मधुकर, मधुकरमे कलमद गुंजार
तरुमे दल, दल पर कोकिल कुल, कोकिल कुल कलनाद उचार।''

एतय सम्पूर्णमे एकावली आ मध्यमे अनुप्रासक विविध प्रभेद गुम्फित अछि। सन्देहक एहिना एक उदाहरण यथा—

की अदृष्ट लिखने अछि राष्ट्रक पतन अवश्यम्भावि
पहुँचि गेल की नाशक तट पर आर्यसभ्यता आबि ?

अनुप्रासक छटा तँ डेग डेग पर सम्पूर्ण काव्यमे देखबामे अबैत अछि।

एगारह सर्गमे विभाजित एहि महाकाव्यक सर्गानुक्रमसँ निम्नांकित रूपेँ कथावस्तु वर्णित भेल अछि।

प्रथम सर्ग : यद्यपि ब्राह्मण क हेतु यजन-याजन, अध्ययन अध्यापन द्वारा समाज कँ संस्कारित ओ सुसंगठित तथा राष्ट्र कँ सुदृढ़ रखबाक कर्त्तव्य-भार शास्त्र द्वारा निर्धारित छैक, किन्तु ई निर्धारण सामान्य स्थितिक हेतु थिक, विशेष स्थिति उत्पन्न भेलापर— 'छोड़ि कमण्डलु, अजिनदर्भ, व्रत-पूजन विविध विधान, देश, धर्म हित स्वजीवन दान हेतु तत्पर रहय सेहो ब्राह्मणक कर्त्तव्य भऽ जाइत छनि। सम्प्रति विदेशी एहि पावन आर्यभूमि कँ पद-दलित करबाक उद्देश्यसँ श्रावणक घटा जकाँ सैन्यदल साजि उमड़ल आबि रहल अछि आ एहि ठामक राजागण भिन्न-भिन्न राज्य मे विखण्डित, अपन-अपन राज्यसीमामे समटायल, सांसारिक भोग-विलासमे निमग्न, वाह्य आक्रमण सँ अपरिचित, अनवधान पड़ल छथि। एही स्थिति कँ ई पदांश— **'कोनो गूढ़तम भाव-मग्न चिन्तासँ आत्मविभोर'** ध्वनित करैत अछि। एहन विषम स्थितिमे समाजक मुखमण्डल स्वरूप ब्राह्मण कोना चुप बैसल रहि सकैत छथि। 'शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्र चिन्ता प्रवर्त्तते' अत: ब्राह्मण केवल शास्त्रानुशीलने धरि नहि सीमित रहलाह अछि, प्रत्युत अग्रत: सकलं शास्त्रं पृष्ठत: सशरं धनु:'।

कविक कहैत छथि—

''देखय जग अक्षम नहि ब्राह्मण कोनो काजक हेतु,
खसल अनीति-गर्त्तसँ उठबय नभमे राष्ट्रक केतु।''

उदाहरणार्थ कवि भारतीय इतहिासक पृष्ट उनटबैत, ताहिपर दृष्टि निक्षेप करैत छथि—

''परशुराम वनि अन्यायी शासक गणकेर संहार
करइछ तर्पण शोणित जल सँ भू कँ बारम्बार''

ई तँ रामकँ अवतार लेबासँ पहिलुक घटना थिक। त्रेतायुगक बादोमे—

''कुरुक्षेत्रमे शस्त्र ग्रहण कय युद्ध भयानक ठानि,
रुण्ड-मुण्डसँ पाटि दैत अछि धर्म-हीनता जानि।''

कारण जे ब्राह्मणक चित्तमे विश्वजनीन भावना रहैत छनि। **'सर्वेभवन्तु सुखिन: सर्वेसन्तु निरामया:'** एहन कामनासँ अनुप्राणित ब्राह्मण यदि भ्रान्तिवश समाज कँ विपथगामी होइत देखैत अछि तँ कर्त्तव्य बुद्धिएँ—

''उनेटि सकैछ सकल जगती कँ जौं देखय किछु भ्रान्ति''

अत: चाणक्य प्रतिज्ञा करैत छथि— ''छुअब न दर्भ, पढ़ब नहि कौखन वेदक मन्त्र ललाम'' तथा राजनीतिक क्षेत्रमे उतरि जाइत छथि।

दोसर सर्ग : चाणक्य देशपर सम्भावित संकट कैं देखैत ताहिसँ त्राण हेतु एक सुदृढ़ संगठन ठाढ़ करबाक विचार सँ जन कोलाहल पूर्ण राजधानीसँ बाहर, ग्राम्य जनपदहु सँ कने हटिकऽ एकान्त स्थानमे एक आश्रम स्थापित कयने छथि जे— ''हरित श्याम तरुराजि विराजित पुष्पित पुष्प अनेक प्रकार, मलयागत प्रिय मधुर गन्धवह'' सँ आमोदित ओ सुरभित भऽ रहल छनि। ओहिठाम भूमिपर कतहु स्रुव राखल अछि तँ कतहु कुश, गाछक झुकल डारि सब पर ब्रह्मचारी लोकनिक कौपीन सब सुखा रहल अछि। 'कुण्डवेदिका बनल स्वच्छ अति' जे तपस्वीक आश्रमक छवि प्रमाणित करैत अछि, किन्तु 'मिझायल हवनक आगि, तकर कारण ई अछि जें चित्त गेल ओझरौटहि लागि'। आश्रममे स्वाश्रयी गृहस्थ जकाँ स्वावलम्वित जीवन बितयबाक सम्पूर्ण व्यवस्था अछि। देशक भविष्यक इतहिास कोन रूपक लिखल जायत, गुरु चाणक्य ताहि चिन्तनमे मग्न छथि। भविष्य क निर्माणमे ई गुरुकुल सन्नद्ध अछि। व्यूह रचनाक हेतु समस्त शिष्य समुदायकेँ एकत्र कऽ गुरु दिशा निर्देश करैत छथिन—

पंच तत्त्व निर्मित एहि सृष्टिमे प्रकृति सर्वश्रेष्ठ प्राणीक रूपमे मनुष्यक रचना अवश्य कयलक, परन्तु विडम्बना ई रहल जे आकारमे समान रहितहु स्वभावमे ई द्विविध भऽगेल। एक वर्ग जे क्षमा, करुणा, सत्य, अहिंसा, शान्ति, सच्छील, विश्वबन्धुत्व, प्रेम, त्याग तथा जीवमात्रक कल्याण भावनाकेँ अपनौलक तकरा मानव संज्ञा देल गेलैक आ दोसरवर्ग जे एहि सबसँ कोसो दूर रहैत दयाहीन, खल, क्रोधी, पापी, पर-पीड़क, प्रवंचक मिथ्यावादी बनल हिंसा, लोभ, अन्याय एही सबकेँ परम पुरुषार्थ मानि कुकर्मक मार्ग अपनौलक से दानव नामसँ जानल जाय लागल। एहि दूनू वर्गमे सदा सर्वदासँ संघर्ष होइत आबि रहल अछि। एही संघर्षक गर्भसँ राजनीतिक जन्म भेल अछि। कविक कथन छनि—

''दनुज मनुज मे युग युग चलइत द्वन्द्वात्मक संघर्ष कराल
बनल सृष्टिमे नव्य रूपसँ राजनीति केर क्षेत्र विशाल''

सम्प्रति आर्यावर्तक दुर्भाग्य ई छैकजे एहि ठामक शासक गण मौगियाह भऽगेल अछि। ईर्ष्या ओ दम्भक वशीभूत ई सब—

'क्यौ ककरो नहि सुनय ने मानय अछि बुझैत सबकेँ सब ओछ'

महानन्द महान स्वेच्छाचारी अछि। नीतिशास्त्रमे शुक्रक समान पटु तथा कुशल शकटारकेँ ओ अन्धकूपमे बन्द कऽ देने छनि। पुरु ओ पांचालक शासक यद्यपि धीर-वीर तथा बलवान छथि, परन्तु मिथ्याभिमानवश भविष्यक प्रति सावधान नहि छथि। तेसर गान्धार नरेश बार्द्धक्य कारणेँ अशक्त, तेजहीन आ बलहीन भऽगेल छथि। किछु छिटफुट गणराज्य सब अछिओ, परन्तु ओ सब एखन शैशवावस्थामे अछि। तेँ सम्प्रति भारतक मुख्य द्वार अरक्षित सन बुझबामे अबैत अछि। ओमहरसँ विश्व विजयक संकल्प लऽ सिकन्दर नृपतिगणक दर्पकेँ दलित करैत बढ़ल आबि रहल अछि। एहन स्थितिमे—

''आवश्यक अछि एखन राष्ट्र शासकगण एक सूत्र आबद्ध,
एक मन्त्रबल एक यन्त्रबल, एक तन्त्रबल बनि सन्नद्ध

पारस्परिक ईर्ष्या, कटुता, मनो मालिन्य, पूर्वाग्रह आदिकें बिसरि कऽ आर्यवीर गण सम्पूर्ण राष्ट्रक रक्षाक भार अपना माथपर उठालेथि। अत: हे मालव वीर ! अहाँ लोकनि गान्धारक राजनीति पर ध्यान राखी, ई सम्भव थिक जे युवराज राष्ट्र विरुद्ध आचरण करय। हे मागध वीरगण ! अहाँ लोकनि शत्रुसैन्यक गतिविधिपर दृष्टि रखैत यदि अनुकूल अवसर भेटि पावय तँ भेद नीतिक अवलम्बन करी। किछु मालव ओ किछु क्षुद्रक लोकनि अपना-अपना क्षेत्रमे जाय जनमतकेँ जगयबामे लागि जाथु जाहिसँ अवसर पर जनताक विश्वास प्राप्त भऽ सकय। पाटलिपुत्र तथा पांचालक भार हम उठा लैत छी। यदि हम सब सबकेँ एक सूत्रमे बान्हि सकी तँ राष्ट्रक पुनरुद्वार भऽ सकत। एकरा हमर अनुनय बुझू, अनुशासन मानू अथवा आदेश मानि ली। एहि प्रकारेँ दोसर सर्ग समाप्त होइत अछि।

तेसर सर्ग : एहि सर्गमे मगधक शासक महानन्दक राजसभाक घटना वर्णित अछि। रास-रंगमे सतत डूबल रहनिहार, परम विलासी राजा नन्दक सभाभवन सब तरहेँ सुसज्जित छैक, जाहि ठाम

'आश्रित जनगण सब ठाम ठाम, बैसल अछि कयने टीम टाम।'

एतय 'टीम टाम कयने बैसल' पदमे कवि सहज रूपेँ सभासद सभक सम्पूर्ण चित्रकेँ केहन विस्तृत फलक पर अंकित कयने छथि से संवेदनशील पाठकक हेतु स्वयं ऊह्य।

किछु उच्चासन लागल अछि, जाहि पर मन्त्रिवर्ग— ''मिथ्या गौरवसँ ओर-बोर, ऐंठैत अंग केर पोर-पोर'' विराजमान छथि। मध्यभाग मे मणि खचित, मूल्यवान् हीरक जटित सिंहासन लागल अछि, जकर दूनू काल चँवर धारण कयने दू गोट युवती— 'कन्दर्पक धनुवत् भहुँ सँवारि, अछि ठाढ़ि मनहि मन किछु निआरि'। एहि पदमे बड़े चतुरतासँ कवि अन्तर्गर्भित शृंगारक झलक देखा देने छथि।

सभक आगूमे आसव परिपूरित चानीक सुराहीक संग छोट छोट मधुपान-पात्र (चषक) सजाओल राखल छैक जकरा देखि देखि सब सभासदक— **'अछि जीभ सभक चटपट, पीबाक हेतु करइत छटपट'**। एहने स्थितिमे सभाभवनमे राजा नन्दक प्रवेश होइत छैक। गणिकाक आसरासँ ओ सिंहासन पर विराजमान होइत अछि। तुरत वीणा, मृदंग, करताल संग विविध शास्त्रीय संगीतक स्वर लहरी गुंजायमान भऽ उठैत अछि आ ताहि बीच— **'बहि रहल सुरा-सारिताक धार'** ताहि संग **''एहि सुरा-सुन्दरकि सत्तामे, खसि पड़ल वीरता खत्तामे''**। जाहि ठामक एहन शासक हो ततय— **''जनताक दुर्दशा देखत के ? राष्ट्रक मर्यादा लेखत के ?''** कविक सर्वथा यथार्थ उक्ति मानल जायत। एहने एहने उक्ति एहि काव्यकें प्रसाद गुणसँ समन्वित करैत अछि।

राजसभाक उपरि वर्णित वातावरणेमे हठात् घनगर्जनाक समान एक गम्भीर स्वर मुखरित होइत अछि— 'आर्यगण सावधान' ! आ चतुर्दिक प्रतिध्वनित भऽ उठैत अछि, ताहि संगहि—

''सुनि, वाद्यक यन्त्र मेहाय गेल, पैरक चालन पथराय गेल,
मस्ती मदिराकेर भागि गेल, क्यौ क्यौ सूतलसँ जागि गेल।''

सब आँखि निड़ार निड़ारि चकुआइत देखैत अछि— अवधूत रूपमे ठाढ़ एक ब्राह्मण दिस। अर्धनिमीलित नयनसँ तकैत राजा नन्द अपन एक मन्त्रीकेँ अचानक आयल एहि व्यक्तिसँ परिचय पुछबाक आदेश दैत छैक। परन्तु पुछबाक प्रतीक्षा बिनु कयनहि चाणक्य निम्नांकित किछु वाक्यमे अपन परिचय दैत छथिन—

'हम आर्यक शोणित-बिन्दु एक'। 'देशक इतिहासक लेखक छी।'
'गुरुतम गत-गौरव प्रेरक छी'। 'हम छी मनुसुत नय-पथ-द्रष्टा।'
'हम विविध शास्त्र अध्येता छी'। 'हम छी गुरुकुल कुल-परिपालक।'
'हम कालक गतिविधि दर्शक छी, हम एक विप्र संघर्षक छी।'

तदुत्तर, अपन अयबाक उद्देश्य स्पष्ट करैत कहय लगैत छथिन— हम एक कटु सत्य कहबालै अयलहुँ अछि। से ई थिक जे सम्प्रति विदेशी आक्रान्ता देशक मर्यादाकेँ पद-दलित करैत आगाँ बढ़ल चल आबि रहल अछि, तँ एखन राग-रंगमे डूबल रहबाक समय नहि, प्रत्युत राष्ट्रक मर्यादाकेँ अक्षुण्ण रखबाक हेतु पारस्परिक द्वेषादि भावनाकेँ हृदयसँ दूर राखि—

''छाडू कंकण, करवाल लिअऽ, तन्त्री तजि, कर तरुआरि लिअऽ।
गूंजय स्वराष्ट्रमे एक गान— 'जय आर्यभूमि जय महाप्राण'।''

चाणक्यक उद्‌बोधन वाक्य सुनि सभासद सब स्तब्ध रहि गेल। कविक शब्दमे— **'चित्तीभुतिआयल बीच डगर, सब खेल हेड़ायल बनल सुघर।'** अन्तत: साहस बटोरि अमात्य बाजल- ई अनधिकार चेष्टा किएक कऽ रहल छह ? यदि अपना प्राणक मोह होअह तँ—

'उदरम्भर ब्राह्मण कतहु जाह, यजमानक घरमे भोजखाह
नहि राजनीति केर अधिकारी, भिक्षुक, पूजक कुश-तिलधारी।'

अपन अमात्यक कथन केर समर्थन करैत राजा नन्द चाणक्यकेँ सभासँ बाहर चल जयबाक आदेश दैत छनि। ताहि पर चाणक्य अपन वाग्वाणसँ बिद्ध करैत कहैत छथिन— नामर्द खड्ग कोना उठा सकैत अछि ? अहाँ लोकनि चूरू भरि पानिमे डूबि मरू'। शतश: कटु वाक्य सँ आहत राजा नन्द क्रोधान्ध भेल प्रहरीकेँ कहैत छैक जे टीक पकड़ि एहि उद्दण्डकेँ लऽ जाकऽ कारागारमे बन्द कऽ दे। आरक्षी सब आबि चाणक्यक टीक पकड़ि कारागार दिस धक्का दैत लऽ जाइत छनि तखने चाणक्य ई प्रतिज्ञा करैत छथि— ''**बनि जैत शिखा ज्वलनक ज्वाला**..... जाबत नहि नन्दक नाश करत, ताबत नहि बन्धनमे आओत''। सहसा किछु अज्ञात युवकक दल टूटि पड़ैत अछि आ आरक्षी सबकेँ क्षत-विक्षत करैत चाणक्यक संग चलि दैत अछि।

ओनातँ बन्धुजी अन्यान्यो सर्गमे लोकोक्ति ओ वाग्धारा क सटीक प्रयोग कयने छथि, तत्रापि एहिसर्गमे एकर प्रयोग प्रचुरता सँ होइत देखआमे अबैत अछि। यथा—

'एहि ठाम न धूर्तक गलय दालि'
'आयल घर लक्ष्मी छाड़त के ?'

'जे खुनत मूढ़ से खसत खाधि'
'अपमानक शोणित पीबिपीबि'
'भूकय कुकुरो धऽ अपन मोख'
'सजमनि पर सितुआ होइछ चोख'
'चित्ती भुति आयल बीच डगर'
'घरमे शिकार खेलय बिलाड़'
'नहि गाल बजाबह बेसुमार'
'छठिहारक दूध मोन पड़तै'
'अपनहि मुँह मिट्ठू छह बनैत'
नाशक अवसर जखने अबैछ, विपरीत बुद्धि तखने बनैछ'

(विनाशकाले विपरीत बुद्धिः) एहिना 'वाद्य यन्त्रक मेहायब, पैर पथरायब, स्वर लयक गति-यति भुतिआयाब' आदि भाषा सौष्ठवकेँ दर्शबैत अछि।

चारिम सर्ग : एहि सर्गमे प्रच्छन्न रूप मे मगध साम्राज्यक भावी सम्राट तथा द्रोणाचार्यक सबसँ प्रिय शिष्य अर्जुन जकाँ चाणक्यक पट्टशिष्य चन्द्रगुप्तक अवतरण भेल अछि। कवि प्रकृतिक मनोहारिणी सुषमाक वर्णन करैत प्राकृतिक वस्तु पर मानवीय स्वभावक आरोपण द्वारा अपन शैल्पिक कौशलकेँ जगजियार कऽ देलनि अछि।

दिनकर अस्ताचल शिखर पर चढ़ल प्राकृतिक सौन्दर्यकेँ निहारि-निहारि आनन्द विभोर भऽ रहल छथि। प्रियतम सँ मिलनक समयकेँ सन्निकट अबैत जानि सन्ध्या रानी लाल पटोर पहिरने हुलसि रहलि छथि। पक्षी समुदाय चारू दिशामे अपन अपन नीड़मे आबि प्रियतम सूर्यक विदा कालमे बिदागान गाबि रहल अछि। तरुराजि कर-पल्लवसँ अपन-अपन मनोगत भाव इंगित कऽ रहल अछि। बाटमे सम्भावित बिघ्नबाधाक निवारणार्थ मधुकरगण स्वस्ति वाचन कऽ रहल अछि। विकसित पुष्प सबसँ सौरभ समेटि-समेटि पावन पवन प्रेम सन्देश बाँटि रहल अछि। अनुरागेँ मातलि गगन किशोरी भरि-भरि झोरी अवीर गुलाल वसुधाक विस्तृत आङनमे उड़ा रहलि अछि। कल्पना पुरान रहितहु ओकरा एक नवीन रूप दैत कवि सन्ध्या कालक नैसर्गिक शोभाक वर्णन द्वारा अपन प्रकृति-वर्णनक पटुता देखा देलनि अछि।

घटनाक्रम एहि रूपेँ आगाँ बढ़ैत अछि— झेलम नदीक तट पर एक उद्यानक निकट सिकन्दरक सैन्य-शिविर अवस्थित छैक। ताहिमे ओकर सेनापति सैल्युकस सेना ओ परिवार संग डेरा खसौने अछि। उद्यानक मध्यमे एक मनोरम सरोवर अछि। ताहि सरोवरक छटा एहि प्रकारेँ वर्णित भेल अछि—

जलमे किरण, किरणमे लाली, लाली मे सौन्दर्य अपार।'

सरमे कमल, कमलपर मधुकर, मधुकर मे कलमद गुंजार।' एहि ठाम एकावली अलंकारक एक शृंखला ठाढ़ भऽ गेल अछि। पुनः सरोवरमे जलचर तथा सरोवरक परिसरमे थलचर पक्षी सभक नामोल्लेख करैत छथि—

'जल कुक्कुट, कलहंस सदल बल, सारस सुखी संहित परिवार'।
'हरियल, नीलकण्ठ, ल लबोगी, खंजनि, कोकिल, फलक मयूर
शुक, मैना, तितली, बटेर गण अति प्रसन्नतासँ अछि चूर।'
'बुलबुल चुलबुल मचा रहल अछि, उड़य कपोत बनल निर्द्वन्द्व।''

उद्यानक परिसर मे विविध प्रकारक फल सभक वृक्ष लागल अछि।
यथा—

''आम, कदम्ब, पनसफल, जामुन, लीची, नेवो, मधुर लताम,
सीताफल, अननास, शरीफा, दाख, छुहारा, तूति, वदाम,
नारिकेल, केरा, समतोला, किसमिस, काजू ओ जम्बीर
सेब, अनार, वेदाना सुन्दर फड़ल नासपाती, अंजीर।''

ई तँ फल सभक नामकोष। एहिना उद्यानमे अनेक क्यारी बनल अछि, ताहि सबमे कतेक प्रकारक फूल लगाओल अछि तकरो विवरण— इला, लवंगलता, केसरलता, चम्पा, चमेली, चन्द्रकला, जूही, वेली, मालती, गुलाब, मोतिया, मौलिश्री, रजनीगन्धा, गेना, गुलदाबरी, अपराजिता इत्यादि विविध फल-फूलक नामकेँ छन्दमे सजाय देने छथि जे कविक बहुज्ञता केँ प्रकट करैत अछि।

एहन सुरम्य उद्यानमे सेनापति सैल्युकसक कन्या 'हेलना' अपन सखी-सहचरीक संग क्रीड़ा-विनोदमे निमग्न छलि। अकस्मात आमक डारिकेँ झमारैत एक वानर बीचमे कूदि पड़ैत अछि, जकरा देखि किशोरी दलमे हड़कम्प मचि जाइत अछि, कतेको एक संग चीत्कार कऽ उठैत अछि तँ कतेको चिचिआइते ओतयसँ पड़ाइत अछि। गहना-गुरियासँ लदलि किशोरी सभक एक संग पड़यलासँ गहना सब झनझना उठैत छैक। एक दिस ओहि चीत्कारक ध्वनि ताहिमे मिश्रित होइत गहना सभक झंझनाहटि, एहि स्थितिक वर्णन कविक शब्दमे द्रष्टव्य—

''मचौलक ओ ततेक घमलौड़ि भेल अति करुण पूर्ण चीत्कार
भीत भूषणो अधिक भय त्रस्त सुनौलक भयसूचक झंकार।''

एहन आतंक पूर्ण वातावरणमे अलक्षित रूपेँ अकस्मात एक दिशासँ एक वाण सनसनाइत आयल जकर सनसनाहटिए सँ भयभीत भऽ ओ वानर जी-जान लऽ पड़ायल। तदनन्तर बाण चलौनिहार युवक प्रकट होइत अछि, जकरा देखि किशोरी सब चकित-विस्मित भेल एक दोसरक मुँह ताकऽ लगैत अछि। युवक अन्यमनस्क भावेँ ई बाजि— अहाँ लोकनि आब निर्भय छी तेँ अपन-अपन घर जा सकैत छी— ओतयसँ चलि पड़ैत अछि।

किशोरी सबमे जे तारुण्यक देहलीपर पैर राखि चुकलि छलि, मनक उद्वेगकेँ ओ नहि रोकि सकलि तँ साहस बटोरि युवक सँ परिचय पुछैत बाजलि जे अहाँ सेनापति सेल्युकसक प्राण-प्रिया पुत्रीक भयसँ रक्षा कयलियनि अछि तेँ हमरा सभक अभिनन्दनीय बनि गेलहुँ अछि। तेँ दू-चारि दिन अतिथि बनि एतय रहू तथा सेनापति सँ मनवांछित इनाम

प्राप्त करू, यदि कोनो उच्च पद पयबाक आकांक्षी होइ तँ हम सब सम्मानित तरुआरि देया दऽ सकैत छी।

युवक सेनापतिक पुत्रीक नाम सुनि, जखन उत्सुकता वश झुण्ड दिस आँखि उठा तकैत अछि तँ सखी सबसँ घेड़ाइलि, आत्म-विभोर सन भेलि, निर्निमेष दृष्टिएँ अपना दिस तकैत एक नवोढ़ा पर दृष्टि पड़लैक। कविक शब्दमे ताहि स्थितिक वर्णन—

'दुहुक लड़िगेल आँखिसँ आँखि
बनल अनजाने आत्म-विभोर,
अंकुरित भेल हृदयमे बीज
प्रेम सरवरमे उठल हिलोर,

जखने दू गोटेमे लड़ाइ होइत छैक तँ कोनो एक पक्षक विजय आ दोसर पक्षक पराजय स्वाभाविके थिकैक, परन्तु कविक चातुर्य देखू—

"युद्धकेर निर्णय किछु नहि भेल, उभय दल बनल रहल बलबान,
दुहूकेर हारि, दुहूकेर जीत, बन्हायल दुहू हृदय अनजान।"

हठात् दूरसँ सोर करबाक हाक सुनाइ पड़ैत अछि— हेलना दाइ ! कहाँ छह, साँझ पड़ि गेलै आ तोरा आङन अयबाक बेर नहि भेलह अछि ? स्वर हेलनाक मायक छल। किशोरी सब अपना सभक बीच अपरिचित युवकक उपस्थितिसँ घबड़ा उठलि आ युवककेँ जल्दी कोनो कुंजमे नुका जाय कहलक। परन्तु युवक गुरुवरक सिद्धान्तकेँ सहेजने वीरत्व बोझिल होइत डेगकेँ आगाँ बढ़बैत झूमैत ओहि ठामसँ चलि पड़ल। एहि प्रकारेँ चारिम सर्ग समाप्त होइत अछि।

एहि सर्गक अनुशीलन सँ निम्नांकित किछु तथ्य देखवामे अबैछ। प्रथमत: संस्कृत लक्षण ग्रन्थक अनुसार जतय महाकाव्यमे प्रकृति वर्णन आवश्यक कहल गेल अछि ततय अंगीरसक संग संग अंग रूपमे अन्यान्यो रसक समावेश अपेक्षित मानल गेल अछि। एहि सर्गमे प्रकृति-वर्णन प्रचुरता सँ भेले अछि संगहि भयानक, अद्भुत ओ शृंगार रसक संस्पर्श सेहो दृष्टिगोचर होइछ।

'भय' भयानक रसक स्थायिभाव थिक। जाहि वस्तुसँ भय उत्पन्न होइत अछि से आलम्बन थिक तथा ओकर क्रिया-कलाप उद्दीपनक काज करैत छैक। उद्यानमे किशोरी सब उन्मुक्त भावेँ खेलाय रहलि अछि कि—

"अचानक आमक डारि झमोड़ि बीचमे कूदल वानर एक
"डरेँ हड़कम्प बालिका वृन्द, रहल ककरो नहि बुद्धि विवेक।
मचौलक ओ ततेक घमलौड़ि भेल अति करुणपूर्ण चीत्कार"

एहि ठाम वानर भेल आलम्बन, ओकर घमलौड़ि मचायब भेल उद्दीपन, कम्प अनुभाव. चीत्कारक संग रक्षाक हेतु त्राहि-त्राहि करब व्यभिचारी भेल। एहिरूपेँ भयानक रसक पूर्ण परिपाक परिलक्षित होइत अछि।

अद्भुत रसक स्थायीभाव होइत अछि 'विस्मय'। जाहि वस्तु सँ विस्मय होइत अछि

से ओकर विभाव भेल, स्तम्भ, रोमांच, संभ्रम आदि अनुभाव तथा सम्भ्रान्ति, हर्ष आदि व्यभिचारी होइत अछि। आतंकमय बातावरणमे—

''उचित अवसर पर तैखन एक अलक्षित आबि कतहुसँ वाण
भयार्दित जन केर रक्षा हेतु भगौलक वानर कैं अनजान।''

आकस्मिक रूपें अलक्षित वाणक आयब आ ताहिसँ भयोत्पादक वानरक पड़ायब विस्मय उत्पन्न करैत अछि। ई वाण कतय सँ आयल, कोना आयल, के चलौलक आदि वितर्क ओ सम्भ्रमक स्थिति मे—

''प्रकट कय तखन स्वकीय स्वरूप व्यवस्थित त्राता सम गुणवान''

जकरा उपस्थित देखि—

''अचम्भित भेल किशोरी वृन्द होय नहि मुँहसँ शब्द बहार''

स्पष्टत: अद्‌भुत रसक सृष्टि करैत अछि। अपिच

वाण चलाय भयसँ मुक्त कयनिहार युवक (चन्द्रगुप्त) तथा सेनापतिक पुत्री हेलनाक परस्परावलोकन, मूक दर्शन ताहिसँ उत्पन्न चित्तवृत्तिक चित्रणमे शृंगारक पूर्वराग स्पष्ट भऽ उठैत अछि। घमलौड़ि शब्दक प्रयोग स्मित हास्यक सेहो सृष्टि करैत अछि।

पाँचम सर्ग : एहिसर्गमे चाणक्य अपन रणनीति निर्धारणार्थ सम्पूर्ण देशक विभिन्न प्रान्तक गतिविधिक सूचना एकत्र करबाक हेतु एक सभा बजौने छथि। एक विशाल पीपर गाछतर शान्तिपूर्ण पवित्र मण्डप बनल अछि। जन सामान्यकैं सूचना छैक जे कोनो धर्म सम्मेलन आयोजित अछि, परन्तु किछु प्रबुद्ध जनकैं आभास छनि जे देशक विशेष परिस्थितिक क्रममे एहि अवसर पर राजनीति विषयक मन्त्रणा अवश्य होयत। राष्ट्र धर्म, समाज ओ स्वाधीनताक रक्षा-चिन्तनमे लागल विभिन्न प्रान्तक वीरनायक लोकनि साधुक छद्‌म वेश धारण कयने एकत्र होइत छथि—

''अंग, बंग, कलिंग, कौशल, मगध, मालव केर वासी
कुरु, असम, पांचाल ओ गान्धार मिथिला राज्य वासी''

पूर्व निर्धारित कार्यक्रमक अनुसार सभामे समवेत होइत छथि। चाणक्यक हृदयमे दृढ़ विश्वास छनि जे कोटि-कोटि लोकक बीच देश-धर्म-समाजक मर्यादा-रक्षा हेतु स्वजीवन अर्पित कयनिहार किछुओ राष्ट्रप्रेमी जाबत धरि छथि ताबत धरि देश परतन्त्रताक पंकमे नहि फँसि सकैछ। कारण—

''अछि सुरक्षित बीज तँ बनि जैत वृक्ष विशाल निश्चय''

परन्तु अनुकूल अवसर सभक हेतु अपेक्षित होइते छैक। जनसाधारणक सम्मेलन विसर्जित भेलाक बाद प्रतिनिधि सभक संग मन्त्रणा आरम्भ होइत अछि। गान्धारक प्रतिनिधि सूचना दैत छथिन जे गान्धारक युवराज शत्रुकैं अश्व, गज, रथ, पैदल सेनाक सहायता, विविध उपहारक अतिरिक्त सम्पूर्ण देशक मानचित्र, जाहिमे सुगम मार्ग, नद-नदी आदिक परिचय कराओल गेल अछि, से सब समर्पित करैत सन्धि कऽ लेलक अछि। परन्तु एहिसँ प्रजा वर्गकैं पीड़ा तँ छैके, असन्तोषक लहरि ताहि बिन्दु पर छैक जे ओ सब विद्रोह

करबाक मन बना लेलक अछि। आशा अछि जे उचित अवसर पर वीर वंशधर लोकनि राष्ट्र क रक्षामे अवश्य संग देताह।

गान्धारक प्रतिनिधि कैं सूचना दऽ बैसलाक बाद पांचालक प्रतिनिधि ठाढ़ होइत छथि। ओ सूचित करैत छथिन जे मन्त्रणाक निमन्त्रण लऽदूत जखन पहुँ चल तँ पुरुराज दम्भवश बाजि उठलाह जे नीचवंशक लोक हमर मर्यादा कैं की बूझत, ओ ओकर सीमा कोना छूबि सकैत अछि ? हम एकसरे लड़ब मुदा ओहि निम्नवर्गमे नहि मिलव। एतबा कहि निमन्त्रण पत्र कैं फाड़ि पैरतर राखि लेलनि। प्रजावर्ग यद्यपि स्वाभिमानी अछि, लड़बासँ पैर पाछु नहि करत, मुदा संगठनमे संग नहि देत।

देशक रक्षा लै समर्पित एक दृढ़ व्यक्ति बाजल जे अंग, मालव, कुरु तथा शुद्रक युवावर्ग पूर्णत: संगठित अछि। ई तँ बुझले अछि जे नन्द युद्धमे संग नहि देत, तथापि मागध वीर रणभूमिमे अपन रंग अवश्य देखाओत।

तदुत्तर शत्रुक शिविरक गतिविधिक सम्यक् निरीक्षण कऽआपस आयल चन्द्रगुप्त सूचना दैत छथिन— विश्वविजयक स्वप्नकैं साकार करबाक तथा संसार भरिमे यूनानक विजय-पताका फहरयबाक हेतु शत्रु पक्षक पाँच लाख सैनिक प्राणोत्सर्ग करबा लै कृतप्रतिज्ञ अछि। स्वयं सिकन्दर वीर-पूजक अछि। शिविरमे अपनहि घूमि-घूमि कार्य सभक निरीक्षण करैत सैन्यबलक उत्साहकैं बढ़बैत रहैत अछि। ओ सबसँ पहिने पुरु पर आक्रमण करत, तकर बाद एक-एक कऽ अन्यान्य गढ़कैं लक्ष्य बनाओत। परन्तु गुरुवर मन्त्रित विषबेलि शिविरमे रोपल जा चुकल अछि।

सब ठामक सूचना पाबि, गतिविधिसँ अवगत भऽ गेलाक पश्चात आत्मबलिदानक हेतु समर्पित उपस्थित युवक समुदाय कैं उद्‌बोधित करबालै चाणक्य स्वयं ठाढ़ होइत छथि—

'जय स्वतन्त्रते, जय राष्ट्र ध्वज, जयति वीर सन्तान'

ओ माता-पिता धन्य थिकाह जनिकर सन्तति मातृभूमिक मर्यादा-रक्षामे आत्म-बलिदान हेतु तत्पर रहैत छथि। हमरा लोकनिकैं चिन्तित होयबाक प्रयोजन नहि। जेना क्यौ आबि सहायता करत ताहि भरोसें नहि, प्रत्युत अपने बलक भरोस पर सूर्य सम्पूर्ण संसारक अन्धकारकैं विनष्ट करबा मे समर्थ छथि; जेना एकमात्र चन्द्रमाक उदय भेलापर लक्ष-लक्ष तारकदल मन्द पड़ि जाइत अछि तहिना एकसर हमर संशोधित नीति शत्रुकैं परास्त करबामे क्षम होयत। सिकन्दर पहिने पौरवगढ़ पर आक्रमण तँ करओ। पौरव कैं सहायता दऽ ओकर विश्वास प्राप्त करी। सिकन्दरोकैं आर्यवीर गणक शौर्य देखबाक अवसर भेटि जाउक। पौरवकैं आधा राज्यक प्रलोभन दऽ नन्दकुलक नाश करबामे सहायक बना लेब। हमरा लोकनि पर्याप्त छी। अहाँ लोकनि यथाशीघ्र अपन-अपन कर्त्तव्य मार्ग जाइत जाउ। एहि प्रकारक व्यूहरचनाक बाद पाँचम सर्ग समाप्त होइत अछि।

छठम सर्ग : ई सम्पूर्ण सर्ग जागरण गीत थिक जाहिमे प्रस्थान गीतक छन्दक बेसी प्रयोग भेल अछि। यद्यपि छन्द संयोजनमे कतहु कतहु शिथिलता सेहो परिलक्षित होइत

अछि, परन्तु शब्द योजना तथा विभिन्न अनुप्रासक स्वाभाविक रूपेँ एहन गुम्फन भेल अछि जे स्वत: उत्साह भावकेँ उद्बुद्ध करबामे पूर्णत: समर्थ अछि। उदाहरणार्थ किछु छन्दक रसास्वादन करब हमरा जनैत ने अरुचिकर होयत ने अप्रासंगिक ने अनुपयुक्त— यथा

मस्तीमे झूमि झूमि, खरतर शर चूमिचूमि
अरिगण केँ घूमि घूमि यमक घर पठाउ औ !
शक्ति निज लगाउ औ !
कूदि कूदि, फानि फानि, अस्त्र शस्त्र तानि तानि
भीषण रण ठानि ठानि, भुजबल दरसाउ औ !
रक्त नद बहाउ औ !
पूर्वज यश गाबि गाबि, पौरुष बल पाबिपाबि
साहसमे आबि आबि, गर्जना सुनाउ औ !
वीर बन्धु आउ औ !
यद्यपि छी छोट छोट, अरिगण बड़ मोटमोट
हेरि हेरि गोट गोट चोट पर चढ़ाउ औ !
लौह वीर आउ औ !

एहि प्रकारक जागरण गीत सुनैत सुनैत जन-मानस कोन प्रकारेँ प्रोत्साहित तथा उत्तेजित भऽ उठैत अछि तकर वर्णन करैत कवि कहैत छथि जे युवक वर्गक कोन कथा, बूढ़-पुरान लोक सब सेहो अपन केथरी केँ दूर फेकि फाकि अपन-अपन हथियार सबकेँ माँजि-माँजि धार तेज करबामे लागि गेल। नांगड़, पंगु जे छल तकरोसबमे जोश उमड़ि अयलैक। माय अपन पूतसँ दूधक लाज राखि लेबाक, पत्नी अपन पतिसँ राष्ट्र-धर्मक रक्षा करबाक आग्रह करय लागल तँ बहिन अपन भायसँ कहय लागल जे जखन अहाँ शत्रु-सैन्य संहार कऽ घुरब तखन अहाँक आरती उतारब। कुमारि कन्या बाट-घाट छेकि युवावर्गक ललाट पर अक्षत चन्दन लगा युद्धक निमन्त्रण देबऽ लागलि। एतबे नहि, अपितु—

बाप पूतसँ कहैछ माथ हाथ फेरि फेरि
काटि लाउ पुत्र वीर ! शत्रु माथ हेरि हेरि
आर्यवंश-गौरवकेँ गर्त्तसँ उठाउ बाउ
वीरता 'क पाठ शत्रु-शिष्यकेँ पढ़ाउ बाउ।

के क्षत्रिय, के अक्षत्रिय सब भेद-भाव मेटा गेल। सब वर्ग सव वर्ण देश पर संभावित आक्रमणक विरुद्ध सन्नद्ध भऽगेल। नीतिनिर्द्धारक ब्राह्मण स्वयं नेपथ्यमे रहि चन्द्रगुप्तक नेतृत्व मे विशाल संगठन ठाढ़ करैत छथि ओही नेतृत्वमे— ''डूबि गेल गाम गाम वीरताक रंग मे''।

सातम सर्ग : एहि सर्गमे चाणक्यक मानसिक अन्तर्द्वन्द्व, विज्ञानक प्रतिफल, युद्धक कारण, मानव जातिक नैतिक कर्त्तव्य, वर्तमानकालिक स्थितिक आकलन आ

अन्ततः निष्कर्षक युक्ति-युक्त प्रतिपादन भेल अछि जे कविक गहन चिन्तन कें सुस्पष्ट करैत अछि।

विश्व भरिमे युद्धक ज्वाला लपटि रहल अछि; ने जानि ई ज्वाला कखन कोन दिशामे बढ़ि आओत आ विकराल मृत्यु मानव समुदायकें अपन ग्रास बनायब आरम्भ कऽ देत, एही चिन्ताक अपार सागरमे डूबल, विचार मन्थन करैत चाणक्य एकान्तमे एमहरसँ ओमहर धूमि रहल छथि।

यद्यपि आजुक वैज्ञानिक आदि युगक मानवकें क्रूर वर्बर, असभ्य, अविकसित, मांसाहारी आदि विशेषण सँ विभूषित करैत हँसि-हँसि ओकरा सभक उपहास करैत छथिन तथा अपनाकें क्रूर प्रकृतिसँ संघर्ष कऽ जल-थल-नभ सब पर विजय प्राप्त कयनिहार, सृष्टिक समस्त रहस्यक उद्भेदन कयनिहार तथा मानव समाजकें सुसभ्य बनौनिहार मानि रहल छथि। परन्तु मनष्य वस्तुतः की आब सभ्य भेल अछि ? विज्ञान द्वारा आविष्कृत ई आग्नेयास्त्र, ई विस्फोटक पदार्थ मनुष्यमे व्याप्त ईर्ष्या-द्वेष, छल-छद्म, घात-प्रतिघात, हिंसा-प्रतिहिंसाक अमानवीय भावनाकें दूर करबामे समर्थ भेल अछि ? नहि, दूर करबाक कोन कथा ? प्रत्युत—

"हिंसा-प्रतिहिंसा नित विज्ञान बढ़ाबय,
सूतल दानवता क्रूर नृशंस जगाबय,
द्वेषक विष घोरि रहल जगतक अणु-कणमे,
विकराल प्रलय आह्वान करय क्षण-क्षणमे"।

तँ आशंका तँ एहि बातक अछि जे—

"विज्ञान जतेक बढ़त आगू संसारक,
भय जैत ततेक निकटतम तट संहारक।"

एकर कारण कविकें प्रतीत होइत छनि जे सबदिन सँ वैयक्तिक स्वार्थे युद्धक कारण रहल अछि। मुट्ठी भरि महत्त्वाकांक्षी लोक अपन तुच्छ स्वार्थक पूर्ति हेतु युद्ध-दैत्यकें आमन्त्रित करैत रहल अछि, जखन मनुजता रूपी सीता दनुज द्वारा अपहृता होइत छथि तखने रामकें शर-सन्धान करबाक हेतु बाध्य होअऽ पड़ैत छनि। भरल सभामे जखन द्रौपदी नग्न कयल जाइत छथि आ द्रोणाचार्य, कर्ण, कृपाचार्य सदृश महारथी लोकनिक कोन कथा, भीष्म पितामह पर्यन्त जखन प्रतिरोध करबाक साहस नहि जुटा पबैत छथि, तखन युद्ध छोड़ि आन कोनो विकल्प नहि रहि जाइत अछि। कविक शब्दमे—

"छीनय उठैछ क्यौ स्वत्व आनकेर जैखन
भय जाय युद्ध अनिवार्य विश्वमे तैखन"

सामान्यतः मनुष्य जाति स्वभावसँ शान्तिकामी होइत अछि, परस्पर प्रेमभावसँ जीवन-यात्राकें सुखदमानैत अछि। 'जीवमात्रमे परमात्माक तत्त्व समान रूपसँ विद्यमान छनि' एहि शाश्वत सत्यकें व्यक्ति अपना हृदय मे पोसाइत दुर् भावना कें बाहर फेकि, अनुभव करय तथा—

''मारय चाहय तँ दम्भ द्वेषकेँ मारय
जारय चाहय तँ शत्रु-भावकेँ जारय
काटय चाहयतँ कुटिल क्रोध केँ काटय
बाँटय चाहय तँ प्रेम विश्वमे बाँटय''

तखन युद्ध किएक होयत ? मनुष्य केँ अनका पर अपन अधिकार थोपबा क बदलामे अनकर जीवनदाता बनबाक चाही। कर्त्तव्यक पथपर दृढ़ता सँ डेग बढ़बैत समता, मैत्री ओ बन्धुत्वक भावकेँ विकसित करैत रहब मानवक नैसर्गिक गुण होयबाक चाही। परन्तु ''मचबैछ श्वान गण जहिना छीना-झपटी'' तहिना शासक गण अपन-अपन अधिकार क्षेत्र केँ विस्तृत करबाक हेतु लड़ैत रहैत अछि आ स्वार्थ-सिद्धि हेतु अपना पक्षसँ लड़निहार केँ प्रलोभन दैत छैक जे—

''लड़ि मरब युद्धमे, स्वर्ग लोक तँ जायब
स्वर्गक सुहासिनीसँ मर्यादा पायब''

आ एहि आकाश-कुसुमकेँ पयबाक मृगतृष्णामे ओ सब—

''दय प्राणक आहुति स्वार्थ आनकेर साधय
क्रीड़ार्थ मृत्युसँ क्रूर कृपाण उठाबय''।

जे शान्तिकामी छथि तनिको अधिकार-विहीन भऽ बैसल रहि गेलापर संसार कायर कहि भर्त्सना करैत छनि, अन्यायक पोषक मानय लगैत छनि। कविक उक्ति छनि—

''जरि जाइछ माथपर जखन युद्ध केर ज्वाला,
चमकैछ खड़गमय नभमे विद्युन्माला,
रहितहु निर्बल, रहितहु अति समर-विरोधी
नर विवश युद्धमे कूदय बनि प्रतिरोधी।''

ध्यातव्य जे जाहि समयमे ई महाकाव्य लिखल जा रहल छल ताहि समयमे संसार भरिमे बांडुंग सम्मेलनमे 'पंचशील'क आधार पर चीन-भारत मैत्रीक चर्चा भऽ रहल छल तथा भारत में हिन्दी-चीनी भाई-भाई क नारा चारू दिस गुंजायमान छल। सहसा १९६२ मे चीन भारत पर आक्रमण कऽ बैसत तकर लेशमात्र आशंका ककरो नहि छलैक। भारतवर्षक तत्कालीन प्रधानमन्त्री पं. जवाहरलाल नेहरू अपनाकेँ विश्व-शान्तिक अग्रदूत रूपमे प्रतिष्ठापित करबाक हेतु 'शान्तिकपोत' केँ उडौने रहथि। परन्तु भेलनि की ? एहि प्रश्नक उत्तर उपरि लिखित पंक्तिमे पहिने अंकित भऽ चुकल छल। बहुतो व्यक्तिक धारणा छनिजे ई महाकाव्य चीनी-आक्रमणक पृष्ठभूमिमे लिखल गेल अछि, परन्तु सत्य ई थिक जे ताहि समय बन्धुजी कैन्सर रोग सँ ग्रस्त, मृत्युसँ लड़ैत रोग शय्या पर पड़ल छलाह। अस्तु।

चाणक्य मनमे तर्क वितर्क कऽ रहल छथि जे शोणित-शोषक प्राणी अनुनय नहि बुझैत अछि, विष सुधा पियौने नहि शान्त होइछ, प्रत्युत विषस्य विषमौषधम् तहिना शठेशाठ्यं समाचरेत्। यदि—

''अरि छूबय आङुर, शीश छाँटि दी धड़सँ

निज प्राण राखि नहि विमुख बनी संगरसँ।''

एहि पदमे 'धड़ सँ' शब्दश्लिष्ट अछि। 'धड़' शब्दक एक अर्थ भेल शिरसँ अतिरिक्त सम्पूर्ण शरीर आ दोसर अर्थ भेल तुरन्त। एहि ठाम अनेक उपलक्षणक प्रयोग काव्यकेँ चमत्कृत करैत अछि।

आठम सर्ग : एहिसर्गमे कवि सूर्यास्तकेँ प्रतीक वनाय पौरवक संग भेल युद्धमे यद्यपि सिकन्दरक विजय भेलैक तथापि आर्यक शौर्य, जन्मभूमि हेतु समर्पण भाव देखि हताश-निराश सिकन्दर द्वारा स्वदेश धूरि जयबाक निर्णयक वर्णन कयने छथि। निम्नांकित रूपेँ वर्णन आरम्भ होइत अछि—

किछुए क्षण पहिने अपन प्रखर रश्मिसँ समस्त जगत केँ सन्तप्त कयनिहार प्रभाकर अपन आभा सहित सिन्धु जलमे कूदय जा रहल छथि। दोसर दिस उदय गिरि शिखर पर चढ़ि चन्द्रमा भुवन भरिकेँ अपन सौम्यता वितरित करबाक हेतु उद्यत भऽ रहल छथि। सज्जन रूपी कुमुद गण हृदय सँ प्रफुल्लित भऽ रहलाह अछि तथा विरह सन्तप्त कमलिनी अपन आँखि मूनि रहलि अछि। वस्तुत: काल चक्र पर घुमैत एहि जगतमे क्यौ कहियो एक रूप मे नहि रहि सकल अछि। कखनहु आचूड़ान्त सुख-सागरमे निमज्जित व्यक्ति केँ दु:ख क ज्वालामे छटपटाइत रहबाक लेल बाध्य होअऽ पड़ैत छैक तँ कखनहु दु:ख संतप्त व्यक्तिओ केँ सुखक शीतल संस्पर्शसँ रोमांचित भऽ उठबाक अवसर भेटिते छैक।

विश्वविजयक स्वप्न हृदयमे संजोगने कतेको सय कोस सँ आयल सिकन्दरक आशा फलित भऽ सकलै ? जे मनमे संसारकेँ तृणवत् मानैत विश्वविजेता कहयबाक दम्भ लऽ चलल छल, से आइ आर्यवीर सभक शौर्य तथा खड्गक चमकसँ चोन्हरायल आँखिएँ चकुआइत नत-शिर भऽ रहल अछि।

यूनानी शिविरमे मन्त्रवेत्ता मन्त्री, शस्त्रधारी योद्धा जुटल छथि। सिकन्दरक आसन रिक्त छैक। एक स्तब्धता व्याप्त छैक। वीर पुंगव विश्वविजयाकांक्षी कतऽ छथि, कोन स्थितिमे छथि, ई प्रश्न सभक अन्तस्तल केँ आलोड़ित-विलोड़ित कऽ रहल छैक। करुआरि बिनु नावकेँ के सम्हारत ? ककरो मुँह सँ बकार नहि फुटि रहल छैक ? सब पाथर क मूर्ति समान बुझना जाइत अछि। कविक कल्पना छनि जे जेना व्याजक लोभसँ ग्रस्त कोनो वणिक अपन मूलधन पर्यन्त गमा कऽ मनहूस भेल बैसल रहैत अछि, तहिना वीरवेषमे सजल-धजल सैन्य-समूहक मुँह पर विषादक स्पष्ट छाया परिलक्षित भऽ रहल अछि। सहसा शासकक आगमन-सूचक ध्वनि सभक कानमे पड़िते राहुग्रस्त चन्द्रमाकेँ उग्रास भेलापर जेना चन्द्रिकाक छटा छिटकि उठैत छैक, तहिना विषादक छाया क स्थान पर प्रसन्नताक आभा सभक मुखमण्डल पर पलटि अयलैक। उल्लासमे जेना सब अनियन्त्रित भऽ गेल। क्रमश: जयध्वनि निकटतर होइत गेलैक। एक नरयान सँ आहत सिकन्दर सैनिक क कान्हक सहारा लऽ बाहर आबि कोनहुना आसनासीन भेल। जाबत मन्त्री लोकनि कुशल-समाचार पुछथिन, ताहिसँ पहिनहि सभासद लोकनिकेँ सम्बोधित करैत स्वयं सिकन्दर बाजल—

हे सभासदगण ! यद्यपि अहाँ लोकनि परमवीर योद्धाछी, जकर प्रत्यक्ष प्रमाण यैह थिक जे एहि विकट संग्राममे प्राणपण सँ लड़ि कऽ अपने पक्षमे जयध्वज फहरयबामे सफल भेलहुँ अछि, परन्तु वीरता ककरा कहैत छैक तकर परिचय हमरो एहि युद्धमे भेटल अछि। हमरा मनमे प्रबल आकांक्षा छल जे सम्पूर्ण विश्वपर वर्चस्विता स्थापित करैत सबकेँ अपन पैरतर चापिकऽ राखब। ई हो धारणा छल जे हमर नाम सुनिते संसार काँपि उठैत अछि। तेँ विश्वास होइत रहय जे संसार भरिक राजा सभक मुकुटमणि हमरे चरणपर आबि कऽ झुकत आ संसारक इतिहासमे एक नवीन अध्याय जुटत ! परन्तु आर्य देशक श्रेष्ठताक प्रसंग गुरुवर जे कहने रहथि, सौभाग्यसँ एहि संग्राममे तकर साक्षात्कार भऽ गेल। नैसर्गिक शोभा वस्तुत: एहि देशक दासी बनल छैक।

सिकन्दर क मुख सँ कवि एहि भारत भूमि क प्राचीन गौरव-गाथा यथा श्रीराम चन्द्र द्वारा सागरमे सेतु निर्माण, कुरुक्षेत्रमे श्रीकृष्ण द्वारा गीताक उपदेश, गौतम बुद्ध द्वारा सत्य-अहिंसा आदिक सन्देश, शिवि द्वारा शरणागतक रक्षार्थ शरीरक मांस अपनहि हाथेँ तराजूपर चढ़ायब, दधीचि द्वारा अस्थिदान, वचन पालन हेतु हरिश्चन्द्र द्वारा पत्नीओ पुत्रक विक्रय तदुत्तर स्वयं दासबनि मरघटमे जाकऽ रहब, भीष्म द्वारा अपन पराजयक युक्ति अपने कहब आदि घटना सभक स्मरण करौने छथि।

एक विलक्षणता ई देखबामे अबैत अछि जे वर्त्तमान प्रजातन्त्रहु क कालमे ओ व्याधि समाज कँ ओहिना ग्रस्त कयने छैक जाहि व्याधिक कारणेँ ई देश जगद्गुरुक आसन सँ च्युत भऽ अनेक शताब्दी धरि पराधीनताक क्रूर पाशमे जकड़ल छटपटाइत रहल। आजुहुक जननेता इतिहासक ओहि अन्धयुगसँ कोनो शिक्षा नहि ग्रहण कऽ रहल छथि। ओहि रोगक सटीक वर्णन पठनीय तँ अछिए, चिन्तनीय ओ मननीय सेहो अछि। सिकन्दर अपन सैन्य-समूहकेँ सम्बोधित करैत कहि रहल छैक—

''यदपि ईर्ष्या-कलह-अभिभूत भारत
परस्पर वैमनस्यक भाव सबमे
न क्यो ककरो कहल बूझय विचारय
विसरि सब पूर्व पुरुषक प्राप्त गौरव।
जरल मिथ्याभिमानक उग्र ज्वाला।
जखन एहि राष्ट्रमे सन्दाहकारी,
समाजक शत्रु बनि सबकेँ जरौलक
प्रकृति सँ प्राप्त मानव-स्नेह-बन्धन।''

सिकन्दर क कथन छैक जे भने एहि कारणेँ ई राष्ट्र अनेक दृष्टिएँ छिन्न-भिन्न भऽ गेल हो, परन्तु—

''तदपि अवशेष किछु आर्यत्व गौरव
प्रवाहित भऽ रहल अछि विन्दु मात्रो
अतीतक चिह्न अछि रखने सुरक्षित
महा निर्बल बनल ई आर्य-वंशज।''

तेँ पराश्रित जीवनक कट्टर विरोधी तथा वीरताक पूजक एहि राष्ट्रकेँ एखनहु पद-दलित करब सम्भव नहि अछि। काल्हिए युद्धबन्दी बनल पुरु वीरसँ युद्ध स्थलमे जे वार्ता भेल; 'अहाँक संग केहन व्यवहार कयल जाय' ई पुछलापर विजित रहितहु जाहि निर्भीकता आ मनस्विताक संग मुस्कुराइत उत्तर देलक जे एक राजा दोसर राजाक संग जेहन करैत अछि, से सुनि हमरा अपन पौरुष क्षुद्रतम प्रतीत भेल। हम अचंभित आ लज्जित भऽ गेलहुँ। लाजेँ ओकरा दिस तकबाक साहस नहि भेल। मनहिमन जीतिओ कऽ शत्रुक सम्मुख हारि मानि लेल। कारण—

''जकर वीरत्व अछि निर्मित तेहन दृढ़
जेहन इस्पात हो आश्चर्य कारी,
अचल सम रहि अटल सिद्धान्त पथ पर
झुकत नहि, टूटि जायत खण्डशः बरु।''

सुनैत छीजे चाणक्य नामक महानीतिज्ञ क्यौ ब्राह्मण कोनो दृढ़ संगठन कयने, हमरा सभक बाट छेकने प्रतीक्षामे बैसल अछि। ओहि दिन एक युवक हमरा सभक शिविरमे एकसरे आबि जेना मान-मर्दन कऽ गेल, लाखो वीर रहितहु ओकरा वन्दी बनयबाक साहस क्यौ नहि कऽ सकलहुँ, ओ युवक ओही ब्राह्मणक गुप्तचर छल जे किछु भेद लेबऽ आयल छल। ने जानि कोन तरहक भेद ओ लऽ सकल, अपन उद्देश्यमे सफल भेल वा विफल ! मुदा जाहि आर्यभूमिक सीमास्थित राजाक आत्म-बल तथा युद्ध-कौशल देखि समस्त योद्धागण निरुत्साहित भऽ गेल छी, ताहि भूमिक संगठित, बल-वीर्य-परिपूरित मागधसँ कोन तरहेँ हम सब लड़ि सकब ? तेँ एही ठामसँ फीरि चली सैह हम उचित बुझैत छी। अतः हमर आदेश मानि समस्त सैनिक कूच करबाक तैयारी करैत जाउ।

आर्यक दृढ़ता, स्वाभिमान आ पराक्रम देखि प्रथम युद्धमे विजय पबितहु मानसिक रूपसँ पराभूत सिकन्दर—

''रात्रिशेष भेल जानि
तुच्छ बूझि गौरव निज, तन-मनसँ श्रान्त भेल
सेना चतुरंगिणीकेँ साजि फिरल देश दिस
झेलमकेर जलपथसँ वीरवर सिकन्दरो।
योजन भरि लम्बमान
शत-सहस्त्र नौकामे विस्मृत-बल, श्रीविहीन,
अस्त्र-शस्त्र छोड़ि-छाड़ि, लक्ष-लक्ष दक्षवीर
बैसल छथि गुम्म-सुम्म पाथरकेर मूर्ति सम।''

ससैन्य सिकन्दर जलपथसँ आगाँ बढ़ैत अछि, किछुए कालक पछाति सूर्यक दीप्त आभासँ समस्त चराचर भासमान भऽ उठैत अछि। देखैत अछि सुदूर झेलमनदीक तटपर तेजयुक्त भालपर श्वेत त्रिपुण्डक तीनू रेखा चकचक करैत, दाढ़ी-मोछ-युक्त मुख मण्डल

कौपीन धारी क्यौ व्यक्ति पद्मासन लगौने ध्यान मग्न बैसल अछि। सैल्युकसक दृष्टि सहसा ओहि व्यक्ति पर पड़ि जाइत छैक। ओ हड़बड़ाइत सिकन्दरक ध्यान आकृष्ट करैत वाजि उठैत अछि— हे देखल जाओ, चाणक्य नामेँ अपने जनिक चर्चा कयने छलहुँ, धर्म नीति, राजनीति, अर्थशास्त्रमे शुक्रक समान एवं अन्यान्य शास्त्रमे अगाध विद्वान विष्णु शर्मा नामक यैह ओ ब्राह्मण थिकाह।' यैह ओ ब्राह्मण थिकाह ?' चकित-विस्मित ग्रीकराज जिज्ञासुभावेँ बजैत नावकेँ तुरन्त तटदिस मोड़ि देबाक आदेश दैत छैक। नावकेँ तट पर लगिते ओहिपर सँ उतरि जेना कोनो दर्शनार्थी मन्दिरमे भक्ति ओ श्रद्धाभावेँ माथ झुकौने प्रवेश करैछ, तहिना ब्राह्मणक समक्ष हाथ जोड़ि नत-शिर भऽ ठाढ़ भऽ जाइत अछि। जन कोलाहलसँ ब्राह्मणक ध्यान भंग होइत छनि, ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः कहि आँखि फोलैत छथि। सम्मुख ग्रीकराजकेँ वेष-भूषेसँ चीन्हि घनरव समान मन्द्र स्वरमे बाजि उठैत छथि-आर्यभूमिक सीमे पर विश्वविजयाकांक्षी केँ नत-शिर देखि आश्चर्य-चकित छी। सिकन्दरक मुखमण्डल पर आन्तरिक वेदनाक भाव स्पष्टतः झलकि उठैत छैक। करुणार्द्र स्वरमे वाजि उठैत अछि— हम लज्जित छी विप्रवर, युद्धोत्तर विजय जन्य उन्माद रूपी वृक्षक सिंचन दुःख एवं वेदनाक नीरसँ होइत छैक तथा तृष्णा एकर मुख्य खाद थिकैक से नहि बूझल छल। ई वृक्ष विश्वमे ककरो सुख-शान्ति नहि प्रदान कऽ सकैछ सेहो पहिनेसँ अनुमान नहि छल आ ने आर्यरक्त मे एखनहु एतेक उष्णता विद्यमान छैक तकर ज्ञान छल। परन्तु—

''देव ! आब ज्ञात भेल
व्यर्थ रक्तपात जन्य पातक समस्त भेल
दोषहीन लक्ष-लक्ष जीवक उत्तापना,
हा ! स्वकीय कृत्यसँ छी अन्तर सँ तप्त हम।''

जाहि सिकन्दरक प्रसंग सामान्य धारणा ई बनैत अछि जे ओ अतिशय क्रूरकर्मा नृशंस व्यक्तित्व रखनिहार लोक छल होयत ताहि सिकन्दरक मुँहसँ एहि पश्चात्ताप भरल वाक्य उच्चारण कराय कवि ओकर चरित्रक दागकेँ जेना धो देलनि अछि। ओकरा प्रति उत्पन्न आक्रोश तथा घृणामूलक भावनाक एहिसँ शमन भऽ जाइत छैक।

ग्रीकराजकेँ एहि प्रकारेँ पश्चात्ताप करैत देखि चाणक्य अपन कथनमे अध्यात्मक पुट दैत कहैत छथिन जे एहि विश्वक महानियन्ता एक ईश मात्र छथि, तेँ

''जाउ ग्रीकराज फीरि
जँ स्वकीय चित्तमध्य सत्ये पछताब भेल,
ताकू बनि शान्तचित्त 'सोऽहं' केर तत्त्व ज्ञान
प्राणिमात्रमे विकीर्ण ईशक विस्तार रूप।''

अन्यथा युद्धजन्य लालसाक पूर्ति नहि भेल हो, तँ समस्त सैन्य साजि पुनः कहियो आवि जायब। अहाँ केँ समुचित पाठ पढ़ा देबाक हेतु आर्य सन्तान सबकालमे सब तरहेँ प्रस्तुत रहत।

एतहि आबि एहि सर्गक समापन होइत अछि। एहि सर्गमे कवि नव-नव छन्दक संगहि भोटिया घोड़ाक कदम चालि जकाँ सबतरि सम पर उछिलैत शब्दक प्रयोग द्वारा अपन छन्द योजना तथा भाषा-शिल्पक कौशल देखयबामे पारंगत प्रतीत होइत छथि अतुकान्तो छन्दमे यति-गतिक सफल निर्वाह भेल अछि।

नवम सर्ग : एहि सर्गमे महानन्द द्वारा निर्वासित महामन्त्रीक रंग-मंच पर अवतरण भेल अछि। शकटारक हृदयमे अपन सात गोट पुत्रक वधक प्रतिशोध लेबाक भावना अंगार जकाँ जरि रहल छनि। एहि ज्वलित अंगारक प्रसंग हिनक धारणा छनि—

'मिझा सकत नहि शत्रु-वंश-शोणित बिनु पड़ने'

तकर कारण हुनक स्वगत भाषण—

''हाय अविकसित कुसुम-कान्त-कमनीय कलेवर
सात सुतक बलिदान सकत की बिसरि हृदयसँ ?
अन्धकूपमे अन्न-पानि बिनु तलफि तकफि कऽ
पाबि अकालक मृत्यु स्वर्गमे पहुँचलाह जे।''

मनक उत्तापकेँ शब्दोच्चार द्वारा किछु कम होयबाक आशासँ एकसरे शकटार बरबराइत छथि— हे दिवंगत पुत्र लोकनि ! शान्त रहू, आब अतिशीघ्र हम नन्दक रक्तसँ अहाँ लोकनिकेँ तिलांजलि दऽ एहि अत्याचारी शासकसँ एहि देशकेँ मुक्त करब। थिकहुँ हम ब्राह्मण, किन्तु एहि कुटिल कर्मक कारणेँ भने लोक चाण्डाल कहि सम्बोधित करओ, हमरा तकर कोनो क्लेश नहि होयत। हमर प्रतिज्ञा अछि—

''चन्द्र सूर्य बरु चलथु अपन विपरीत मार्गसँ
बरु हिमगिरि धसि जाथु बहथु गंगा पश्चिम मुँह
दृढ़प्रतिज्ञ शकटारक दृढ़ प्रण टरत किन्तु नहि।''

परन्तु सातवर्ष धरि अन्धकूप मे रहैत जखन तिथि पक्ष पर्यन्तहुक ज्ञान शकटार कँ नहि रहि गेलनि अछि तखन नन्दक स्थिति ओ गतिविधिक ज्ञान कोना रहतनि। ओ मनहि मन सोचि रहल छथि जे नन्दक वस्तु-स्थिति के कहत ? एहि निर्जन वनमे भेटबे के करत ? यदि भेटवो करत तँ एहि मलिन वेष मे देखि के चीन्हत ? अस्तु, गुप्त रूपेँ नगर दिस चलैत छी, परन्तु नगरोमे विश्वासी के रहि गेल होयत ? यदि क्यौ होयवो करत तँ राजभय सँ आश्रय देत वा नहि ? एक छलाह हमर सहपाठी अति दृढ़व्रती चणक नामक ब्राह्मण, परन्तु राजद्रोह अपराधमे मारल गेलाह वा जीवित छथि, के कहत ?

''नन्दक प्रति विद्वेष अग्निसँ धू-धू जरइत
एहि प्रकारेँ बाजि, पूर्णतः उत्तेजित बनि
देह तानि कऽ चलइत अतिशय निर्बलता वश
मूर्च्छित भऽ खसलाह रहल नहि देहक सुधि-बुधि।''

क्रान्ति-रथ-पथ निर्धारक, राजनीति निष्णात चाणक्य अपन समस्याक समाधानमे चिन्तन-मग्न ओही ठाम कोनो वृक्षक अऽढ़मे बैसल छलाह, शकटारक मूर्च्छित भऽ भूमि पर खसलासँ जे ध्वनि भेलैक से सुनि दौड़लाह। पहिने ओहि मूर्च्छित व्यक्ति लग जा अपन अंगपोछासँ हौंकय लगलथिन पुनः अपन कमण्डलु आनि आँखि मुँह पर पानिक छिच्चा देलथिन, अन्यान्यो उपचार कऽ हुनक मूर्च्छा दूर कयलथिन। मूर्च्छासँ मुक्त होइते शकटार विक्षिप्त जकाँ प्रलाप करय लगलाह— हाय ! एखन कतय छी ?

''भेल मगध की मुक्त दुष्ट स्वेच्छाचारी सँ
वा जिविते अछि दुष्ट क्रूर ओ जारज औखन ?''

हिनक प्रलापमे हिनक जिज्ञासासँ चाणक्यकेँ बुझबामे विलम्ब नहि भेलनि जे ई निर्वासित महामन्त्री शकटार थिकाह। कहलथिन- महामन्त्रिवर ! किछु दिन आरो धैर्य धारण कयने शान्तरहू। धैर्य धारण करबाक परामर्श सुनि शकटार उत्तेजित भऽ बाजि उठलाह- धैर्य ? हमरासँ अधिक धैर्य के राखि सकल अछि ? आब बान्ह टूटि चुकल अछि—

''की कालक अधिकार विश्वमे छीनि सकत क्यौ ?
ज्वाला मुखी-समुद्भव ज्वाला रोकि सकत क्यौ ?''

परन्तु महामन्त्रिवर कहनिहार तोँ के थिकाह ? शीघ्र बाजह, नहि तँ एहि कटारक लक्ष्य व्यर्थ बनि जयबह। एतबा कहैत कटार तानि ठाढ़ भऽ जाइत छथि। चाणक्य कहैत छथिन जे नन्द वंशक संहारे हेतु परिकरबद्ध चणक पुत्र हम चाणक्य थिकहुँ। गुप्त रूपेँ षडयन्त्र चलि रहल अछि, जन-जनमे विद्रोह भावना पसरि रहल अछि। महा विस्फोट होयबा मे आब अधिक विलम्ब नहि होयतैक। अपन न्यायोचित अधिकार प्राप्त करबाक तथा एहि अत्याचारी शासकसँ त्राण पयबाक हेतु—

''जन-जीवन-जागरण-जन्य जन क्रान्तिक ज्वाला
नगर डगरमे गाम-गाममे जगमग जागत''
उठत सम्हरि सब लोक राष्ट्रहित पूर्ण जोश सँ
निद्रा तन्द्रा हटत, बसत नरमे निर्भयता।''

तखन मगधे नहि सम्पूर्ण उत्तरापथक भूमिसँ पाप ताप अभिशाप समस्त अनैतिकताक अन्त होयत। जन जीवन हितकारी महान परिवर्त्तन अवश्यम्भावी अछि। शंख बाजि चुकल अछि। विजय-रथपर आरूढ़ जयी अग्रिम पंक्तिमे ठाढ़ अछि। आर्यावर्त्तक परम पूज्य ई भूमि आब एक शासन-सूत्रमे गुम्फित भऽ विश्वक मार्ग दर्शक शीघ्र बनय जा रहल अछि।

एहि प्रकारेँ विस्मय-विषाद तथा हर्ष-शोक मिश्रित पारस्परिक मिलनसँ दूनू विप्र रोमांचित भऽ उठैत छथि। ताबत राति बीति जाइत अछि, सम्पूर्ण जगत प्रकाशसँ जगमगा उठैत अछि। परन्तु पाटलिपुत्र नगरक स्थिति 'यथा राजा तथा प्रजा' उक्तिक अनुरूपे अछि। जाहि ठामक राजा दिन-राति स्वयं भोगे-विलासमे डूबल रहैत हो ताहि राजाक कर्मचारी केहन अकर्मण्य होयतैक से स्वयं अनुमेय थिक।

निसर्गमे सर्वत्र चेतना जागि गेल छैक। पक्षी समुदाय अपन अपन खोंता छोड़ि उन्मुक्त गगनमे विचरण हेतु चलि पड़ल अछि। सरोवरमे सरसिज पूर्ण विकसित भऽ गेल अछि। मधुकरगण मधु संचय करबामे लागि गेल अछि, परन्तु—

"नन्दक चर, अन्तः पुरवासी, राजक प्रधानजन विश्वासी,
अस्त्रागार क जे अधिकारी, हय-गज-पशु-मण्डल-संचारी,
प्रहरी, परिचारक, धनाध्यक्ष, ककरो नहि फूजल स्वप्न कक्ष
सब क्यौ सूतल निद्राह भेल, आलस्य-सिन्धु अवगाह भेल।"

एहने स्थितिमे पूर्व निर्णीत योजनानुसार सहस्त्र सहस्त्र अज्ञात योद्धा वीर आकस्मिक रूपँ राज भवन पर आक्रमण कऽ दैत अछि। सम्पूर्ण नगर आक्रमणकारी सँ भरि जाइत अछि तथा आनन-फानन मे शस्त्रागार सँ सभागार धरि, राज सिंहासन सँ प्रशासक गणक आसन धरि सब पर अपन सम्पूर्ण अधिकार जमा लैत अछि। एतेक धरि जे—

"नन्दक छल जे निज स्वप्न सदन, बन्दी गृह अछि बनि गेल एखन"।

प्रजावर्ग तँ उत्पीड़नक कारणेँ विरोधमे छलैके, कतहुसँ कोनो प्रतिरोध नहि भेलैक। कविक कहब छनिजे दस मुँहमे भगवानक वास छनि, दस-द्रोही कैँ आइ ने काल्हि सुखसँ वंचित होअय पड़िते छैक।

पहिने तूर्यनाद भेलैक, तत्पश्चात् परिषदक आह्वान-सूचक ध्वनि जे सुनि-जन-प्रतिनिधिगण समवेत होइत छथि। सिंहासन रिक्त अछि, वन्दी महानन्द नीचाँमे ठाढ़ अछि। महामन्त्री शकटार मलिन वेषमे एक कातमे बैसल छथि। सकल सभासद कैँ सुव्यवस्थित भऽ गेलाक उपरान्त परिषदकैं सम्बोधित करैत अचार्य चाणक्य बजैत छथि—

समुपस्थित मागध जन-प्रतिनिधिगण ! सम्प्रति राज्यमे अनाचार चरम सीमा पर अछि। प्रजाक जीवन शोकमे डूबल छैक आ धूर्त्त, लम्पट आनन्द करैत अछि। ककरो ककरो पर विश्वास नहि रहि गेलैक अछि। समय कठिन जानि लोक देश छोड़ि अन्यत्र शरण ताकि रहल अछि। यद्यपि राष्ट्रक हित चिन्तक लोकनि कैँ सावधान भऽ गेलाक कारणेँ राष्ट्र पर आयल महान संकट एखन टरि गेल अछि, सिकन्दर आहत भऽ विजयक आकांक्षा कैँ मनहिमे समेटि ससैन्य स्वदेश फीरि गेल अछि, तथापि आन्तरिक संकट एखनहु यथावत् अछिए। एहि हेतु दोषी के ? ताहि पर सब मिलि उचित विचार करैत जाइ तथा एहि संकट सँ निस्तार पयबाक हेतु उपयुक्त उपाय सोचैत जाइ से हमर निवेदन। मगध सम्प्रति असहाय स्थितिमे प्रतिनिधिलोकनि सँ न्यायक याचना कऽ रहल अछि।

प्रतिनिधि मण्डलक बीच सँ एक व्यक्ति ठाढ़ भऽ आक्रोश भरल शब्दमे राजा नन्द दिस अंगुलि निर्देश करैत बाजि उठैत अछि- एहि समस्त अव्यवस्थाक मूल कारण एहि ठामक अबण्ड शासक ई महानन्द थिक, तेँ पापी कैँ समुचित दण्ड भेटबाक चाही। ताहि पर एक मलिन ब्रेष धारी अनचिन्हार व्यक्ति ठाढ़ होइत बाजल- ई प्रतिनिधि सभा जँ हमरा अधिकार देअय तँ देशोद्धार क समुचित उपाय हम करी। मनिल वेषक कारणेँ अनचिन्हार सन लगैत व्यक्ति क स्वर सुनि सम्पूर्ण सभासँ साधुवाद क संग शब्दोच्चार भेल—

महामन्त्रिवर शकटार निर्विवाद रूपेँ एकर सर्वोच्च अधिकारी छथि। ई जे न्याय करथि से सबकेँ शिरोधार्य अछि।

शकटार सभासँ अधिकार पाबि झपटि कऽ नन्दक समीप आबि अंगाक भीतरसँ कटार बाहर करैत छथि, जाबत लोक हाँ हाँ करैत अछि ताहिसँ पहिनहि सौंसे कटार महानन्दक करेज क आर पार भोंकि दैत छथिन शोणितसँ लथपथ महानन्द निष्प्राण भऽ भूमि पर ओंघड़ा जाइत अछि। एहि सर्गमे पाठक केँ कतहु करुण, कतहु रौद्र आ अन्तमे वीभत्स रसक झलक देखबामे आबि सकैत छनि। एतहि नवम सर्ग विराम लैत अछि।

दसम सर्ग : एहि सर्गमे कवि शरद ऋतु क वर्णनक व्याजसँ अन्योक्तिक आश्रय लऽ महानन्द क कुशासनसँ त्राण पावि मगधक प्रजावर्ग प्रसन्नता पूर्वक कोन रूपक सुखमय जीवन क अनुभव कऽ रहल अछि तकर अंकन कयने छथि।

राजसत्ताक प्रोत्साहन पाबिए कऽ राजकर्मचारीगण प्रजाक प्रति अत्याचार करबाक साहस करैत अछि। उदाहरणार्थ जेना मेघक सहयोग बिनु प्राप्त कयने नदी सब गामक गाम केँ बाढ़िमे भसिया देबाक सामर्थ्य नहि रखैत अछि। मगधमे चन्द्रगुप्तक सुशासन स्थापित भऽ चुकलाक बाद अनुशासनक विधिवत् पालन करैत नीति-नियमानुसार अपन-अपन कर्त्तव्य पालमे लागल रहैत छथि। कविक शब्दमे—

''रहय जे स्रोतस्विनी उन्मादिनी
घन-पटल निज पृष्ठ पोषक देखि नहि
अपन माया जाल सकल समेटि कय
भेल निर्मल वारि लय पथगामिनी।''

एमहर सब तरहेँ सर्वत्र सुखशान्तिमय वातावरण पाबि जन समुदाय हास-विलाससँ परिपूर्ण उल्लासमय जीवन यापन कऽ रहल अछि, परन्तु एहि सुख-शान्ति केँ पुन: स्थापित कयनिहार ओ शान्तिकामी विप्र जनपदसँ दूर सघन वनमे एक पीपरक तरुछाया तर प्रस्तर-निर्मित एक चबुतरा पर बैसल एकान्त चिन्तनमे लीन छथि-ओही ठाम राज परिकरक संग शासकीय वेषमे सुसज्जित चन्द्रगुप्त यूनानक सेनापति सेल्युकस केँ ओकर पत्नी सहित बन्दी बनौने गुरु चाणक्य क समक्ष उपस्थित होइत छथि।

चन्द्रगुप्त अपना मनमे सोचैत आयल छल होयताह जे अरिपक्षक सेनापति केँ बन्दी बना कऽ सम्मुख उपस्थित करैत देखि गुरुवर अति उल्लसित भऽ अपन शिष्यक एहि वीरता पूर्ण कृत्यसँ अपना केँ कृतार्थ मानैत हिनक भूरि भूरि प्रशंसा करथिन, परन्तु गुरु तँ कोनो चिन्तनमे ध्यान-मग्न छथिन। चन्द्रगुप्तक हृदय सशंकित भऽ उठैत छनि। सशंकिते चित्तसँ गुरुक चरण स्पर्श करैत छथि तँ गुरुक ध्यान भंग होइत छनि। ओ अपन मार्मिक दृष्टि केँ सब पर निक्षिप्त करैत सबकें बैसि जयबाक संकेत करैत छथिन। तदुत्तर शून्यमे दृष्टिकेँ स्थिर करैत बाजि उठैत छथि—

हे मागध ! यद्यपि मगध राजसिंहासन सकल वैभव ओ सुख प्रदायक सर्वोच्च पद थिक, अहाँ सर्वगुण सम्पन्न ताहि पदक सर्वोत्तम अधिकारी छी, तथापि सर्वदा ध्यान रहय

जे ई पद परम कण्टकाकीर्ण होइत छैक, जाहि पर विघ्नक वारिद माला सतत उमड़ल रहैत छैक संगहि पग-पगपर भयंकर संकटक सामना सेहो करैत रहय पड़ैत छैक। राजसिंहासनमे ईहो शक्ति रहैत छैक जे यदि ओ चाहय तँ शासक कैं सुरपुरोक सिंहासन धरि पहुँचा सकैत अछि, परन्तु से ताहि स्थितिमे जखन—

''राजधर्म अति विकट विश्व मे पालन करथि विवेकी''

ओ विवेक की थिकैक तकरविश्लेषण करैत कवि लिखैत छथि—

''शिर सम सभसँ ऊँच बैसि सभकैं समान कय मानय,
जन समाज केर अंग-अंग कैं निज सम्बन्धी जानय,
मुँह सम सभ सँ ग्रहण करय फल, उचित भाग कय बाँटय,
नहि ककरो किछु राग-द्वेष वा काट-छाँटसँ छाँटय।''

एहन विवेक रखनिहार सिंहासन पर बैसल व्यक्ति— 'प्रजा पुत्रमे भेद न मानय', कारण जे— 'शासक होइछ न जन्मजात क्यौ' तखन के शासक होइत अछि ? एहि प्रश्नक उत्तर दैत कवि कहैत छथि—

''जनता सँ विश्वास-प्राप्त-नर शासन-सूत्र सम्हारय''

तँ ओकर कर्त्तव्य थिकैक जे—

'जनहित कारक कार्य व्यूहसँ जन-मर्यादा पालय' अन्यथा

''एहन-शक्तिसँ बाहर जैखन पड़य अनीति प्रजा पर
पजरय क्रोधानल केर ज्वाला प्रजा-हृदय-वसुधापर
तखन होइछ दुर्गति जे भूपक, वर्णन तकर करत के
महानन्द-कुल पितर-प्रेत केर तर्पण श्राद्ध करत के ?''

एहि प्रकारैं वाल्मीकीय रामायणक अयोध्या काण्डक १००म सर्गमे वर्णित[१] राजनीति विषयक राजाक कर्त्तव्यक सम्पूर्ण उपदेश दैत गुरु अपने हाथैं सैल्युकस कैं बन्धन मुक्त करैत चन्द्रगुप्त कैं आर्यत्वक अपन परिचय देबऽ कहैत छथिन। आर्यगण सदा शरणागत वत्सल रहलाह अछि, तँ आबहु सैल्युकस स्वदेश फीरि जाथु, एहि हेतु क्यौ अहाँ कैं दोष नहि देत।

आब हमरो प्रतिज्ञापूर्ण भेल, तँ हमहू शिखामे बन्धन दैत छी एतबा कहि टीक बान्हि कहैत छथिन— आब हम चलैत छी। एतहि दसम सर्ग समाप्त होइत अछि।

एगारहम सर्ग : एहि सर्गमे चाणक्यक एहि घोषणासँ जे हुनक प्रतिज्ञापूर्ण भऽ गेलनि, बाहरी शत्रुक संकटसँ देश उबरि गेल, नन्दवंशक उच्छेदसँ अत्याचारी शासनक

---

१. दश पञ्च चतुर्वर्गान् सप्त वर्गं च तत्त्वत:
अष्ट वर्गं त्रिवर्गं च विद्यास्तिस्रश्च राघव।
इन्द्रियाणां जयं बुद्ध्वा षाड्गुण्यं दैव मानुषम्
कृत्यं विंशति वर्गं च तथा प्रकृति मण्डलम्।
यात्रा दण्ड विधानं च द्वियोनी सन्धि विग्रहौ।''

अन्त भऽगेल तथा मगधक राजसिंहासन पर एक तेजस्वी कर्मठ युवक चन्द्रगुप्तक राज्याभिषेक भऽ गेलाक पश्चात् सम्पूर्ण आर्यावर्त निष्कंटक भऽगेल अछि। सुशासन स्थापित भऽगेल अछि, प्रजा सुख-शान्तिमय जीवनक अनुभव करय लागि गेल अछि। अत: मानसिक शान्ति प्राप्त करबाक उद्देश्यसँ ओ अपन जन्मभूमि मिथिला जयबाक निश्चय कऽ चुकल छथि। गुरुक सम्पर्कसँ विहीन भऽ रहऽ पड़त, एहि कल्पने सँ चन्द्रगुप्तक हृदय व्याकुल छनि, विनत भेल, दूनू हाथ जोड़ने गुरुक सम्मुख ठाढ़ छथि, किछु कहबाक साहस नहि होइत छनि, तथापि—

''चाहथि मनसँ— जाथु न गुरुवर मिथिला जन्म-प्रदेश,
सुरसरि तट उपवनमे बनबथु साधन हेतु निवेश''

परन्तु अपन सिद्धान्त, लक्ष्य आ वचन पर अटल रहनिहार व्यक्तिकेँ इच्छाक प्रतिकूल कहि रोकबाक दुस्साहस के कऽ सकैत अछि। जन साधारणमे जखन ई समाचार पसरैत अछि जे—

''यात्रापर तत्पर छथि गुरुवर, सुनि सब व्यग्र हृदयसँ
दौड़ल दर्शन हेतु नागरिक भरल प्रेम संशयसँ।''

कतय जाइत छथि, किएक जाइत छथि, कोन एहन कारण भऽ गेलनि ? इत्यादि प्रश्न यद्यपि सभक मन मे घुरिआइत छैक, किन्तु ई हो सबकेँ बूझल छैक जे—

''मरय मनस्वी बरु, नहि छोड़य अपन अटल सिद्धान्त
बदलय विश्व, टरय धरणीधर होइछ नहि उद्भ्रान्त।''

तँ गुरुवर केँ ससम्मान बिदा करबाक हेतु जन-प्रतिनिधिगण सहित पाटलिपुत्रक समस्त नागरिक उमड़ि पड़ल अछि। शास्त्र विहित विधिएँ गुरु-चरणक पूजा कयल जा रहल छनि ताही बीच मगधेशक जयजयकार करैत द्वारपाल आबि, झुकि कऽ प्रणाम करैत सूचना दैत छनि जे ग्रीकराजक सेनापति सेल्युकसक दूत किछु उपहारक संग सिंहद्वार पर दर्शनार्थ ठाढ़, भीतर अयबाक अनुमति चाहि रहल अछि।

मगधपति चन्द्रगुप्त गुरुवर चाणक्य दिस उन्मुख होइत बजैत छथि जे शास्त्रानुसार दूतक गति अबाध होइत छैक, तथापि गुरुवर क जेहन आदेश हो। ताहिपर चाणक्य कहैत छथिन जे शत्रु दलक मनोभाव शत्रुताक छैक वा मित्रताक एकर समुचित ज्ञान दूतेक माध्यम सँ सम्भव होइत छैक। अत: सभामे प्रवेशक अनुमति देल जाइक।

अनुमति पाबि अपना देशक बेछप परिधानसँ सज्जित समुत्सुक दूत आबि विनम्रतापूर्वक अभिवादन करैत, सभाक अद्भुत स्वरूप देखैत चकित-विस्मित ठाढ़ होइत अछि। कवि उत्प्रेक्षालंकारक आश्रय लैत सभाक वर्णन करैत छथि—

''उच्चासन पर सुरपति बैसल छथि की साज सजौने ?
उच्च मंच पर दहिन कातमे सुरगुरु पूज्य बनौने ?
बैसल छथि सुरराज-निमन्त्रित की सब देव समाज ?
जुटल सुधर्मा अतिशय हर्षित करय मन्त्रणा काज ?''

अथवा—

नभमण्डल केर मध्यभागमे की मृगांक शुभ लक्षण
छथि नक्षत्र समाजक संगहि बैसल परम विलक्षण ?
अथवा— पूज्य बसिष्ठ वरासन शोभित तेजस्वी गुणवान
पूजा पाबि शान्तमन बैसल छथि की सन्त महान ?''

दूत हरियर वस्त्रसँ आच्छादित सोनक थारकेँ माथपर सँ उतारि रखैत अछि। मगधेश चन्द्रगुप्त सहित सभामे उपस्थित जन-समुदाय बड़े उत्सुकता पूर्वक दूतक गतिविधिकेँ देखि रहल अछि। दूत सभक उत्सुकता केँ शान्त करैत कहय लगैत अछि—

ग्रीकराज सिकन्दरक प्रधान सेनापति सैल्युकस अपनेक वल, पौरुष, निर्भयता, सैन्य-व्यूह-रचनाक पटुता, ओकर संचालन विधि, युद्धभूमिमे युद्धकौशल, धैर्य ओ सम्पदा सब वस्तुकेँ देखि मुग्ध छथि तथा एहन सर्वगुण सम्पन्न सुयोग्य व्यक्तिक संग संबन्ध स्थिर रखबाक आकांक्षा सँ अपनेक हार्दिक अभिनन्दन करैत कन्यादान हेतु ई उपहार सेवामे उपस्थित कयलनि अछि। कृपया मनसँ द्वेष ओ शत्रुता-भावकेँ दूर कऽ ई उपहार स्वीकार कयल जाय।

दूतक मुखसँ एहन अनुनय-विनय पूर्ण प्रस्ताव सुनि सम्पूर्ण सभा स्तब्ध रहि गेल! सभक मुखमण्डलपर विस्मयक भाव छल। कारण अनेक, पहिल ई जे ई शत्रुक प्रस्ताव थिक जाहिमे अनेक षड्यन्त्रक संभावना, दोसर विदेशी, तेसर विजाति, चारिम विधर्मी थिक। तखन ई सम्बन्ध कोना संभव होयत।

चाणक्य सभासदक मनोभावकेँ गम्भीरतासँ पढ़ैत छथि, विवादक छाया केँ सेहो देखैत किछु काल सोचि वजैत छथि जे मगधेश द्वेष, संशय ओ भयक त्याग कऽ समयोचित एहि प्रस्तावकेँ स्वीकार करथु। एहिमे राष्ट्रक हित निहित छैक। दूनू राष्ट्रक जनताक हेतु ई स्वर्ण संयोग सुखकारक होयतैक। दूनू देश परस्पर भाषा, भाव, प्रभाव आदिक आदान-प्रदान सँ उन्नतिशील बनत। भारत सँ किछु यूनान सीखत तँ यूनान सँ भारत केँ किछु प्राप्त होयतैक। इतिहास एहि बातक साक्षी अछि जे विविध जाति जे एतय आयल, आर्य सबकेँ पचा गेलाह। आर्य-सभ्यता ओ संस्कृतिक न्यों तेहन महान ऋषि-मुनि लोकनि द्वारा पड़ल छैक जे कुमहड़क बतिया जकाँ आङुर देखौलासँ ई सड़य-गलय वाला नहि थिक। तँ नि:शंक भावसँ परिणयक हेतु शुभलग्न पठयबाक अनुकूल सन्देशक संग एहि दूत केँ विदा करथु। आब मगध साम्राज्यक सोर पाताल पकड़ि लेलक अछि, एकरा उखाड़ि फेकव आब सहज नहि रहि गेल अछि। दिनानुदिन एहि राष्ट्रक भाल उन्नतसँ उन्नततर होइत जायत से भविष्य हम देखि रहल छी। शत्रु पक्षसँ निश्चिन्त भऽ आब एहि राष्ट्रक शासन-सूत्र सम्हारू। जाहिसँ प्रजा वर्ग समुन्नत ओ सन्तुष्ट रहय सैह काज करब। वेस, आब हम चली।

गुरुवर द्वारा बिदा होयबाक प्रस्ताव पर चन्द्रगुप्त निवेदन करैत छथिन जे अपने क अनुकम्पासँ जारज दु:शासनसँ राष्ट्र-द्रौपदी मुक्त भऽ चुकल छथि, मानवता चीर-हरणसँ बाँचि गेल अछि तैयो जनमानसमे अपने सँ किछु एहन चिरस्थायी वस्तु पयबा क आकांक्षा

छैक जे युगयुग धरिमानव जातिक मार्ग-दर्शन करैत रहैक। चन्द्रगुप्तक एहि निवदेन पर आश्वासन दैत छथिन तथा

''देथु सफलता प्रभु सर्वेश्वर हो जन सँ जयनाद
निशिदिन हो कल्याण हमर अछि ई शुभ आशीर्वाद।''

एहि आशीर्वादक संगहि नगर निवासी सँ कहैत छथिन—

''मानि हमर आदेश अहाँ सब करू नगर प्रस्थान
करब काज ओ, जाहि प्रकारेँ बाँचि सकय सम्मान।''

आगाँ आगाँ चाणक्य विजन बाट दिस अग्रसर होइत छथि पाछाँ शोक मग्न ठमकल नगर निवासी सभक नयनसँ अश्रुधार प्रवाहित भऽ रहल छैक। विरह-विगलित हृदयसँ चन्द्रगुप्त नगरवासी कँ सान्त्वना दैत कहैत छथिन जे गुरुवर यद्यपि अपन पावन जन्मभूमि जा रहल छथि, परन्तु लोक--जीवनहित जे नव्य भव्यपथ छोड़ि गेल छथि, यदि गुरुवरक प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रखबाक श्रद्धा हो तँ ताही पथ पर चलैत रहवाक संकल्प ली। एतहि—

''मेटय दम्भ-द्वेष पाखण्डी, भेटय नहि अज्ञानी,
अत्याचारक सर्वनाश हो, बढ़थि सुभग जन ज्ञानी,
सभक्यौ रहय सुखी तनमनसँ सतत समुन्नत लोक
करथु ईश कल्याण विश्व केर जन जन बनय अशोक।''

एहि भरत वाक्य सँ महाकाव्य समाप्त होइत अछि। अंग रूपमे एहि सर्गमे शान्त ओ करुण रसक उन्मेष भेल अछि।

एकरा वैलक्षण्य कहीं अथवा अभाव जे एहि महाकाव्यक विषय वस्तुए एहन अछि जाहिमे नायक तँ छथि परन्तु नायिकाक सन्निवेशक कोनो अवकाश नहि अछि तहिना नारीपात्रक अभाव अछि। एक मात्र नारी पात्र सैल्युकसक कन्या हेलनाक चर्चामात्रे बुझबाक चाही, ओकर एक सहचरी मात्र अछि जे चन्द्रगुप्तक परिचयक जिज्ञासा करैत अछि। यद्यपि चन्द्रगुप्त, शकटार, सिकन्दर, सैल्युकस आदि पात्र अछि, सिकन्दरक चरित्र पर कनेक प्रकाश पड़बो कयल अछि, मुदा अन्यान्य चरित्र पूर्णत: उजागर नहि भेल अछि। सम्पूर्ण काव्य चाणक्यक चरित्रक चारू कात तेना चकभाउर दैत अछि जे जेना कोनो विशाल वट-वृक्षक छाहरि तर जनमल अन्यान्य वनस्पति पूर्ण विकास नहि कऽ पबैत अछि तहिना चाणक्यक चरित्रक छायातर रहलाक कारणेँ अन्यान्य चरित्र ठमकल रहिगेल अछि। तथापि मैथिली महाकाव्य समूह मे एहि महाकाव्यक अपन एक विशिष्ट स्थान छैक से सव स्वीकार करैत छथि।

अन्यान्य समीक्षक अभिमत

पूर्वमे कहल गेल अछि जे 'मैथिली महाकाव्य समूहमे एहि महाकाव्यक अपन एक विशिष्ट स्थान छैक से सब स्वीकार करैत छथि' एहि उक्तिक पुष्टि हेतु निम्नांकित किछु प्रमुख विद्वानक अभिमत उद्धृत करब आवश्यक बूझि उद्धृत कयल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यक प्रथम इतहिास प्रणेता डॉ. श्री जयकान्त मिश्र लिखैत छथि—

"दीनानाथ पाठकक चाणक्य (१९६५) आजुक मिथिलाक प्रतिनिधि 'महाकाव्य' थिक। ई सरल अछि, सोझ डाँड़िएँ चलैत अछि आओर भाषा एवं शिल्प दुनूमे प्रभावकारी अछि। एकर भावनामे उदारता आओर प्रगाढ़ता छैक, एकर प्रतीकमार्ग आधुनिक छैक आओर ई आजुक पाठकक हेतु परम उपादेय अछि। एहिमे कवि चाणक्य कैं मिथिलाक जनसाधारणक एक सम्मान्य नेताक रूपमे प्रस्तुत कएने छथि, जे जनैत छथि जे जनसामान्यक हृदयमे देशभक्तिक लहरि कोना उठाओल जाए सकैत अछि। कविक दृष्टि कतेक तीक्ष्ण छलनि से एतबहिसँ बुझबाक योग्य भए जाएत जे भारतकैं चीनसँ युद्ध होएतैक तकर भविष्य वाणी कवि एहि महाकाव्यमे कए देने छथि। आधुनिक काव्यमे प्राय: कोनोटा श्रेष्ठ कृति नहि अछि जाहिमे समकालीन परिस्थितिक प्रति एतेक जागरूकता हो, भाषा एवं पदबन्ध पर एतेक प्रौढ़ता हो आओर शैली एतेक प्रभावशाली हो। एहि महाकाव्यक महत्तामे हमरा कोनो टा सन्देह नहि अछि।..... ई महाकाव्य खूब सरिआएकैं माँजल कथानक आओर कुशल काव्य शिल्पक संग सामयिक संगति प्रदर्शित कएने अछि"

(**मैथिली साहित्यक इतिहास**, पृ. २७४
प्रकाशक- साहित्य अकादेमी, १९८८)

मैथिली साहित्यक दोसर प्रमुख इतिहासकार डॉ. श्रीदुर्गानाथझा 'श्रीश' अपन अभिमत व्यक्त कयने छथि—

"नवीन प्रकारक भाषा-प्रवाह ओ शैली शिल्पक दृष्टिएँ स्व. दीनानाथ (झा ?) पाठक 'बन्धु'क 'चाणक्य' (१९६५) उल्लेखनीय अछि। चाणक्यक कथा प्रख्यात अछि जकरा ११ सर्गमे कवि लिखने छथि। ई महाकाव्य सर्वप्रथम ध्यान आकृष्ट करैत अछि अपन शब्द-विन्यासक नवीनताक कारणेँ। एहि महाकाव्यक कथाओ छन्द-प्रवाह अनवरुद्ध आद्यन्त एकरूप एक गति बहैत रहैत अछि ओ उपनिबद्ध विचार तत्त्वमे नीरसताक कतहु संचार होअए नहि दैत अछि।"

(**मैथिली साहित्यक इतिहास**, परिवर्द्धित सं. १९७७ इ.
द्वितीय भाग पृष्ठ ५६)

मैथिली महाकाव्यक उद्‌भव ओ विकास नामक समालोचनात्मक ग्रन्थमे श्रीशिवशंकरझा 'कान्त' लिखैत छथि—

"'चाणक्य' महाकाव्य महाकाव्यक लक्षणमे नवीनता अनबाक एकटा बाट प्रशस्त करैछ। पुन: चरित्र चित्रणक प्रति एक फराक पद्धतिक श्रीगणेश चाणक्य महाकाव्यमे भेल अछि तथा समग्र महाकाव्य विशिष्ट चरित्रक प्रति चकभाउर दैत अछि। चाणक्यक जीवन राष्ट्र ओ समाजक हेतु समर्पित छनि। वस्तुत: चाणक्य ऐतिहासिक विराट् व्यक्तित्वमे एक छथि जे बुद्धिक विलक्षण व्यापारसँ आर्यावर्त्तक पृष्ठभूमि पर परतन्त्रताक बेड़ी कें झनझना कऽ तोड़ि देल।..... चाणक्यक कथावस्तु राष्ट्रीयतासँ पूर्ण होयबाक कारणेँ, राष्ट्रीय भावनाक एकात्मक स्वरूप क उद्‌घोषक होयबाक कारणेँ वर्तमान कालक परिप्रेक्ष्यमे अतिशय उपयुक्त सेहो अछि।"

(**मैथिली महाकाव्यक उद्‌भव ओ विकास**, प्राग्वाणी पृ. ख–ग)

मैथिली साहित्यक मनस्वी, तेजस्वी ओ यशस्वी साहित्यकार, डॉ. श्रीभीमनाथझा क मन्तव्य छनि—

"'चाणक्य' जानि बूझि कऽ आजुक युगक राष्ट्रीय समस्याकेँ सोझाँमे राखि रचल गेल अछि। आजुक युगक राष्ट्रीय समस्याक माने अछि राजनीतिक समस्या— स्वदेश नीति आ विदेश नीतिक समस्या। वर्तमान राजनीतिक शासन-प्रणालीमे खास कऽ अपन देश आ मोटामोटी समस्त संसार, एहि दुनू समस्यासँ ग्रस्त अछि। देशमे विघटनकारी तत्त्व माथ उठा रहल अछि, आतंकवाद सँ राष्ट्र त्रस्त अछि, सर्वत्र आन्दोलन, हिंसा आ प्रतिहिंसाक आगि धधकि रहल अछि। एक देश दोसर देश पर अपन श्रेष्ठता थोपऽ चाहैत अछि। ताहि लेल नीति-अनीतिक कूटनीतिक चालि चलल जा रहल अछि। किएक ? एकर जड़िमे की अछि? जड़िमे अछि सत्ताक भूख, व्यक्तिगत स्वार्थ। नेता तँ सभ बनऽ चाहैत अछि, मुदा वास्तविक नेता क गुण क्यो अपनाबऽ नहि चाहैत अछि। ओहिमे कष्ट छैक। से कष्ट के उठावय ? तँ ई पराभव ई संकट, ई उत्पात, ई आशंका, ई आतंक। चाणक्य एही समस्याकेँ उठबैछ आ तकर समाधानो दैछ।

(**साहित्यालाप**, पृष्ठ-३८)

उपसंहार

सामान्यत: कहल जाइत अछि आ मानलो जाइत अछि जे कोनो व्यक्तिक ह्रदयमे साहित्य रचनाक उद्रेक होइत छैक तँ पहिने ओ कविता लिखबाक चेष्टा करैत अछि। यद्यपि कविकर्म यति-गति, छन्द-अलंकार आदिक ज्ञान विनु (आजुक सन्दर्भ मे नहि) कठिन, झंझटाह मानल जाइछ, संगहि कवि कर्मक हेतु किछु जन्म जात संस्कारोक अपेक्षा रहैत छैक तथापि साहित्य क्षेत्रक मुख्य प्रवेश द्वार एकरे मानल जाइत रहलैक अछि।

प्रसंगत: उल्लेख करब अनुपयुक्त नहि जे 'विद्यापति के देशमें' नामक हिन्दी-मैथिली कविता संग्रह (१९५५) संकलित-संपादित करबाक क्रममे उपर्युक्त बात, हिन्दीक सुविख्यात विद्वान, विद्यापति-गोष्ठीक आजीवन सभापति प्रो. जगन्नाथ प्रसाद मिश्र कहने रहथि जे ओ १९३१ ई. मे जखन हजारीबाग जेलमे रहथि तँ एक टा कविता लिखने रहथि, परन्तु एकमात्र कविता लिखि, एकरा झंझटिया मानि एहिसँ विरत भऽ गद्य लिखऽ लगलाह। ओ एक मात्र कविता उक्त संकलन मे संकलित छनि।

परन्तु दीनानाथ पाठक 'बन्धु'क प्रवृत्ति एहिसँ सर्वथा विपरीत देखबामे अबैत अछि। ई मध्यमाक छात्र रहथि तँ सर्वप्रथम बड़साइत नामक उपन्यास, अर्थात् गद्य लिखबामे प्रवृत्त भेलाह। यद्यपि कवि कर्महुक सफलताक कसौटी गद्येकेँ कहल गेल छैक— 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'। काव्यक सब विधामे नाटक कँ सर्वोपरि स्थान देल गेल छैक— काव्येषु नाटकं रम्यम् 'कारण जे नाटकमे गद्यओ पद्य दूनूमे प्रौढ़ता प्राप्तिक बादे पूर्ण सफलता भेटबाक संभावना रहैत छैक। बन्धुजी सांस्कृतिक संगठनमे लगलाह तँ आवश्यकतावश नाटको लिखलनि। अध्यापक रूपमे कर्मक्षेत्रमे पैर रखिते बड़े तीव्र गतिएँ महाकाव्य प्रणयनमे लागि गेलाह। दुर्भाग्यवश उपन्यास आ नाटक सम्पूर्ण सुरक्षित नहि रहि सकलनि. सुरक्षित रहलनि अन्तिम कृति 'महाकाव्य' जे मैथिली साहित्यमे मीलक पाथर बनि ठाढ़ छनि तथा इतिहासक पृष्ठ पर हिनक नामकेँ चिरस्थायित्व प्रदान कयने छनि।

हिनक समग्र कृतिक अनुशीलन सँ सिद्ध होइत अछि जे समुन्नत राष्ट्रक स्वप्न देखनिहार एहि व्यक्तिक रोमरोम राष्ट्रिय भावना सँ ओतप्रोत छलनि जे हिनक खण्डित-अखण्डित कृति सबमे प्रतिविम्बित भेल छनि। मैथिली भाषाक अभाग्ये बुझाबाक चाही जे एहन उद्दाम प्रतिभा अकाले कालक वलित भऽ गेल। किन्तु 'चाणक्य' महाकाव्यक रूपमे भारतीय साहित्यकेँ जे अनमोल रत्न दऽ गेलाह से हिनका अवश्य चिरजीवी बनौने रहतनि।

117117
9.12.04

दीनानाथ पाठक 'बन्धु' (1928-1962) एक प्रखर राष्ट्रीय-चेतना-सम्पन्न व्यक्ति रहथि । सम्प्रति सर्वत्र नेता पदक वर्चस्विता स्थापित अछि । एहि लोकतन्त्रमे ओहि पदपर पहुँचिते ओ व्यक्ति सर्वज्ञ मानल जाय लगैत अछि । अत: जन साधारणो व्यक्तिक मनमे नेता बनबाक लालसा उत्पन्न भऽ रहलैक अछि । परन्तु 'बन्धु'जी नेताक परिभाषा कयने छथि —

'कालकूट-घट पीबि, सुधा-रस जगमे बाँटि सकैछ,
मर्त्यलोकसँ देवलोक धरि नेता ओ कहबैछ ।
नेता धर्म, समाज, स्वराष्ट्रक करइछ कायाकल्प,
मानवतामे महामन्त्रसँ फूकय शक्ति अनल्प ।।'

ठोर ठोर पर क्रान्तिक चर्चा होइत रहैत अछि । सामान्यत: जन-जीवनकेँ अस्त-व्यस्त तथा विधि-व्यवस्थाकेँ छिन्न-भिन्न कऽ देवाक क्रियाकेँ क्रान्ति मानि लेल जाइछ । परन्तु 'बन्धु'जी क्रान्तिक परिभाषा कयने छथि —

'क्रान्ति अमर युगयुग संरक्षित नीति-धर्म गत ओट
युगक पलीता पाबि अपन अति करय भयद विस्फोट ।
क्रान्ति महाकालक पथदर्शक युगक नवीन प्रवाह,
क्रान्ति दैछ एहि सृष्टि अंगमे स्फूर्ति, ओज, उत्साह ।।'

कोमलता आ मधुरिमा-पूर्ण मैथिली भाषामे ओज गुणक अल्पता छैक, तेँ वीर-रसात्मक काव्यक रचना सम्भव नहि छैक' एहि भ्रान्ति-मूलक धारणाकेँ हिनक महाकाव्य निर्मूल कऽ देने अछि ।

एहि विनिबन्धक लेखक थिकाह श्रीचन्द्रनाथमिश्र अमर (1925) जे विभिन्न साहित्यिक विधामे अपन नामक सार्थकता प्रमाणित कऽ चुकल छथि । हिनक विशिष्ट साहित्यिक अवदानक फलस्वरूप 1983 मे मैथिलीमे सर्वश्रेष्ठ कृतिक रूपमे *मैथिली पत्रकारिताक इतिहास* नामक मौलिक रचना पर तथा *परशुरामक बीछल-बेरायल कथा* पर ... अकादेमी अनुवाद पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गेल छनि । पटन... मैथिली काशी, प्रयाग, धनबाद आदि विभिन्न नगरक मैथि... 'त्रयोदश कला साधक' सम्मानक संगहि बि... 'विद्यापति पुरस्कार' 1998-99 सेहो प्राप्त छनि ।

Library IIAS, Shimla
MT 817.230 92 P 273 M
00117117

पच्चीस टाका

रेखाचित्र : संतोष आनन्द

ISBN 81-260-0713-1